PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट
UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

मार्गदर्शिका बुकलेट

अर्थशास्त्र इकाई-1 का अध्ययन कैसे करें

यहाँ अर्थशास्त्र इकाई-1 के अध्ययन के लिए एक विस्तृत और व्यापक मार्गदर्शिका दी गई है, जो आपके द्वारा प्रदान की गई जानकारी पर आधारित है।

अर्थशास्त्र इकाई-1 का विस्तृत अध्ययन: एक संपूर्ण मार्गदर्शिका

यह इकाई व्यष्टि अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण सिद्धांतों और अवधारणाओं को शामिल करती है, जो आर्थिक एजेंटों के व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहार का विश्लेषण करते हैं। इस इकाई का प्रभावी ढंग से अध्ययन करने के लिए, आप निम्नलिखित विस्तृत दृष्टिकोण अपना सकते हैं:

भाग 1: इस इकाई का अध्ययन कैसे करें (How to Study This Unit)

1. बुनियादी बातों से शुरुआत करें (Start with the Basics):

- **अवधारणा को समझें:** सबसे पहले, व्यष्टि अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं, इसके दायरे और समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics) से इसके अंतर को समझें।
- **परिभाषा:** व्यष्टि अर्थशास्त्र, जिसे 'सूक्ष्म अर्थशास्त्र' भी कहा जाता है, अर्थव्यवस्था की सबसे छोटी इकाइयों, जैसे एक उपभोक्ता, एक फर्म, एक उद्योग या एक बाज़ार के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करता है।
- **उद्देश्य:** यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे व्यक्ति और फर्में अपने सीमित संसाधनों का आवंटन करते हुए निर्णय लेते हैं ताकि अधिकतम संतुष्टि या लाभ प्राप्त कर सकें। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं पर कैसे खर्च करे या एक फर्म अपनी उत्पादन लागत को कम करते हुए लाभ को कैसे अधिकतम करे।

- **समष्टि अर्थशास्त्र से अंतर:** समष्टि अर्थशास्त्र समग्र अर्थव्यवस्था (जैसे राष्ट्रीय आय, रोजगार, मुद्रास्फीति) का अध्ययन करता है, जबकि व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत स्तर पर होने वाली आर्थिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

2. माँग और आपूर्ति का अध्ययन करें (Study Demand and Supply):

- **केंद्रीय अवधारणाएँ:** ये व्यष्टि अर्थशास्त्र के केंद्र में हैं जो बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों और मात्राओं को निर्धारित करती हैं।
- **माँग (Demand):** किसी वस्तु की वह मात्रा है जिसे उपभोक्ता एक निश्चित कीमत पर और एक निश्चित समय में खरीदने को तैयार और सक्षम होता है।
- **आपूर्ति (Supply):** किसी वस्तु की वह मात्रा है जिसे उत्पादक एक निश्चित कीमत पर और एक निश्चित समय में बेचने को तैयार होता है।
- **गहन अध्ययन:** माँग और आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारकों (जैसे आय, संबंधित वस्तुओं की कीमतें, प्रौद्योगिकी), उनसे संबंधित नियमों (माँग का नियम, पूर्ति का नियम) और लोच (Elasticity) की अवधारणा को अच्छी तरह समझें। लोच यह बताती है कि कीमत या आय में परिवर्तन के प्रति माँग या आपूर्ति कितनी संवेदनशील है।

3. उपभोक्ता और उत्पादक व्यवहार में गहराई से जाएँ (Delve into Consumer and Producer Behavior):

- उपभोक्ता व्यवहार:
  - **उपयोगिता विश्लेषण:** जानें कि उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को अधिकतम कैसे करता है। इसमें कुल उपयोगिता, सीमान्त उपयोगिता और सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (Law of Diminishing Marginal Utility) शामिल हैं।
  - **उदासीनता वक्र विश्लेषण:** यह उपभोक्ता की वरीयताओं को दर्शाता है। इसके गुण, बजट रेखा, उपभोक्ता संतुलन, आय प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभाव और कीमत प्रभाव का अध्ययन करें।
- उत्पादक व्यवहार:
  - **उत्पादन फलन:** अल्पकालीन और दीर्घकालीन उत्पादन फलन को समझें।

- **प्रतिफल के नियम:** परिवर्तनशील अनुपातों का नियम और पैमाने का प्रतिफल (Laws of Returns to Scale) का अध्ययन करें।
- **लागत की अवधारणाएं:** स्थिर, परिवर्तनशील, कुल, औसत और सीमान्त लागतों के बीच के संबंधों और उनके वक्रों का विश्लेषण करें।

4. बाज़ार संरचनाओं का विश्लेषण करें (Analyze Market Structures):

- **विभिन्न बाज़ार:** विभिन्न बाज़ार संरचनाओं जैसे पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकृत प्रतियोगिता और अल्पाधिकार की विशेषताओं का अध्ययन करें।
- **कीमत और उत्पादन निर्धारण:** समझें कि प्रत्येक बाज़ार में कीमत और उत्पादन का निर्धारण कैसे होता है और फर्म का संतुलन कहाँ स्थापित होता है।
- **तुलना:** इन संरचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करें, जैसे पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म 'कीमत लेने वाली' (price taker) होती है, जबकि एकाधिकार में 'कीमत बनाने वाली' (price maker) होती है।

5. साधन कीमत निर्धारण को समझें (Understand Factor Pricing):

- **उत्पादन के कारक:** जानें कि उत्पादन के चार कारकों - भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमिता - की कीमतें (प्रतिफल) कैसे निर्धारित की जाती हैं।
- **सिद्धांत:**
  - **लगान (Rent):** रिकार्डो का सिद्धांत और आधुनिक सिद्धांत।
  - **मजदूरी (Wages):** मजदूरी का लौह सिद्धांत और आधुनिक सिद्धांत।
  - **ब्याज (Interest):** ऋण-योग्य कोष सिद्धांत और कीन्स का तरलता पसन्दगी सिद्धांत।
  - **लाभ (Profit):** जोखिम-वहन, अनिश्चितता-वहन और नवप्रवर्तन के सिद्धांत।

6. संबंधित अवधारणाओं का अन्वेषण करें (Explore Related Concepts):

- **राजस्व (Revenue):** कुल, औसत और सीमान्त राजस्व की अवधारणाओं और उनके संबंधों को समझें।

- **बाज़ार विफलता (Market Failures):** उन स्थितियों का अध्ययन करें जहाँ बाज़ार कुशलतापूर्वक संसाधनों का आवंटन करने में विफल रहते हैं, जैसे एकाधिकार, बाह्यताएं (Externalities) और सार्वजनिक वस्तुएं (Public Goods)।
- **कल्याणकारी अर्थशास्त्र (Welfare Economics):** परेटो अनुकूलतम (Pareto Optimality), क्षतिपूर्ति सिद्धांत और सामाजिक कल्याण फलन जैसी अवधारणाओं से खुद को परिचित करें।

7. पुनरीक्षण और अभ्यास करें (Review and Practice):

- **दोहराना:** प्रत्येक विषय को पढ़ने के बाद, अवधारणाओं को दोहराएं।
- **अभ्यास:** संख्यात्मक समस्याओं और प्रश्नों को हल करने का अभ्यास करें।
- **रेखाचित्रों पर ध्यान दें:** आरेखों और तालिकाओं को समझना और बनाना सीखें क्योंकि वे सिद्धांतों को स्पष्ट करते हैं।
- **पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र:** परीक्षा पैटर्न और महत्वपूर्ण विषयों को समझने के लिए पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों को हल करना आपकी तैयारी को मजबूत करेगा।

भाग 2: इस इकाई में क्या पढ़ें (What to Read in This Unit)

यहाँ उन प्रमुख विषयों की विस्तृत सूची दी गई है जिन पर आपको ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

1. **व्यष्टि अर्थशास्त्र का परिचय:** परिभाषा, दायरा, महत्व और समष्टि अर्थशास्त्र से अंतर।
2. **माँग विश्लेषण:**
   - माँग का अर्थ, माँग फलन (Dx=f(Px,Py,Y,T,E))
   - माँग के प्रकार (कीमत, आय, आड़ी/तिरछी माँग)
   - माँग का नियम, माँग वक्र, और नियम के अपवाद (गिफेन वस्तुएं)
   - माँग में विस्तार/संकुचन और माँग में वृद्धि/कमी।
3. **माँग की लोच:**
   - कीमत लोच: प्रकार (ep=0,ep<1,ep=1,ep>1,ep=∞) और माप की विधियाँ (कुल व्यय, प्रतिशत, ज्यामितीय)।
   - आय लोच और आड़ी/तिरछी लोच।
   - लोच को प्रभावित करने वाले कारक।

4. पूर्ति:

- पूर्ति का अर्थ, पूर्ति का नियम और पूर्ति वक्र।
- पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक।
- पूर्ति में संचलन और खिसकाव, पूर्ति की लोच।

5. उपभोक्ता व्यवहार:

- उपयोगिता विश्लेषण: कुल और सीमान्त उपयोगिता, सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम।
- उदासीनता वक्र विश्लेषण: गुण, मान्यताएँ, बजट रेखा, उपभोक्ता सन्तुलन (MRSXY=PX /PY)।
- कीमत प्रभाव, आय प्रभाव, और प्रतिस्थापन प्रभाव।

6. उत्पादन:

- उत्पादन फलन, उत्पादन के घटक।
- प्रतिफल के नियम: परिवर्तनशील अनुपातों का नियम और पैमाने का प्रतिफल।
- समोत्पादक वक्र, तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर (MRTS), कॉब-डगलस उत्पादन फलन।

7. लागत:

- लागत की अवधारणाएं: वास्तविक, अवसर, निजी, सामाजिक लागत।
- अल्पकालीन लागतें: कुल, औसत, और सीमान्त लागत वक्र (TFC, TVC, TC, AFC, AVC, AC, MC)।
- दीर्घकालीन लागतें: दीर्घकालीन औसत लागत वक्र (LAC) या 'आवरण वक्र'।

8. आगम की धारणा:

- कुल आगम (TR), औसत आगम (AR), और सीमान्त आगम (MR)।
- विभिन्न बाज़ार संरचनाओं में AR और MR वक्रों के बीच संबंध।

9. बाजार:

- बाजार संरचना: पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार (कीमत विभेद सहित), एकाधिकृत प्रतियोगिता, अल्पाधिकार (विकुंचित माँग वक्र सहित), और द्वि-अधिकार।
- प्रत्येक बाज़ार में अल्पकालीन और दीर्घकालीन संतुलन।

10. बाजार में निर्णयन:

- निश्चितता, जोखिम और अनिश्चितता में निर्णय।
- खेल सिद्धान्त (Game Theory): बंदी की दुविधा (Prisoner's Dilemma) और नैश सन्तुलन (Nash Equilibrium)।

11. उपादान कीमत निर्धारण:

- लगान: रिकार्डो और आधुनिक सिद्धांत, आभास लगान।
- मजदूरी: वास्तविक और मौद्रिक मजदूरी, मजदूरी के सिद्धांत।
- ब्याज: क्लासिकल, ऋण-योग्य कोष और कीन्स के सिद्धांत।
- लाभ: सामान्य और असामान्य लाभ, लाभ के सिद्धांत (जोखिम, अनिश्चितता, नवप्रवर्तन)।

12. कल्याणकारी अर्थशास्त्र:

- वास्तविक बनाम आदर्शात्मक अर्थशास्त्र।
- परेटो अनुकूलतम: शर्तें और आलोचनाएँ।
- बाजार असफलताएं: बाह्यताएं, सार्वजनिक वस्तुएं।
- नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र: कालडोर-हिक्स क्षतिपूर्ति मानदंड और बर्गसन-सैमुएलसन का सामाजिक कल्याण फलन।

अर्थशास्त्र इकाई-1

व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण (Micro-Economic Analysis)

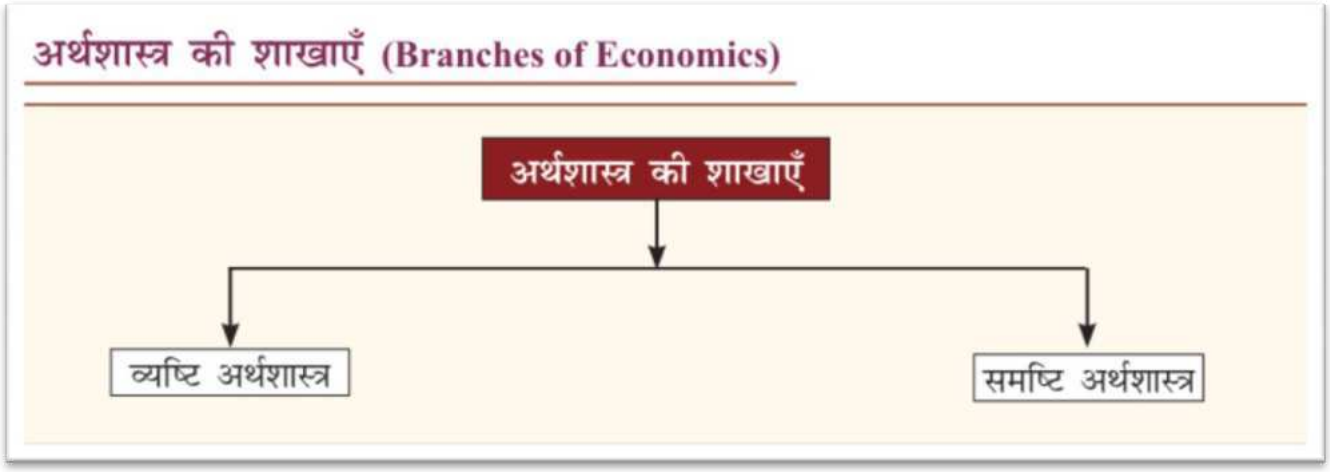

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)

इसे 'सूक्ष्म अर्थशास्त्र' भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था की एक इकाई या इकाई के एक भाग के रूप में आर्थिक संबंधों, समस्याओं अथवा मुद्दों का अध्ययन किया जाता है; जैसे कि एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म, एक उद्योग अथवा एक बाज़ार आदि। व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत बाज़ार में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न आर्थिक अभिकर्ताओं के व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि बाज़ार में व्यक्तियों की अंतः क्रिया द्वारा वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा एवं कीमत किस प्रकार निर्धारित होती हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अनुकूलतम साधन आवंटन और आर्थिक क्रियाओं (जैसे- माँग और आपूर्ति) का अध्ययन तथा मूल्य निर्धारण से संबंधित समस्याओं व नीतियों का अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)	समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics)

यह छोटी आर्थिक इकाइयों के आर्थिक मुद्दों एवं समस्याओं से संबंधित है, जैसे- एक व्यक्ति, एक गृहस्थ, एक फर्म, एक उद्योग इत्यादि।	यह समस्त अर्थव्यवस्था के स्तर पर होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालता है, जैसे- रोजगार, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति, बजट इत्यादि।
यह व्यष्टि आर्थिक चरों, जैसे उपभोक्ता की माँग और उत्पादक द्वारा आपूर्ति इत्यादि का उपयोग करता है।	यह समष्टि आर्थिक चरों, जैसे समग्र माँग और समग्र पूर्ति का उपयोग करता है।
इसमें आर्थिक चरों की सामूहिकता की मात्रा समष्टि की तुलना में कम होती है।	इसमें आर्थिक चरों की सामूहिकता की मात्रा व्यष्टि की तुलना में अधिक होती है।
इसकी केंद्रीय समस्या संसाधनों का आवंटन है।	इसकी केंद्रीय समस्या राष्ट्रीय आय तथा रोज़गार का निर्धारण है।
इसमें अध्ययन की विधि को प्रायः 'आंशिक संतुलन विश्लेषण' कहा जाता है। ध्यातव्य है कि आंशिक संतुलन से अभिप्राय एक बाजार (जैसे- वस्तु बाज़ार) के संतुलन से है और यह इस मान्यता पर आधारित है कि अन्य बाज़ारों (जैसे- श्रम बाज़ार या पूँजी बाज़ार) में कोई परिवर्तन नहीं होता।	इसमें अध्ययन की विधि को प्रायः 'सामान्य संतुलन विश्लेषण' कहा जाता है। सामान्य संतुलन से अभिप्राय किसी भी अर्थव्यवस्था में सभी प्रकार के बाज़ारों में एकसाथ संतुलन का पाया जाना है।
इसे 'कीमत सिद्धांत' भी कहा जाता है, क्योंकि यह बाज़ार की कीमत निर्धारण से संबंधित है।	इसे प्रायः 'आय तथा रोजगार सिद्धांत' भी कहा जाता है, क्योंकि यह संपूर्ण अर्थव्यवस्था में समग्र उत्पादन तथा रोज़गार स्तर के निर्धारण से संबंधित है।

माँग विश्लेषण (Demand Analysis)

शब्द का अर्थ अर्थशास्त्र के इसके सामान्य अर्थ से भिन्न है। सामान्य अर्थ में माँग शब्द के स्थान पर 'इच्छा', 'आवश्यकता' दि समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। लेकिन यदि आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए पर्याप्त मौद्रिक साधन मान है तो वह माँग में परिणित हो सकती है। अर्थशास्त्र में माँग का अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जिसे र्दिष्ट समय में और निर्दिष्ट कीमत पर क्रय किया जाता है।

माँग का संबंध प्रभावपूर्ण इच्छा से है जिसमें तीन बातों का सम्मिलित होना आवश्यक है-
(i) वस्तु प्राप्त करने की इच्छा
(ii) बस्तु खरीदने के लिए साधनों की उपलब्धता
(iii) साधनों को व्यय करने की तत्पर्यता

बेन्हम के अनुसार, "किसी समय विशेष में दिए हुए मूल्य पर किसी वस्तु की माँग की वह मात्रा है जो उस मूल्य पर एक निश्चित समय पर क्रय की जाती है।"

माँग फलन (Demand of Function)
माँग फलन उन सभी तत्त्वों को स्पष्ट करता है जिनसे किसी वस्तु की माँग प्रभावित होती है। वस्तु की माँग की मात्रा और उसे निर्धारित करने वाले कारणों के संबंधों को समीकरण के रूप में व्यक्त किया जा सकता है-

D(PPPY, T)

जहाँ D, परिवार द्वारा वस्तु ॥ की माँग की मात्रा है, P, वस्तु की कीमत है; PP अन्य वस्तुओं की (n के अलावा) कीमतें हैं, Y परिवार की आय है और T से आशय परिवार के सदस्यों की रुचि और अधिमान से है।

माँग के प्रकार (Type of Demand)

(1) कीमत माँग (Demand Price)
वह कीमत जिसे खरीददार वस्तु की दी गई कीमत के लिए देने को तैयार है।
$D_1=/(p)$, यदि Y, P_1, T स्थिर रहे, विभिन्न कीमतों पर वस्तु की माँगी गई मात्रा होती है।

(2) आय माँग (Income Demand)
वह माँग जिसे अन्य कारकों को स्थिर मानते हुए मात्र उपभोक्ता की आय के संदर्भ में ही व्यक्त किया जाए तो इसे आय भोंग कहते है।
D/(Y), यदि P. P, T स्थिर रहे, आय के विभिन्न स्तरों पर वस्तु की माँगी गई मात्रा होती है।

(3) प्रतिमाग (Perdemand)
प्रतिमांग दो तरह की होती है, पूरक वस्तुओं की माँग एवं स्थानापन्न वस्तुओं की माँग।
D-f(p_1), यदि p. Y, T स्थिर रहे।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

पूरक वस्तुएँ (Supplementary Goods)
जब दो वस्तुओं की माँग किसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु साथ-साथ की जाती है तब ये पूरक अथवा संयुक्त मॉग वाली वस्तुएँ होती हैं जैसे टेनिस रैकेट एवं बॉल, पेन एवं इंक आदि।

स्वानापन्न वस्तुएँ (Substituted Goods)
वे बस्तुएँ जो एक-दूसरे के बदले में प्रयोग में लायी जाती हैं जैसे जूता एवं चप्पल, चीनी व गुड़ आदि।

उपभोक्ता की माँग अनुसूची और माँग वक्र (Consumer Demand Schedule and Demand Curve)

उदाहरण के लिए इस संबंध की उपभोक्ता की संतरों की माँग की एक काल्पनिक अनुसूची बनाकर स्पष्ट किया जा सकता है। पहले कॉलम में प्रति संतरा की वैकल्पिक कीमतें दी गई हैं और दूसरे कॉलम में प्रत्येक कीमत पर संतरों की प्रति सप्ताह माँग की मात्रा को दिखाया गया है।

एक उपभोक्ता की संतरों की माँग की काल्पनिक अनुसूची

कीमत प्रति संतरा (रुपये)	प्रति सप्ताह संतरों की माँग की मात्रा
11	20
10	35
9	50
8	65
7	80
6	95
5	100

इस अनुसूची को ग्राफ पर चित्रित करने से उपभोक्ता के संतरों का माँग यक प्राप्त होता है। Y एक्सिज पर स्वतंत्र चर यानि कीमत प्रति संतरा को दिखाया गया है, और X एक्सिज पर आश्रित चर यानि प्रत्येक कीमत पर संतरों की मौगी गई मात्रा को दिखाया गया है। प्रत्येक बिन्दु A, B, C, D, E, F, G कीमत के एक जोड़े का प्रतीक है: एक संतरे की कीमत और उस कीमत पर उपभोक्ता की संतरों की माँग। इन बिन्दुओं को मिलाकर हमें माँग यक AG प्राप्त होता है जो दिए गए समय में उपभोक्ता की संतरों की माँग को दिखाता है

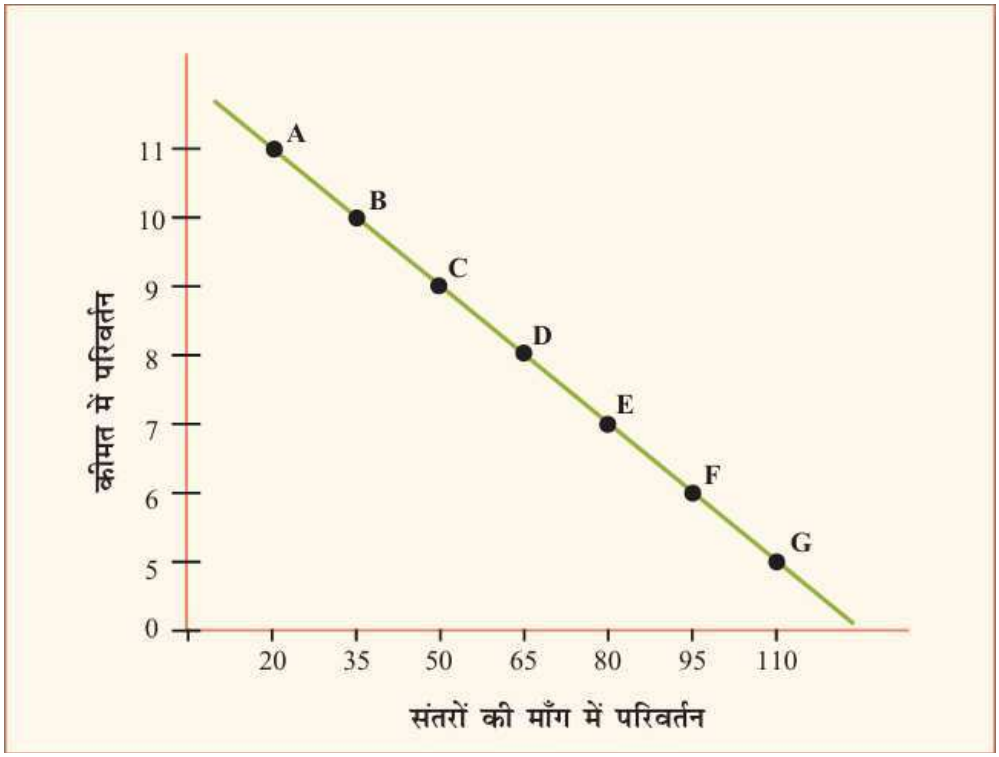

वस्तु की कीमत और उसकी माँग की मात्रा के इन प्रतिलोम संबंधों का कारण क्या है? आनुभाविक प्रेक्षण से पता चलता है कि अधिकतर उपभोक्ता अधिकतर वस्तुओं के लिए इसी प्रकार व्यवहार करते हैं।

कम दाम पर वे वस्तुओं को अधिक मात्रा खरीदते हैं और ऊँची कीमत पर कम मात्रा। लेकिन यहाँ प्रश्न यह उठता है कि वे ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? इसका उत्तर हमें उपभोक्ता के व्यवहार के सिद्धान्तों से मिल सकता हैं?

प्रोफेसर मार्शत का सीमान्त उपयोगिता सिद्धान्त, प्रोफेसर हिक्स का उदासीनता वक्र प्रस्ताव और प्रोफेसर सैम्यूलसन का प्रकटित अधिमान का सिद्धान्त। सबसे अधिक मान्य उत्तर आय और प्रतिस्थापन के प्रभावों की शब्दावली में ही होंगे।

जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है तो उस वस्तु की मात्रा की खरीद पर कम खर्च करना पड़ता है। इसका प्रभाव बढ़े हुए पैसे की खरीदने की शक्ति में बढ़ोतरी के रूप में पड़ता है।

यह वस्तु की कीमत में कमी का आय प्रभाव है। वास्तविक आय में इस वृद्धि के साथ उपभोक्ता वस्तु की अधिक मात्रा खरीदता है।

प्रतिस्थापन प्रभाव का अर्थ है कि जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है तो वह अन्य वस्तुओं के मुकाबले में सस्ती हो जाती है। इसके कारण जिन वस्तुओं की कीमतें नहीं गिरी हैं उनका स्थान सस्ती वस्तुएँ ले लेती हैं।
इस कारण सस्ती वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है। वस्तु की कीमत बढ़ जाने पर यही प्रभाव विलोम दिशा में काम करते हैं। दोनों मिलकर माँग के सिद्धान्त के रूप में उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या करते हैं।

वस्तु की बाजार माँग अनुसूची और बाजार माँग वक्र की अभी तक हमने केवल एक उपभोक्ता की माँग के संदर्भ में लिया है। लेकिन वस्तु की बाजार माँग का क्या बनता है?

बाजार माँग की परिभाषा हम माँग की उस मात्रा के रूप कर सकते हैं जिसे बाजार में सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की विभिन्न कीमतों पर एक विशेष समय पर माँगा जाता है।

रेखागणित के रूप में, बाजार माँग कक्र को बाजार में उपभोक्ताओं के माँग बनों के अनुप्रस्थ जोड़ द्वारा प्राप्त किया जाता है।

मान लीजिए बाजार में संतरों के लिए तीन उपभोक्ता हैं। नीचे दी गई अनुसूची में इन तीन उपभोक्ताओं की विभिन्न कीमतों पर संतरों की मांग दी गई है। प्रत्येक कीमत पर प्रत्येक उपभोक्ता द्वारा मांगी गई मात्रा के भोग से समय की प्रत्येक इकाई-उदाहरण के लिए एक सप्ताह पर संतरों की बाजार माँग प्राप्त होती है।

संतरों की प्रति सप्ताह माँग की मात्रा संतरों का बाजार माँग वक्र

कॉलम (1) में दी गई विभिन्न कीमतों के अनुसार कॉलम (2), (3) और (4) में माँगी गई मात्रा को दिखाने से हमें बाजार में तीनों उपभोक्ताओं की संतरों की माँग वक्र प्राप्त होते हैं, जिन्हें A, B और C द्वारा दिखाया गया है। तीनों उपभोक्ताओं द्वारा माँगी गई मात्रा को अनुप्रस्थ एक्सिज OX के साथ जोड़ने पर हमें संतरों का बाजार वक्र प्राप्त होता है। यही चित्र में दिखाया गया है। प्रत्येक कीमत पर प्रत्येक उपभोक्ता की माँग को जोड़कर संतरों की प्रति सप्ताह माँग प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार, ज्यामितिक रूप में एक वस्तु के बाजार वक्र को बाजार में उपभोक्ताओं के माँग वक्रों के अनुप्रस्थ योग से प्राप्त किया जा सकता है।

वस्तु की बाजार माँग उन सब कारणों पर निर्भर है जिन पर उपभोक्ता की माँग निर्भर है लेकिन वह इन अतिरिक्त कारणों पर भी निर्भर है-

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

माँग वक्र जो कि माँग के नियम को रेखाचित्र के रूप में प्रस्तुत करता है, 'अन्य बातें समान रहें' (other things being equal) की मान्यता पर आधारित है। 'अन्य बातें समान रहें' का आशय है कि उपभोक्ता की आय, रुचि अधिमानों, आदि में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। सामान्य रूप से, माँग बक्रों का ढाल ऊपर से नीचे दार्यों ओर होता है, जो कि यह स्पष्ट करता है कि ऊंची कीमत पर मौग अधिक होती है।

माँग का नियम (The Law of Demand)

माँग का नियम वस्तु की कीमत और उस कीमत पर माँगी जाने वाली मात्रा के गुणात्मक (qualitative) सम्बन्ध को बताता है। उपभोक्ता अपनी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के अनुसार अपने व्यवहारिक जीवन में ऊँची कीमत पर वस्तु की कम मात्रा खरीदता है और कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा। उपभोक्ता की इसी मनोवैज्ञानिक उपभोग प्रवृत्ति पर माँग का नियम आधारित है।

LAW OF DEMAND

"A RISE IN THE PRICE OF A COMMODITY OR SERVICE IS FOLLOWED BY A REDUCTION IN THE QUANTITY DEMANDED & FALL IN THE PRICE IS FOLLOWED BY A EXTENSION IN QUANTITY DEMANDED, WITH OTHER CONDITIONS REMAINING THE SAME."

माँग का नियम यह बतलाता है कि अन्य बातों के समान रहने पर (Other things being equal) वस्तु की कीमत एवं वस्तु की मात्रा में विपरीत सम्बन्ध (inverse relationship) पाया जाता है। दूसरे शब्दों में अन्य बातों के समान रहने की दशा में किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी मांग में कमी हो जाती है तथा इसके विपरीत कीमत में कमी होने पर वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है।

मार्शल के अनुसार, 'कीमत में कमी के फलस्वरूप वस्तु की माँगी जाने वाली मात्रा में वृद्धि होती है तथा कीमत में वृद्धि होने से माँग घटती है।

सैम्युलसन के शब्दों में, 'दिये गये समय में अन्य बातों के समान रहने की दशा में जब वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तब उसकी कम मात्रा की माँग की जाती है. अधिक वस्तुएँ खरीदते हैं और अधिक कीमत पर कम वस्तुएँ खरीदते हैं।

मांग का नियम:

विचारक/अर्थशास्त्री (Thinker/Economist)	सिद्धांत/अवधारणा (Theory/Concept)	तथ्य/स्पष्टीकरण (Fact/Explanation)
अल्फ्रेड मार्शल (Alfred Marshall)	मांग के नियम का औपचारिक प्रतिपादन (Formal Propounder of the Law of Demand)	मार्शल ने अपनी पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ इकोनॉमिक्स" (1890) में मांग के नियम को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अन्य बातें समान रहने पर, वस्तु की कीमत घटने से उसकी मांग बढ़ती है और कीमत बढ़ने से घटती है।
	कीमत लोच की अवधारणा (Concept of Price Elasticity)	मार्शल ने यह भी समझाया कि कीमत में परिवर्तन के प्रति मांग की संवेदनशीलता (लोच) भिन्न हो सकती है।
जॉन लॉक (John Locke)	प्रारंभिक विचार (Early Ideas)	हालांकि मार्शल को श्रेय दिया जाता है, लॉक ने 17वीं शताब्दी में ही कीमत और मात्रा के बीच संबंध पर विचार

		व्यक्त किए थे। उन्होंने बताया था कि किसी भी वस्तु की कीमत खरीदारों और विक्रेताओं की संख्या के अनुपात से बढ़ती या घटती है।
सर जेम्स स्टुअर्ट (Sir James Steuart)	"मांग और पूर्ति" शब्द का प्रयोग (Use of the term "Supply and Demand")	स्टुअर्ट ने 1767 में अपनी पुस्तक "एन इन्क्वायरी इंटू द प्रिंसिपल्स ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी" में सबसे पहले "मांग और पूर्ति" शब्दों का स्पष्ट रूप से प्रयोग किया और बताया कि कैसे ये कीमतें निर्धारित करते हैं।
एडम स्मिथ (Adam Smith)	अदृश्य हाथ (Invisible Hand)	स्मिथ ने अपनी कृति "द वेल्थ ऑफ नेशंस" (1776) में "अदृश्य हाथ" की अवधारणा दी, जो अप्रत्यक्ष रूप से मांग और पूर्ति की शक्तियों के माध्यम से बाजार संतुलन को समझाती है।
अन्य सामान्य अवधारणाएं	मांग अनुसूची/तालिका (Demand Schedule/Table)	यह एक तालिका होती है जो एक निश्चित समय अवधि में किसी वस्तु की विभिन्न संभावित कीमतों पर उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली विभिन्न मात्राओं को दर्शाती है।
	मांग वक्र (Demand Curve)	मांग अनुसूची का रेखाचित्रिय प्रस्तुतीकरण मांग वक्र कहलाता है, जो सामान्यतः ऊपर से नीचे की ओर गिरता हुआ (ऋणात्मक ढलान वाला) होता है। यह कीमत और मांगी गई मात्रा के बीच विपरीत संबंध को दर्शाता है।
	प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect)	जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ती है, तो उपभोक्ता उसकी महंगी वस्तु के स्थान पर अपेक्षाकृत सस्ती स्थानापन्न वस्तुओं को खरीदते हैं, जिससे महंगी वस्तु की मांग कम हो जाती है।
	आय प्रभाव (Income Effect)	वस्तु की कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय (क्रय शक्ति) बढ़ जाती है, जिससे वह उसी वस्तु की अधिक मात्रा खरीद सकता है। इसके विपरीत, कीमत बढ़ने पर वास्तविक आय कम हो जाती है और मांग घट जाती है।
	"अन्य बातें समान रहें" (Ceteris Paribus)	मांग का नियम तभी लागू होता है जब अन्य कारक जैसे उपभोक्ता की आय, रुचि, संबंधित वस्तुओं की कीमतें, भविष्य की कीमत प्रत्याशाएं आदि स्थिर रहें। इनमें परिवर्तन होने पर मांग का नियम प्रभावित हो सकता है।

यह तालिका मांग के नियम के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक होगी, जिसमें इसके ऐतिहासिक विकास से लेकर इसकी कार्यप्रणाली और अंतर्निहित सिद्धांत शामिल हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मांग का नियम कुछ अपवादों के अधीन भी है, जैसे गिफेन वस्तुएं या प्रतिष्ठासूचक वस्तुएं, जहां कीमत बढ़ने पर भी मांग बढ़ सकती है।

माँग के नियम का आधार (Base of the Law of Demand)

माँग वक्र सामान्यतः दायीं ओर नीचे की तरफ झुकते हैं। इसको माँग वक्र का ऋणात्मक दाल (negative slope) भी कहा जाता है। माँग वक्र का नीचे की ओर ढाल कीमत और मीग के विपरीत संबंध को प्रकट करता है। किसी भी वस्तु की माँग ऊँची कीमत पर कम तथा कम कीमत पर अधिक होती है।

माँग के नियम की क्रियाशीलता अथवा माँग वक्र के नीचे की ओर झुकने के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं-
(I) सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम (The Law of the Diminishing Marginal Utility)
(II) उपभोक्ता की संख्याओं में परिवर्तन (Change in the number of Consumers)
(III) आय का प्रभाव (Income effect)
(IV) प्रतिस्थापन्न प्रभाव (Substitution effect)
(V) एक वस्तु के विविध उपयोग (Diverse uses of a commodity)

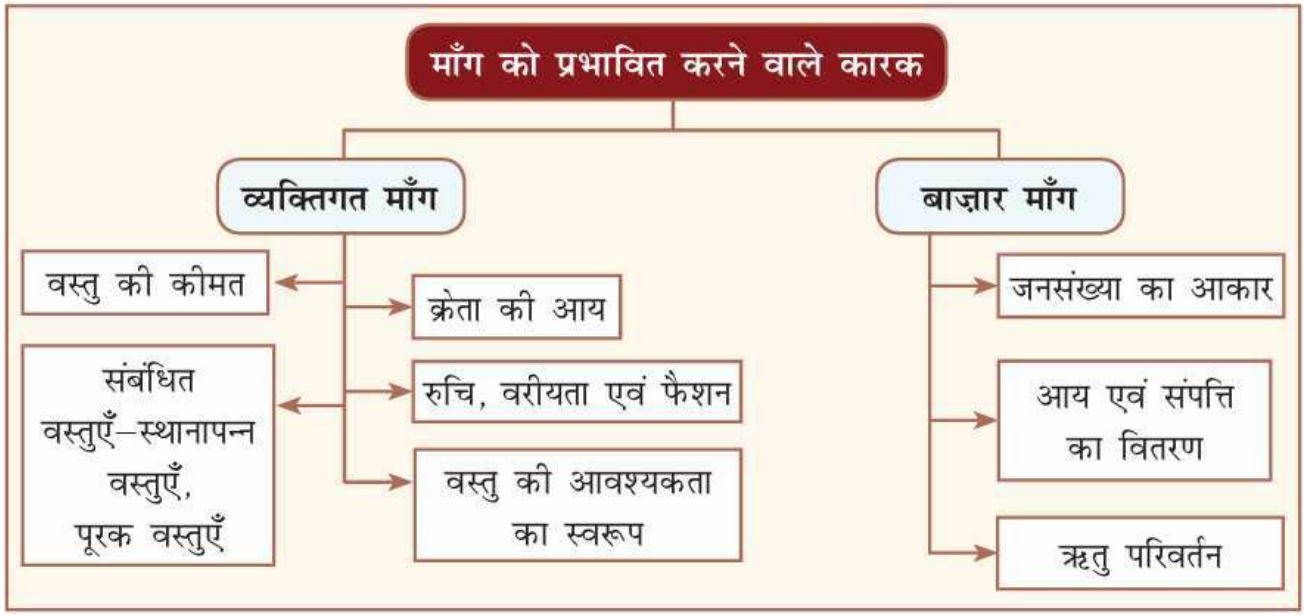

माँग एवं आय में संबंध (Relation between Demand and Income)

आय माँग वक्र को ऐंजिल वक्र भी कहा जाता है। यह वक्र इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि आय में वृद्धि के साथ-साथ सामान्य वस्तुओं की माँग बढ़ती जाती है।

माँग के नियम की मान्यताएँ (Assumptions of the Law of Demand)

माँग के नियम की क्रियाशीलता कुछ मान्यताओं पर आधारित है। दूसरे शब्दों में अग्रलिखित मान्यताओं के अन्तर्गत माँग का नियम क्रियाशील होता है-
(1) उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
(2) उपभोक्ता की रुचि, स्वभाव, पसन्द, आदि में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
(3) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
(4) किसी नवीन स्थानापन्न वस्तु का उपभोक्ता को ज्ञान नहीं होना चाहिए
(5) भविष्य में वस्तु की कीमत में परिवर्तन की सम्भावना नहीं होनी चाहिए

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

माँग के नियम के अपवाद (Exceptions to the Law of Demand)

माँग के नियम के अनुसार ऊंची कीमत पर बस्तु की कम माँग तथा कम कीमत पर अधिक माँग होती है। लेकिन कुछ परिस्थितियों में कीमत और माँग का विपरीत संबंध कायम नहीं रहता। इन परिस्थितियों में कीमत बढ़ने पर माँग बढ़ती है तथा कीमत कम होने पर माँग भी कम हो जाती है। इसकी माँग के नियम का अपवाद कहा जाता है, जबकि मांग का नियम लागू नहीं होता। माँग के नियम के प्रमुख अपवाद निम्नलिखित हैं-

- **भविष्य में कीमत वृद्धि की सम्भावना (Exected rise in Future Price)**
- **गिफिन बस्तुएं (Giffen Goods)**
- **प्रदर्शनकारी अनिवार्य वस्तुएं (Conspicuous Necessities)**
- **उपभोक्ता की अज्ञानता (Ignorance of Consumer)**
- **कीमत वृद्धि की आशंका (Fear of Rise in Prices)**
- **फैशन में परिवर्तन (Change in Fashion)**
- **अज्ञानता (Ignorance)**

उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus)

आधुनिक आर्थिक विश्लेषण में उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त एक महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करने का श्रेय डॉ. अल्फ्रेड मार्शल को दिया जाता है। उपभोक्ता की बचत के विचार का सार यह है कि उपभोक्ता. वस्तुओं के उपभोग से जो संतुष्टि प्राप्त करते हैं वह उनके द्वारा उस वस्तु के लिए भुगतान की गई कीमत की तुलना में अधिक होती है। यह देखा गया है कि उपभोक्ताओं में वस्तुओं की वास्तविक कीमत की अपेक्षा अधिक कीमत भुगतान करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

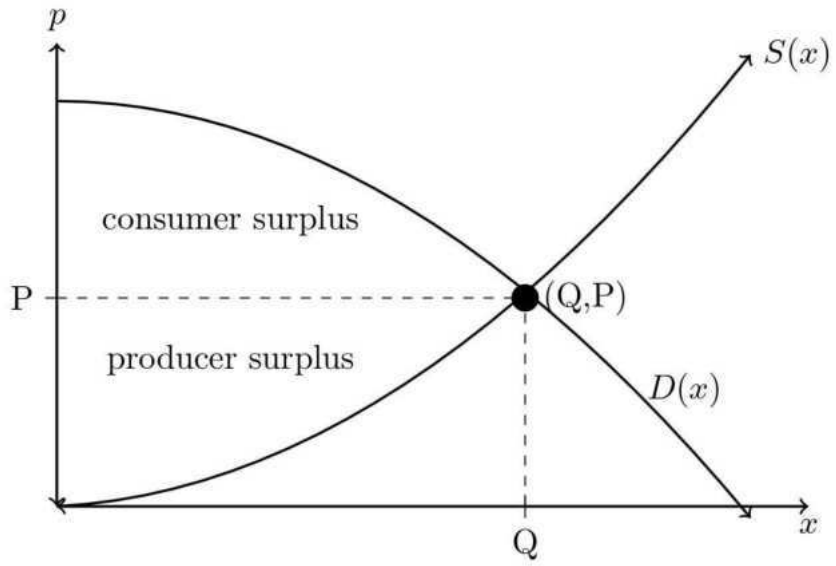

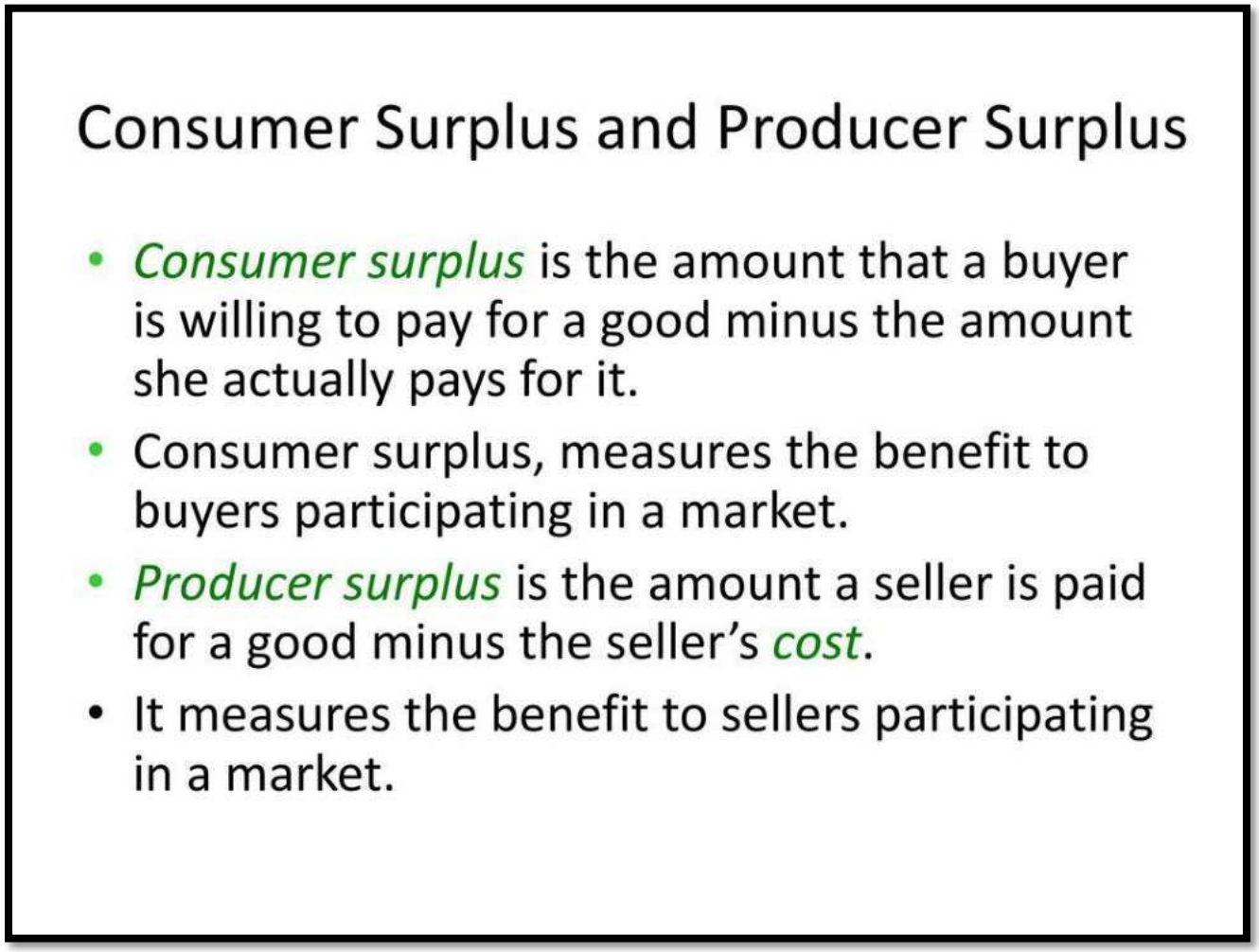

मुख्य तथ्य एवं स्पष्टीकरण (Key Facts and Explanation):

पहलू (Aspect)	विवरण (Description)
परिभाषा (Definition)	उपभोक्ता किसी वस्तु के लिए जो अधिकतम कीमत देने को तैयार होता है और जो वास्तविक कीमत वह देता है, उसके अंतर को उपभोक्ता की बचत कहते हैं।
सूत्र (Formula)	उपभोक्ता की बचत = (एक उपभोक्ता अधिकतम भुगतान करने को तैयार है) - (वास्तविक भुगतान की गई कीमत)
मांग वक्र से संबंध (Relation to Demand Curve)	उपभोक्ता की बचत को मांग वक्र के नीचे और कीमत रेखा के ऊपर के क्षेत्र द्वारा दर्शाया जाता है। मांग वक्र यह दिखाता है कि विभिन्न कीमतों पर उपभोक्ता कितनी मात्रा खरीदने को तैयार है।
उपयोगिता पर आधारित (Based on Utility)	यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि उपभोक्ता किसी वस्तु की पहली इकाई के लिए अधिक कीमत देने को तैयार होता है और बाद की इकाइयों के लिए कम (ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम)।
महत्व (Importance)	यह बाजार की दक्षता, सरकारी नीतियों (जैसे कर या सब्सिडी) के प्रभाव और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभों का आकलन करने में मदद करता है। यह दर्शाता है कि

	उपभोक्ताओं को बाजार लेन-देन से कितना कल्याण प्राप्त होता है।
निर्धारक तत्व (Determinants)	वस्तु की कीमत (Price of the commodity) • उपलब्ध स्थानापन्न वस्तुएं (Availability of substitutes) • उपभोक्ता की आय (Income of the consumer) • उपभोक्ता की रुचि और प्राथमिकताएं (Tastes and preferences of the consumer) • वस्तु की प्रकृति (आवश्यक या विलासिता) (Nature of the commodity - necessity or luxury)
सीमाएं (Limitations)	• उपयोगिता को मापना कठिन है। सभी उपभोक्ताओं के लिए एक समान अधिकतम इच्छा कीमत का अनुमान लगाना मुश्किल है। यह माना जाता है कि आय की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है, जो हमेशा सत्य नहीं होता।

उपभोक्ता की बचत को मापना सरल है।
किसी वस्तु के उपभोग - से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो अधिकतम कीमत उसके लिए चुकाने को तैयार है और जो कीमत, वास्तव में, वह उस वस्तु के लिए चुकाता है, इन दोनों कीमतों के अन्तर को ही 'उपभोक्ता की बचत' कहते हैं।

डॉ. मार्शल ने "उपभोक्ता किसी वस्तु से वंचित रहने की अपेक्षा उस वस्तु के लिए वास्तव में दिए गए मूल्य के अतिरिक्त जो अधिक मूल्य देने को तैयार हो जाता है, वह इस अधिक संतुष्टि की आर्थिक माप है और इसको उपभोक्ता की बचत कहा जाता है।"

एक वस्तु के लिए एक व्यक्ति मुद्रा की जो मात्रा भुगतान करने के लिए तैयार होता है, वह उस वस्तु से उसे प्राप्त होने वाली उपयोगिता की मात्रा को व्यक्त करती है। जितनी अधिक मुद्रा की मात्रा वह भुगतान करने के लिए इच्छुक रहता है, उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता अथवा संतुष्टि उसे उतनी ही अधिक होगी।

इसलिए वस्तु की एक इकाई की सीमान्त उपयोगिता उस कीमत को निर्धारित करती है जो कि एक उपभोक्ता उस इकाई के लिए भुगतान करने को तैयार होगा। एक व्यक्ति जो कुल उपयोगिता प्राप्त करेगा वह वस्तु की खरीदी गई इकाइयों के सीमान्त उपयोगिता का योगफल (∑ MU) होगा तथा कुल कीमत जो वह वास्तव में भुगतान करेगा वह प्रति इकाई कीमत तथा खरीदी गई इकाइयों की संख्या के गुणा के बाराबर है। इस प्रकार

उपभोक्ता की बचत = एक उपभोक्ता कितना भुगतान करने के लिए तैयार है – वह वास्तव में कितना भुगतान करता है।

= सीमान्त उपयोगिता का योगफल – (कीमत × क्रय की गई इकाइयां) ∑ MU – (Price x No. of units purchased)

उपभोक्ता की बचत का विचार ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता के नियम (law of diminishing marginal utility) से व्युत्पादित किया गया है। जैसे-जैसे हम एक वस्तु की अधिक इकाइयां खरीदते हैं, अतिरिक्त इकाइयों से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता कम होती चली जाती है।

उपभोक्ता तब संतुलन में होता है जब दी हुई कीमत सीमान्त उपयोगिता के बराबर हो जाती है अन्य शब्दों में, उपभोक्ता एक वस्तु की उत्तोत्तर इकाइयों को तब तक खरीदता है जब तक कि सीमान्त उपयोगिता दी गई कीमत के बराबर न हो जाती है।

इसका अर्थ यह है कि संतुलन बिन्दु पर एक उपभोक्ता जितना भुगतान करने को तैयार होगा (सीमान्त उपयोगिता), वह उस कीमत के बराबर होता है जिसको वह वास्तव में भुगतान करता है।

किन्तु उसके द्वारा खरीदी गई सीमान्त इकाई से पहले की इकाइयों से जो सीमान्त उपयोगिता वह प्राप्त करता है, उस कीमत की अपेक्षा अधिक होता है जिसका वह उनके लिए वास्तव में भुगतान करता है। इसका कारण यह है कि उसके लिए

उपभोक्ता की बचत को निम्न रेखाचित्र में दिखाया गया है।

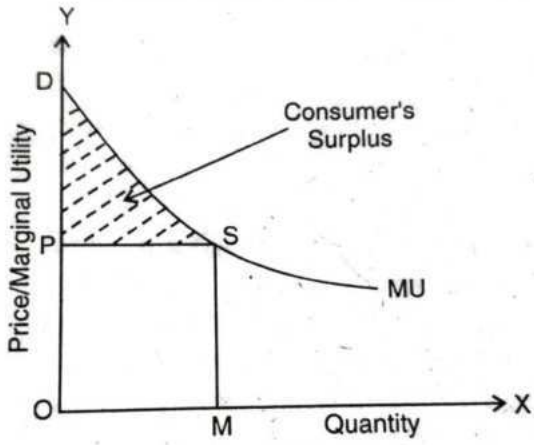

रेखाचित्र : *उपभोक्ता की बचत*

कीमत स्थिर होती है।

उपभोक्ता की बचत का माप (Measure of consumer surplus)

उपभोक्ता की बचत को निम्न रेखाचित्र में दिखाया गया है।

रेखाचित्र के X-अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा Y- अक्ष पर वस्तु की कीमत तथा सीमान्त उपयोगिता को मापा गया है। MU सीमान्त उपयोगिता वक्र है जो नीचे को गिरता हुआ है और यह व्यक्त करता है कि जैसे-जैसे उपभोक्ता वस्तु की अधिक इकाइयां खरीदता है, उसका सीमान्त उपयोगिता कम होता जाता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि सीमान्त उपयोगिता उस कीमत को प्रदर्शित करता है जो एक व्यक्ति उस वस्तु के बिना रहने के बजाय उसके विभिन्न इकाइयों के लिए भुगतान करने को तैयार होगा। यदि OP वह कीमत है जो बाजार में प्रचलित है तो उपभोक्ता तब सन्तुलन में होगा जब वह वस्तु की OM

- इकाइयां खरीदता है क्योंकि OM इकाइयों पर सीमान्त उपयोगिता दी हुई कीमत OP के बराबर है। वस्तु की M वीं इकाई उपभोक्ता को कोई बचत प्रदान नहीं करती क्योंकि वह खरीदी गई अन्तिम इकाई है और इसके लिए भुगतान की गई कीमत सीमान्त उपयोगिता के बराबर है।
- किन्तु अन्तर सीमान्त इकाइयों अर्थात M वीं इकाई से पहले की इकाइयों के लिए सीमान्त उपयोगिता कीमत की अपेक्षा अधिक है और इसलिए ये इकाइयां उपभोक्ता के लिए उपभोक्ता की बचत उत्पन्न करती है।
- वस्तु की विभिन्न इकाइयों के सीमान्त उपयोगिता के योग (EMU) द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

- रेखाचित्र में वस्तु की OM इकाइयों से उपभोक्ता को प्राप्त कुल उपयोगिता (total utility) M बिन्दु तक MU वक्र के अन्तर्गत क्षेत्रफल के बराबर होगा अर्थात OM इकाइयों की कुल उपयोगिता ODSM के बराबर है।
- अन्य शब्दों में, वस्तु की OM इकाइयों के लिए उपभोक्ता ODSM रुपयों के बराबर धनराशि भुगतान करने को तैयार होगा। किन्तु कीमत के OP दिए होने पर वस्तु की OM इकाइयों के लिए उपभोक्ता वास्तव में OPSM के बराबर ही धनराशि भुगतान करेगा। इस प्रकार रेखाचित्र से स्पष्ट है
- उपभोक्ता ODSM-OPSM = DPS के बराबर उपभोक्ता की बचत प्राप्त करता है।

- यदि वस्तु की बाजार कीमत OP से अधिक हो जाती है तो उपभोक्ता वस्तु की OM मात्रा की अपेक्षा कम मात्रा खरीदेगा। फलस्वरूप उपभोक्ता की बचत पहले से कम हो जाएगी।
- दूसरी ओर, यदि कीमत OP से कम हो जाती है तो उपभोक्ता तब संतुलन में होगा जब वह वस्तु की OM मात्रा से अधिक खरीदता है। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता की बचत में वृद्धि होगी।
- इस प्रकार सीमान्त उपयोगिता वक्र के दिए होने पर कीमत जितनी ही अधिक होगी, उपभोक्ता की बचत उतनी ही कम होगी तथा कीमत जितनी ही कम होगी उपभोक्ता की बचत उतनी ही अधिक होगी।

- यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि हमने उपभोक्ता के बचत के विश्लेषण में कल्पना की है कि बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect competition) होती है
- ताकि एक दी हुई कीमत पर उपभोक्ता वस्तु की कोई भी मात्रा खरीद सकता है। लेकिन यदि विक्रेता कीमत विभेद (Price discrimination) करता है
- वस्तु की विभिन्न इकाइयों के लिए भिन्न-भिन्न कीमतें अर्थात वस्तु की कुछ इकाइयों के लिए अपेक्षाकृत अधिक तथा कुछ के लिए अपेक्षाकृत कम कीमतें, वसूल करता है तो इस स्थिति में उपभोक्ता को अपेक्षाकृत कम बचत प्राप्त होगा।
- इस प्रकार जब विक्रेता कीमत विभेदीकरण करता है तो उपभोक्ता को पूर्ण प्रतियोगिता की अपेक्षा कम मात्रा में उपभोक्ता की बचत प्राप्त होगा। यदि विक्रेता पूर्ण कीमत विभेदीकरण (Perfect Price discrimination) करता है
- अर्थात यदि वह वस्तु की प्रत्येक इकाई के लिए उस कीमत के बराबर वसूल करता है जिसे कोई उपभोक्ता उसके लिए भुगतान करने के लिए तैयार होता है तो उस दशा में उपभोक्ता को कोई बचत प्राप्त नहीं होगा।

अनधिमान वन की सहायता से उपभोक्ता की बचत की माप (Measurement of Consumer's surplus through indifference curves)

ऊपर हमने उपभोक्ता की बचत को मापने की मार्शलीय विधि का वर्णन किया है। अब हम उपभोक्ता की बचत को हिक्स के अनधिमान वक्र तकनीक की सहायता से मापेंगे।

अनधिमान वक्र की सहायता से किस प्रकार उपभोक्ता की बचत मापी जाती है यह रेखाचित्र में दिखाया गया है। रेखाचित्र में हमने X - अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा Y - अक्ष पर उपभोक्ता की मौद्रिक आय (Money income) मापी है।

माना कि उपभोक्ता की आय OM है जिसे वह वस्तु X पर तथा शेष धनराशि अन्य वस्तुओं पर व्यय कर सकता है। M से गुजरते हुए एक अनधिमान वक्र IC_1 खींचा गया है जो यह व्यक्त करता है कि IC_1 पर स्थित X वस्तु तथा मुद्रा के सभी संयोग उपभोक्ता को उतना ही सन्तोष प्रदान करते हैं

जितना कि मुद्रा की OM मात्रा। उदाहरणार्थ, अनधिमान वक्र IC_1 पर R संयोग को लें तो इसका अर्थ है कि वस्तु की OA मात्रा तथा मुद्रा की OS मात्रा उपभोक्ता को उतना ही सन्तोष प्रदान करेगी जितना कि मुद्रा की OM मात्रा क्योंकि M तथा R दोनों संयोग एक ही अनधिमान वक्र IC_1 पर स्थित हैं। अन्य शब्दों में, इसका अर्थ है

कि X वस्तु की OA मात्रा के लिए उपभोक्ता मुद्रा की MS मात्रा भुगतान करने के लिए इच्छुक है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वह X वस्तु की OA मात्रा के लिए FR (= MS) मुद्रा त्याग करने के लिए तैयार है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अब माना कि X वस्तु की बाजार में कीमत इस प्रकार है कि हम बजट रेखा ML प्राप्त करते हैं। हम उपभोक्ता के संतुलन के विश्लेषण से जानते हैं कि उपभोक्ता वहां पर सन्तुलन में होगा जहां पर दी गई बजट रेखा एक अनधिमान वक्र को स्पर्श करती है।

रेखाचित्र से स्पष्ट है कि बजट रेखा ML अनधिमान वक्र IC_2 के बिन्दु H पर स्पर्श करता है। सन्तुलन की इस स्थिति में उपभोक्ता के पास वस्तु की OA मात्रा तथा मुद्रा आय की OT मात्रा है।

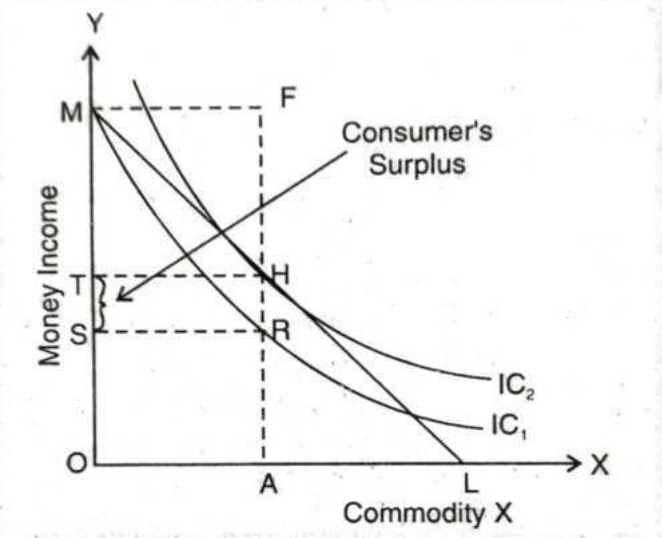

- इस प्रकार X वस्तु की प्रचलित बाजार कीमत पर उपभोक्ता ने X वस्तु की OA मात्रा प्राप्त करने के लिए मुद्रा की MT मात्रा का त्याग कर दिया है।
- लेकिन जैसा कि हमने ऊपर देखा है कि उपभोक्ता X वस्तु की OA मात्रा प्राप्त करने के लिए मुद्रा की MS(या FR) मात्रा त्याग करने के लिए तैयार था। किसी वस्तु के लिए उपभोक्ता जो चुकाता है और जो कुछ चुकाने के लिए तैयार है,
- इन दोनों के अन्तर को ही 'उपभोक्ता की बचत' कहते हैं। दर्शाए गए रेखा चित्र में X वस्तु की OA मात्रा के लिए उपभोक्ता MS मुद्रा देने को तैयार है लेकिन, वास्तव में, इस मात्रा के लिए वह MT मुद्रा ही चुकाता है।
- अतः इन दोनों राशियों का अन्तर (MS-MT = TS = HR) ही उपभोक्ता की बचत है।

उपभोक्ता की बचत की हिक्स की चार धारणाएं

हिक्स द्वारा उपभोक्ता की बचत की निम्न चार धारणाएं (Concepts) प्रस्तुत की गई हैं-

1. कीमत क्षतिपूरक परिवर्तन
2. कीमत सममूल्य परिवर्तन
3. परिमाण क्षतिपूरक परिवर्तन
4. परिमाण सममूल्य परिवर्तन

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि हिक्स के उपभोक्ता की बचत की इन चार धारणाओं का सम्पूर्ण विश्लेषण इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उपभोक्ता की बचत को समझने की सर्वोत्तम विधि यह है कि इसे वस्तु की कीमत में कमी के परिणामस्वरूप उस अतिरिक्त लाभ या सन्तुष्टि (satisfaction) के रूप में समझा जाए जो कि एक उपभोक्ता प्राप्त करेगा।

- **उपयोगिता का मात्रात्मक माप असंभव:** यह सिद्धांत मानता है कि उपयोगिता को मापा जा सकता है, जो कि अवास्तविक है। हिक्स ने उदासीनता वक्र तकनीक से इस समस्या का समाधान किया।

- **मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता अस्थिर:** वस्तु खरीदने पर शेष मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता बढ़ जाती है, जिससे उपभोक्ता की बचत का हिसाब गलत हो जाता है। हिक्स ने इसे भी उदासीनता वक्र से हल किया।
- **वस्तुएँ एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं:** मार्शल वस्तुओं की पूरकता की उपेक्षा करते हैं, जबकि वास्तविकता में वस्तुएँ एक-दूसरे पर निर्भर करती हैं, जिससे बचत का सही माप कठिन होता है।
- **स्थानापन्नों की अनुपस्थिति अवास्तविक:** यह सिद्धांत मानता है कि वस्तु का कोई स्थानापन्न नहीं है, जो व्यावहारिक नहीं है क्योंकि लगभग हर वस्तु का स्थानापन्न होता है।
- **आय, संवेदनशीलता और रुचियों में भिन्नता:** सिद्धांत उपभोक्ताओं की आय, संवेदनशीलता और रुचियों के अंतरों की उपेक्षा करता है। औसत लेने का मार्शल का सुझाव सिद्धांत को मनमाना बनाता है।
- **वास्तविक कीमत से अधिक भुगतान नहीं:** उपभोक्ता किसी वस्तु के लिए उसकी वास्तविक कीमत से अधिक भुगतान नहीं करेगा; वह स्थानापन्न वस्तु चुन लेगा।
- **अंतिम विश्लेषण में बचत शून्य:** यूलिस गोबी के अनुसार, संभावित और वास्तविक कीमत का अंतर अंततः शून्य हो जाता है।
- **आवश्यक वस्तुओं से अनिश्चित और अनंत बचत:** आवश्यक वस्तुओं से प्राप्त उपभोक्ता की बचत निश्चित नहीं होती, बल्कि अनंत और अनिश्चित होती है।
- **विलास एवं प्रतिष्ठा वस्तुओं से बचत का माप असंभव:** टॉसिग का तर्क है कि हीरे जैसी विलासिता की वस्तुओं की कीमत गिरने पर उनकी उपयोगिता कम हो जाती है, जिससे उपभोक्ता की बचत भी घट जाती है।
- **सिद्धान्त उपकल्पित और अवास्तविक:** निकलसन इसे अवास्तविक धारणाओं पर आधारित होने के कारण उपकल्पित और मनगढ़ंत मानते हैं।

यूजीसी नेट अर्थशास्त्र - यूनिट 1: सूक्ष्म अर्थशास्त्र MCQs

1. निम्नलिखित में से कौन सा उदासीनता वक्र का गुण नहीं है?

(A) उदासीनता वक्र दाईं ओर नीचे की ओर झुकता है।
(B) उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उत्तल होते हैं।
(C) दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को प्रतिच्छेद कर सकते हैं।
(D) उच्च उदासीनता वक्र संतुष्टि के उच्च स्तर को दर्शाता है।

उत्तर: (C) दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को प्रतिच्छेद कर सकते हैं।

स्पष्टीकरण:

- **अवधारणा: उदासीनता वक्र उपभोक्ता व्यवहार के सिद्धांत** में एक मौलिक उपकरण है , जो दो वस्तुओं के संयोजनों का प्रतिनिधित्व करता है जो उपभोक्ता को समान स्तर की संतुष्टि या उपयोगिता प्रदान करते हैं।
- **नीचे की ओर ढलान:** उदासीनता वक्र बाएं से दाएं नीचे की ओर झुकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि किसी उपभोक्ता के पास एक वस्तु अधिक है, तो संतुष्टि के समान स्तर को बनाए रखने के लिए उनके पास दूसरी वस्तु कम होनी चाहिए, यह मानते हुए कि दोनों वस्तुएँ वांछनीय हैं। यह प्रतिस्थापन की घटती सीमांत दर (MRS) के सिद्धांत को दर्शाता है।
- **मूल बिन्दु के प्रति उत्तलता:** उदासीनता वक्र आमतौर पर मूल बिन्दु के प्रति उत्तल होते हैं। यह गुण दो वस्तुओं के बीच प्रतिस्थापन की घटती सीमांत दर को दर्शाता है। जैसे-जैसे उपभोक्ता के पास वस्तु X की मात्रा बढ़ती जाती है, वे वस्तु Y की एक अतिरिक्त इकाई के लिए लगातार कम इकाइयों को छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।
- **गैर-अंतर्च्छेदन:** एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि दो उदासीनता वक्र **एक दूसरे को नहीं काट सकते** । यदि वे एक दूसरे को काटते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि वस्तुओं का एक ही संयोजन संतुष्टि के दो अलग-अलग स्तर प्रदान करता है, जो सुसंगत उपभोक्ता वरीयताओं की मूल धारणा का खंडन करता है। उदाहरण के लिए, यदि IC1 और IC2 बिंदु A पर प्रतिच्छेद करते हैं, तो A दोनों वक्रों पर है। यदि B, IC1 पर एक और बिंदु है और C, IC2 पर है, तो पारगमन के अनुसार, B को C के प्रति उदासीन होना चाहिए, जो आमतौर पर ऐसा नहीं होता है यदि IC2, IC1 की तुलना में उच्च संतुष्टि स्तर का प्रतिनिधित्व करता है।
- **उच्चतर आईसी, उच्चतर संतुष्टि:** उच्चतर उदासीनता वक्र (मूल से दूर) संतुष्टि के उच्चतर स्तर को दर्शाता है, क्योंकि यह निम्न उदासीनता वक्र की तुलना में कम से कम एक वस्तु के अधिक, या दोनों वस्तुओं के अधिक संयोजनों से मेल खाता है।
- **क्रमिक उपयोगिता:** उदासीनता वक्र का सिद्धांत **क्रमिक उपयोगिता पर आधारित है** , जिसका अर्थ है कि उपभोक्ता अपनी प्राथमिकताओं को श्रेणीबद्ध कर सकते हैं, लेकिन प्राप्त

उपयोगिता की सटीक मात्रा का आकलन नहीं कर सकते।

2. सूची-I (बाजार संरचना) को सूची-II (विशेषता) के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (बाजार संरचना)	**सूची-II (विशेषता)**
a) पूर्ण प्रतियोगिता	i) मूल्य कठोरता (विकृत मांग वक्र)
b) एकाधिकार	ii) उत्पाद विभेदीकरण
c) एकाधिकार प्रतियोगिता	iii) एकल विक्रेता, मूल्य निर्माता
d) अल्पाधिकार	iv) समरूप उत्पाद, क्रेताओं और विक्रेताओं की बड़ी संख्या

कोड:
(A) a-iv, b-iii, c-ii, d-i
(B) a-i, b-ii, c-iii, d-iv
(C) a-iv, b-ii, c-i, d-iii
(D) a-iii, b-iv, c-i, d-ii

उत्तर: (A) a-iv, b-iii, c-ii, d-i

स्पष्टीकरण:

- **क) पूर्ण प्रतिस्पर्धा (iv) समरूप उत्पाद, क्रेता और विक्रेता की बड़ी संख्या:**
  - **परिभाषा:** एक बाजार संरचना जिसमें क्रेताओं और विक्रेताओं की बहुत बड़ी संख्या, एक समरूप (समान) उत्पाद, फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश और निकास, तथा पूर्ण जानकारी होती है।
  - **मूल्य लेने वाले:** व्यक्तिगत फर्म मूल्य लेने वाले होते हैं, अर्थात उनका बाजार मूल्य पर कोई नियंत्रण नहीं होता।
  - **मांग वक्र:** किसी व्यक्तिगत फर्म के समक्ष मांग वक्र पूर्णतया लोचदार (क्षैतिज) होता है।
  - **दक्षता:** पूर्ण प्रतिस्पर्धा को अक्सर दीर्घकाल में आवंटनात्मक और उत्पादक दक्षता का मानदंड माना जाता है।
  - **उदाहरण:** कुछ वस्तुओं (जैसे, गेहूं, मक्का) के लिए कृषि बाजार अक्सर पूर्ण प्रतिस्पर्धा के करीब होते हैं।
- **(ख) एकाधिकार (iii) एकल विक्रेता, मूल्य निर्माता:**
  - **परिभाषा:** एक बाजार संरचना जहां किसी उत्पाद का केवल एक विक्रेता होता है और कोई निकट विकल्प नहीं होता।
  - **प्रवेश में बाधाएं:** प्रवेश में महत्वपूर्ण बाधाएं (जैसे, पेटेंट, आवश्यक संसाधनों पर नियंत्रण, पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं) एकाधिकारवादी को संरक्षण प्रदान करती हैं।

- **मूल्य निर्माता:** एकाधिकारवादी का मूल्य पर काफी नियंत्रण होता है (वह मूल्य निर्माता होता है) और उसे नीचे की ओर झुके बाजार मांग वक्र का सामना करना पड़ता है।
- **लाभ अधिकतमीकरण:** एकाधिकारवादी लाभ को अधिकतम करते हैं, जहां सीमांत राजस्व (एमआर) सीमांत लागत (एमसी) के बराबर होता है, जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में उच्च कीमतें और कम उत्पादन होता है।
- **कल्याण हानि:** एकाधिकार से प्रायः मृतभार हानि होती है, जो आर्थिक दक्षता की हानि को दर्शाती है।

- **ग) एकाधिकार प्रतियोगिता (ii) उत्पाद विभेदीकरण:**
  - **परिभाषा:** एक बाजार संरचना जिसमें कई विक्रेता अलग-अलग उत्पाद पेश करते हैं। उत्पाद समान होते हैं लेकिन एक जैसे नहीं होते (जैसे, ब्रांडिंग, गुणवत्ता, डिज़ाइन के माध्यम से)।
  - **मुख्य विशेषता: उत्पाद विभेदीकरण** एकाधिकार प्रतिस्पर्धा की पहचान है, जो प्रत्येक फर्म को कुछ हद तक बाजार शक्ति प्रदान करता है।
  - **मांग वक्र:** प्रत्येक फर्म को नीचे की ओर झुके हुए, अपेक्षाकृत लोचदार मांग वक्र का सामना करना पड़ता है।
  - **प्रवेश और निकास:** फर्मों का अपेक्षाकृत मुक्त प्रवेश और निकास।
  - **दीर्घावधि संतुलन: दीर्घावधि** में, मुक्त प्रवेश के कारण कंपनियां केवल सामान्य लाभ (मूल्य = औसत कुल लागत) अर्जित करती हैं, लेकिन P > MC, जो कुछ अकुशलता को दर्शाता है।
  - **उदाहरण:** रेस्तरां, कपड़ों की दुकानें, हेयरड्रेसर।
- **घ) अल्पाधिकार (i) मूल्य कठोरता (किंक्ड डिमांड कर्व):**
  - **परिभाषा:** एक बाजार संरचना जिसमें कुछ बड़े विक्रेताओं (ओलिगोपोलिस्ट) का प्रभुत्व होता है।
  - **अन्योन्याश्रितता:** प्रमुख विशेषता फर्मों की अन्योन्याश्रितता है; एक फर्म की गतिविधियां अन्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।
  - **मूल्य कठोरता:** अल्पाधिकारवादी बाज़ार अक्सर मूल्य कठोरता प्रदर्शित करते हैं, जिसका अर्थ है कि लागत में परिवर्तन होने पर भी कीमतें स्थिर रहती हैं। **पॉल स्वीज़ी द्वारा किंकड डिमांड कर्व मॉडल** इसका एक स्पष्टीकरण है, जो यह सुझाव देता है कि प्रतिद्वंद्वी मूल्य में कटौती करेंगे लेकिन मूल्य वृद्धि नहीं करेंगे।
  - **रणनीतिक व्यवहार:** कंपनियां अपने प्रतिद्वंद्वियों की प्रतिक्रियाओं पर विचार करते हुए रणनीतिक व्यवहार में संलग्न होती हैं (अक्सर गेम थ्योरी का उपयोग करके विश्लेषण किया जाता है)।
  - **प्रवेश में बाधाएं:** प्रवेश में महत्वपूर्ण बाधाएं मौजूद हैं।
  - **उदाहरण:** ऑटोमोबाइल उद्योग, एयरलाइन उद्योग, दूरसंचार।

3. अभिकथन (A): एक तर्कसंगत उत्पादक हमेशा परिवर्तनशील अनुपात के नियम के चरण II में काम करेगा।
कारण (R): चरण II में, परिवर्तनीय कारक का सीमांत उत्पाद (एमपी) और औसत उत्पाद (एपी) दोनों सकारात्मक और घटते हैं, और कुल उत्पाद (टीपी) बढ़ रहा है।

कोड:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **परिवर्तनशील अनुपात का नियम:** यह नियम, जिसे घटते प्रतिफल का नियम भी कहा जाता है, आउटपुट और एक इनपुट की बदलती मात्रा के बीच के संबंध को बताता है, जबकि अन्य इनपुट को अल्पावधि में स्थिर रखा जाता है। इसे **अल्फ्रेड मार्शल जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा महत्वपूर्ण रूप से विकसित किया गया था** ।
- **चरण I (बढ़ते प्रतिफल):**
  - कुल उत्पाद (टीपी) पहले बढ़ती दर से बढ़ता है, फिर घटती दर से।
  - सीमांत उत्पाद (एमपी) बढ़ता है, अपने अधिकतम पर पहुंचता है, और फिर गिरना शुरू हो जाता है। एमपी > एपी।
  - औसत उत्पाद (एपी) बढ़ता है और इस चरण के अंत में अपने अधिकतम स्तर पर पहुंच जाता है।
  - एक तर्कसंगत उत्पादक चरण I में काम नहीं करेगा, क्योंकि वे अधिक परिवर्तनशील इनपुट जोड़कर उत्पादन को अधिक कुशलता से बढ़ा सकते हैं, क्योंकि स्थिर कारकों का कम उपयोग किया जाता है।
- **चरण II (घटता प्रतिफल/आर्थिक क्षेत्र):**
  - टी.पी. निरन्तर बढ़ती रहती है, लेकिन घटती दर के साथ, तथा इस चरण के अंत में अपने अधिकतम स्तर पर पहुंच जाती है।
  - MP निरंतर घटता रहता है तथा TP अधिकतम होने पर शून्य हो जाता है। MP < AP.
  - ए.पी. भी कम हो जाता है लेकिन सकारात्मक बना रहता है।
  - **यह संचालन का आर्थिक रूप से तर्कसंगत चरण है।** यहाँ, परिवर्तनीय इनपुट की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई कुल उत्पादन में सकारात्मक रूप से योगदान देती है, हालाँकि घटती दर पर। स्थिर और परिवर्तनीय दोनों कारकों की दक्षता को अनुकूलित किया जाता है।

- उत्पादक का लक्ष्य वहां कार्य करना है जहां परिवर्तनशील कारक का सीमांत उत्पाद सकारात्मक लेकिन घटता हुआ हो।

- **चरण III (नकारात्मक रिटर्न):**
  - टी.पी. में गिरावट शुरू हो जाती है।
  - एम.पी. ऋणात्मक हो जाता है।
  - एपी में गिरावट जारी है लेकिन यह सकारात्मक बना हुआ है।
  - एक तर्कसंगत उत्पादक चरण III में काम नहीं करेगा, क्योंकि अधिक परिवर्तनशील इनपुट जोड़ने से वास्तव में कुल उत्पादन कम हो जाता है, जिससे यह अकुशल हो जाता है।
- **कारण (R) अभिकथन (A) को सही ढंग से स्पष्ट करता है:** चरण II की विशेषताएँ (सकारात्मक और घटती हुई MP और AP, बढ़ती हुई TP) इसे उत्पादन के लिए एकमात्र कुशल और तर्कसंगत चरण बनाती हैं। चरण I में, परिवर्तनशील इनपुट उपयोग को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन है, और चरण III में, यह प्रतिउत्पादक है। इसलिए, उत्पादक चरण II में कुशलतापूर्वक उत्पादन को अधिकतम करता है।

4. किसी आवंटन को पेरेटो इष्टतम बनाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी शर्तें पूरी होनी चाहिए?

(a) एक्सचेंज में दक्षता (उपभोक्ता ए के लिए MRSxy = उपभोक्ता बी के लिए MRSxy)
(b) उत्पादन में दक्षता (वस्तु X के लिए MRTSlk = वस्तु Y के लिए MRTSlk)
(c) उत्पाद मिश्रण में दक्षता (MRSxy = MRTxy)
(d) आय का न्यायसंगत वितरण।
(e) बाह्य कारकों की उपस्थिति.

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (a), (b), and (d) only
(B) (a), (b), and (c) only
(C) (b), (c), and (e) only
(D) (a), (c), and (d) only

उत्तर: (B) (a), (b), and (c) only

स्पष्टीकरण:

- **पैरेटो ऑप्टिमलिटी/दक्षता: इसका नाम** इतालवी अर्थशास्त्री **विल्फ्रेडो पैरेटो** के नाम पर रखा गया है । यदि किसी व्यक्ति को बेहतर नहीं बनाया जा सकता है, तो कम से कम एक व्यक्ति को बदतर स्थिति में डाले बिना उसे पैरेटो ऑप्टिमलिटी कहा जाता है। यह आवंटन दक्षता की

स्थिति है।

- **पेरेटो इष्टतमता के लिए तीन सीमांत स्थितियाँ:**
  1. **(a) विनिमय में दक्षता (उपभोग दक्षता):**
     - इस शर्त के लिए आवश्यक है कि किन्हीं दो वस्तुओं (मान लीजिए, X और Y) के बीच प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRS) दोनों वस्तुओं का उपभोग करने वाले सभी उपभोक्ताओं के लिए समान होनी चाहिए।
     - गणितीय रूप से: MRSAxy = MRSBxy.
     - इससे यह सुनिश्चित होता है कि उपभोक्ताओं के बीच कोई और पारस्परिक रूप से लाभकारी आदान-प्रदान न हो। यह तब प्राप्त होता है जब उपभोक्ताओं के उदासीनता वक्र एक एड्जवर्थ बॉक्स आरेख में एक दूसरे के स्पर्शज्या होते हैं।
  2. **(b) उत्पादन में दक्षता (उत्पादन दक्षता):**
     - इस शर्त के लिए आवश्यक है कि किसी भी दो इनपुट (मान लें, श्रम L और पूंजी K) के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRTS) इन इनपुट का उपयोग करके किसी भी दो वस्तुओं (मान लें, X और Y) का उत्पादन करने वाले सभी उत्पादकों के लिए समान होनी चाहिए।
     - गणितीय रूप से: MRTSXLK = MRTSYLK.
     - यह सुनिश्चित करता है कि उपलब्ध संसाधनों के आधार पर, किसी एक वस्तु के उत्पादन को बिना किसी अन्य वस्तु के उत्पादन को घटाए बढ़ाना असंभव है। यह तब प्राप्त होता है जब आइसोक्वेंट एड्जवर्थ प्रोडक्शन बॉक्स में या प्रोडक्शन पॉसिबिलिटी फ्रंटियर (PPF) के साथ स्पर्शज्या होते हैं।
  3. **(c) उत्पाद मिश्रण में दक्षता (समग्र दक्षता/आवंटन दक्षता):**
     - इस शर्त के लिए आवश्यक है कि किसी भी दो वस्तुओं के उपभोग में प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRS) उन दो वस्तुओं के उत्पादन में परिवर्तन की सीमांत दर (MRT) के बराबर होनी चाहिए।
     - गणितीय रूप से: MRSxy = MRTxy.
     - एमआरटी उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ) की ढलान को दर्शाता है और एक वस्तु के उत्पादन की अवसर लागत को दूसरे के संदर्भ में दर्शाता है। यह शर्त सुनिश्चित करती है कि उत्पादित की जा रही वस्तुएँ उपभोक्ता की प्राथमिकताओं के अनुरूप हों।
- **(d) आय का न्यायसंगत वितरण:** पारेटो ऑप्टिमलिटी एक दक्षता मानदंड है, न कि समानता मानदंड। आवंटन पारेटो ऑप्टिमलिटी हो सकता है लेकिन अत्यधिक असमान (उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति के पास सब कुछ है, और दूसरों के पास कुछ भी नहीं है, और आप एक व्यक्ति से लिए बिना दूसरों को बेहतर नहीं बना सकते)। **अमर्त्य सेन ने** समानता को संबोधित करने में पारेटो ऑप्टिमलिटी की सीमाओं की व्यापक रूप से आलोचना की है ।
- **(e) बाह्यताओं की उपस्थिति:** बाह्यताएं (सकारात्मक या नकारात्मक) बाजार की विफलता

का कारण बनती हैं और आम तौर पर पैरेटो ऑप्टिमलिटी से विचलन का कारण बनती हैं क्योंकि बाजार की कीमतें पूरी सामाजिक लागत या लाभ को प्रतिबिंबित नहीं करती हैं। पैरेटो ऑप्टिमलिटी के लिए, बाह्यताएं अनुपस्थित या आंतरिक होनी चाहिए।

5. एक गैर-सहकारी खेल में, नैश संतुलन तब प्राप्त होता है जब:

(A) प्रत्येक खिलाड़ी वह रणनीति चुनता है जो अन्य खिलाड़ियों की रणनीतियों की परवाह किए बिना उनके लाभ को अधिकतम करती है।
(B) सभी खिलाड़ी सर्वोत्तम सामूहिक परिणाम प्राप्त करने के लिए सहयोग करते हैं।
(C) प्रत्येक खिलाड़ी अन्य खिलाड़ियों द्वारा चुनी गई रणनीतियों के आधार पर अपनी सर्वोत्तम रणनीति चुनता है, और किसी भी खिलाड़ी को अपनी रणनीति को एकतरफा रूप से बदलने का कोई प्रोत्साहन नहीं होता है।
(D) एक खिलाड़ी खेल पर हावी रहता है और दूसरों के लिए रणनीति तय करता है।

उत्तर: (C) प्रत्येक खिलाड़ी अन्य खिलाड़ियों द्वारा चुनी गई रणनीतियों के आधार पर अपनी सर्वोत्तम रणनीति चुनता है, और किसी भी खिलाड़ी को अपनी रणनीति को एकतरफा रूप से बदलने का कोई प्रोत्साहन नहीं होता है।

स्पष्टीकरण:

- **खेल सिद्धांत:** तर्कसंगत निर्णयकर्ताओं के बीच रणनीतिक बातचीत का अध्ययन। **जॉन वॉन न्यूमैन और ओस्कर मॉर्गनस्टर्न को** उनकी पुस्तक "थ्योरी ऑफ़ गेम्स एंड इकोनॉमिक बिहेवियर" (1944) के साथ अग्रणी माना जाता है।
- **असहकारी खेल:** ऐसे खेल जहां खिलाड़ी बिना किसी बाध्यकारी समझौते या सहयोग के स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं।
- **नैश संतुलन: इसका नाम जॉन नैश** के नाम पर रखा गया है , जिन्होंने खेल सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नैश संतुलन एक खेल में एक ऐसी स्थिति है जहाँ:
  1. प्रत्येक खिलाड़ी ने एक रणनीति चुनी है।
  2. कोई भी खिलाड़ी अपनी रणनीति को एकतरफा रूप से बदलकर लाभ नहीं उठा सकता, बशर्ते कि अन्य खिलाड़ी अपनी रणनीति में कोई बदलाव न करें।
     - यह एक स्थिर परिणाम का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि किसी भी खिलाड़ी के पास विचलित होने के लिए तत्काल कोई प्रोत्साहन नहीं होता है।
- **विकल्प (A) एक प्रमुख रणनीति का वर्णन करता है** , जो एक ऐसी रणनीति है जो किसी खिलाड़ी के लिए सबसे अच्छी होती है, भले ही दूसरे खिलाड़ी क्या करते हों। जबकि एक खेल में नैश इक्विलिब्रियम हो सकता है जहाँ खिलाड़ी प्रमुख रणनीतियों का उपयोग करते हैं, सभी नैश इक्विलिब्रिया में प्रमुख रणनीतियाँ शामिल नहीं होती हैं।

- **विकल्प (B) एक सहकारी खेल परिणाम का वर्णन करता है** , जो गैर-सहकारी खेलों में नैश संतुलन की अवधारणा से अलग है। "कैदी की दुविधा" एक क्लासिक उदाहरण है जहां नैश संतुलन एक गैर-सहकारी परिणाम है जो दोनों खिलाड़ियों के लिए उससे भी बदतर है, जितना कि अगर वे सहयोग कर सकते थे।
- **विकल्प (D) प्रभुत्व या नेतृत्व की स्थिति का वर्णन करता है** , जो कुछ खेल मॉडल में हो सकता है (जैसे ओलिगोपॉली में स्टैकेलबर्ग नेतृत्व) लेकिन नैश संतुलन की सामान्य परिभाषा नहीं है।
- **अस्तित्व:** नैश ने साबित किया कि सीमित संख्या में खिलाड़ियों और रणनीतियों वाले प्रत्येक सीमित खेल में कम से कम एक नैश संतुलन होता है, संभवतः मिश्रित रणनीतियों में।

6. अभिकथन (A): नैतिक जोखिम तब होता है जब लेनदेन में एक पक्ष के पास लेनदेन होने से पहले दूसरे पक्ष की तुलना में अधिक या बेहतर जानकारी होती है।
कारण (R): बीमा बाज़ारों में, उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों द्वारा बीमा खरीदने की अधिक संभावना होती है, जिससे नैतिक जोखिम की समस्या उत्पन्न होती है।

कोड:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। (सुधार: (R) नैतिक जोखिम नहीं, बल्कि प्रतिकूल चयन का वर्णन करता है। आइए R या A को फिर से लिखें ताकि यह क्रमशः नैतिक जोखिम या प्रतिकूल चयन के लिए बेहतर A&R बन जाए)।
आइये इस प्रश्न का पुनर्मूल्यांकन करें और इसे सही करें ताकि यह नैतिक जोखिम या प्रतिकूल चयन पर आधारित एक उचित A&R प्रश्न बन जाए।

6. अभिकथन (A): प्रतिकूल चयन बाज़ार में तब उत्पन्न होता है जब किसी अनुबंध पर सहमति होने से पहले एक पक्ष के पास दूसरे पक्ष की तुलना में किसी प्रासंगिक विशेषता के बारे में अधिक जानकारी होती है।
कारण (R): प्रयुक्त कार बाजार में, विक्रेता अक्सर खरीदारों की तुलना में कार के दोषों के बारे में अधिक जानते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जहां मुख्य रूप से निम्न-गुणवत्ता वाली कारों ("नींबू") का व्यापार होता है।

कोड:

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **असममित सूचना:** ऐसी स्थिति जिसमें आर्थिक लेन-देन में एक पक्ष के पास दूसरे पक्ष की तुलना में अधिक भौतिक ज्ञान होता है। इस अवधारणा को विशेष रूप से **जॉर्ज एकरलोफ़, माइकल स्पेंस और जोसेफ़ स्टिग्लिट्ज़ ने खोजा था** , जिन्होंने असममित सूचना वाले बाज़ारों के अपने विश्लेषण के लिए 2001 में अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार साझा किया था।
- **प्रतिकूल चयन (छिपी हुई जानकारी - पूर्व-अनुबंध):**
  - **परिभाषा: यह किसी लेनदेन या अनुबंध के अंतिम रूप से तय होने** *से पहले* होता है। यह तब होता है जब एक पक्ष के पास लेनदेन से संबंधित किसी विशेषता के बारे में निजी जानकारी होती है जो दूसरे पक्ष के पास नहीं होती।
  - **अभिकथन (A) सत्य है:** यह प्रतिकूल चयन को पूर्व-अनुबंधात्मक सूचना विषमता के रूप में सही ढंग से परिभाषित करता है।
  - **परिणाम:** अज्ञानी पक्ष अंततः अवांछनीय व्यापारिक साझेदार या उत्पाद का चयन कर सकता है।
  - **उदाहरण (यूज्ड कार मार्केट - एकरलोफ द्वारा "लेमन्स का बाजार"):** यूज्ड कारों के विक्रेता अपनी कारों की गुणवत्ता के बारे में खरीदारों से अधिक जानते हैं। खरीदार, इस डर से कि उन्हें "लेमन" (खराब कार) मिल सकती है, केवल औसत कीमत चुकाने को तैयार हैं। यह कम औसत कीमत अच्छी गुणवत्ता वाली कारों ("पीचिस") को बाजार से बाहर कर देती है, जिससे ज्यादातर लेमन ही बचते हैं। यह वही है जिसका **कारण (R)** वर्णन करता है।
  - **उदाहरण (बीमा बाजार):** उच्च अंतर्निहित जोखिम वाले व्यक्ति (जैसे, पहले से मौजूद स्वास्थ्य स्थितियां, जोखिम भरी जीवनशैली) बीमा लेने की अधिक संभावना रखते हैं क्योंकि उन्हें उच्च दावों की उम्मीद होती है। बीमाकर्ता, व्यक्तिगत जोखिम स्तरों के बारे में सही जानकारी के अभाव में, औसत जोखिम के आधार पर प्रीमियम निर्धारित कर सकता है, जो कि बहुत अधिक जोखिम वाले व्यक्तियों के नामांकन के लिए लाभहीन हो सकता है।
  - **कारण (R) सत्य है और (A) की व्याख्या करता है:** "नींबू समस्या" प्रतिकूल चयन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में पूर्व-अनुबंधित छिपी हुई

जानकारी एक अकुशल बाजार परिणाम की ओर ले जाती है।

- **नैतिक जोखिम (छिपी कार्रवाई - अनुबंध के बाद):**
  - **परिभाषा: यह तब** होता है *जब* कोई लेनदेन या अनुबंध अंतिम रूप से तय हो जाता है। यह तब होता है जब एक पक्ष, जिसके कार्य दूसरे पक्ष द्वारा देखे नहीं जा सकते या जिनकी निगरानी करना महंगा होता है, दूसरे पक्ष के लिए हानिकारक तरीके से व्यवहार करने के लिए प्रेरित होता है।
  - **उदाहरण (बीमा बाजार):** एक बार बीमा हो जाने के बाद, व्यक्ति जोखिम के प्रति कम सावधानी बरत सकता है (उदाहरण के लिए, यदि कार क्षति के विरुद्ध पूर्ण बीमा हो तो कम सावधानी से वाहन चला सकता है) क्योंकि बीमाकर्ता नकारात्मक परिणाम की लागत वहन करता है।
  - **उदाहरण (रोजगार):** एक कर्मचारी, एक बार नियुक्त होने के बाद (और यदि निगरानी कठिन हो), तो संभवतः पूर्ण प्रयास नहीं करेगा।

7. सूची-I (कारक मूल्य निर्धारण का सिद्धांत) को सूची-II (अर्थशास्त्री/अवधारणा) के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कारक मूल्य निर्धारण का सिद्धांत)	सूची-II (अर्थशास्त्री/संकल्पना)
a) वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत	i) जोन रॉबिन्सन
b) रिकार्डियन किराये का सिद्धांत	ii) जॉन बेट्स क्लार्क
c) संयम ब्याज का सिद्धांत	iii) विभेदक किराया
c) मजदूरी का शोषण सिद्धांत	iv) नासाउ विलियम सीनियर

कोड:
(A) a-ii, b-iii, c-iv, d-i
(B) a-i, b-ii, c-iii, d-iv
(C) a-ii, b-iv, c-i, d-iii
(D) a-iv, b-iii, c-ii, d-i

उत्तर: (A) a-ii, b-iii, c-iv, d-i

स्पष्टीकरण:

- **कारक मूल्य निर्धारण:** उत्पादन के कारकों (भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमिता) के मूल्यों के निर्धारण से संबंधित है, जो क्रमशः किराया, मजदूरी, ब्याज और लाभ हैं।
- **a) वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत (ii) जॉन बेट्स क्लार्क:**
  - **अवधारणा:** यह सिद्धांत, जो **जॉन बेट्स क्लार्क** (और फिलिप विकस्टीड और लियोन वाल्रास द्वारा भी) द्वारा प्रमुखता से विकसित किया गया था, यह मानता है कि पूर्ण प्रतिस्पर्धा के तहत, उत्पादन के प्रत्येक कारक को उसके सीमांत उत्पाद (कारक की एक

और इकाई द्वारा उत्पादित अतिरिक्त उत्पादन) के बराबर पुरस्कार मिलता है।
    - **मान्यताएँ:** समरूप कारक, कारक और उत्पाद बाज़ार में पूर्ण प्रतिस्पर्धा, विभाज्य कारक, घटते सीमांत प्रतिफल का नियम।
    - **महत्व:** यह सिद्धांत प्रदान करता है कि उत्पादन में उनके योगदान के आधार पर उत्पादन के कारकों के बीच आय किस प्रकार वितरित की जाती है।
- **b) रिकार्डियन किराया सिद्धांत (iii) विभेदक किराया:**
    - **अवधारणा: डेविड रिकार्डो** द्वारा विकसित , यह सिद्धांत किराये को कम उपजाऊ या कम अनुकूल स्थान वाली (सीमांत) भूमि की तुलना में अधिक उपजाऊ या बेहतर स्थान वाली भूमि द्वारा अर्जित अधिशेष के रूप में समझाता है।
    - **विभेदक किराया:** भूमि की उर्वरता या परिस्थितिजन्य लाभों में अंतर के कारण किराया उत्पन्न होता है। बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए जैसे-जैसे खेती निम्न भूमि तक फैलती है, बेहतर भूमि सीमांत भूमि (जो कोई किराया नहीं कमाती) की तुलना में अपनी उत्पादकता में अंतर के बराबर किराया कमाती है।
    - **दुर्लभता किराया:** रिकार्डो ने समग्र रूप से भूमि के लिए दुर्लभता किराया को भी स्वीकार किया।
- **c) संयम सिद्धांत (iv) नासाऊ विलियम सीनियर:**
    - **अवधारणा: नासाऊ विलियम सीनियर** द्वारा प्रस्तावित , यह सिद्धांत बताता है कि ब्याज "संयम" का पुरस्कार है - पूंजी निर्माण (बचत) के लिए संसाधन उपलब्ध कराने के लिए वर्तमान उपभोग से परहेज करने में शामिल बलिदान।
    - **आलोचना:** "संयम" शब्द की आलोचना की गई, खास तौर पर कार्ल मार्क्स जैसे समाजवादियों द्वारा, क्योंकि ऐसा लगता था कि इसका मतलब यह था कि धनी पूंजीपतियों ने महत्वपूर्ण त्याग किए थे। अल्फ्रेड मार्शल ने बाद में "संयम" की जगह "प्रतीक्षा" शब्द का इस्तेमाल किया।
    - **समय वरीयता:** यह सिद्धांत बाद के सिद्धांतों का अग्रदूत है जो ब्याज दरों के निर्धारक के रूप में समय वरीयता पर जोर देते हैं (उदाहरण के लिए, बोहम-बावर्क का एगियो सिद्धांत)।
- **d) मजदूरी का शोषण सिद्धांत (i) जोन रॉबिन्सन / (कार्ल मार्क्स भी):**
    - **अवधारणा (मार्क्सवादी): कार्ल मार्क्स ने** तर्क दिया कि पूंजीवाद के तहत, श्रम का शोषण किया जाता है क्योंकि श्रमिकों को एक मजदूरी (श्रम शक्ति का मूल्य) का भुगतान किया जाता है जो उनके द्वारा उत्पादित उत्पादन के मूल्य (श्रम का मूल्य) से कम है। अंतर "अतिरिक्त मूल्य" है, जिसे पूंजीपति लाभ के रूप में हड़प लेते हैं।
    - **संकल्पना (जोआन रॉबिन्सन - अपूर्ण प्रतिस्पर्धा): जोन रॉबिन्सन ने** अपूर्ण प्रतिस्पर्धा पर अपने काम में दिखाया कि मार्क्सवादी ढांचे के बिना भी श्रम का शोषण कैसे किया जा सकता है। एकाधिकारवादी शोषण तब होता है जब श्रम बाजार में बाजार शक्ति वाली एक फर्म श्रम के सीमांत राजस्व उत्पाद (एमआरपी) से कम मजदूरी का भुगतान करती

है।

- जबकि मार्क्स शोषण सिद्धांत के प्राथमिक प्रस्तावक हैं, जोआन रॉबिन्सन का एकाधिकार शक्ति पर काम इस बात पर एक और दृष्टिकोण प्रदान करता है कि कैसे मजदूरी को प्रतिस्पर्धी स्तरों से नीचे गिराया जा सकता है। विकल्पों को देखते हुए, जोन रॉबिन्सन अपूर्ण बाजार स्थितियों के तहत कारक मूल्य निर्धारण के संदर्भ में सबसे उपयुक्त मैच है।

8. एक व्यक्ति जो एक विशिष्ट लाभ के साथ एक निश्चित परिणाम को उसी अपेक्षित लाभ के साथ एक जोखिमपूर्ण संभावना के मुकाबले अधिक पसंद करता है, उसे इस प्रकार वर्णित किया जाता है:

(A) जोखिम-तटस्थ
(B) जोखिम-प्रेमी (या जोखिम लेने वाला)
(C) जोखिम से बचने वाला
(D) जोखिम-उदासीन

उत्तर: (C) जोखिम से बचने वाला

स्पष्टीकरण:

- **अनिश्चितता के तहत निर्णय लेना:** सूक्ष्मअर्थशास्त्र का यह क्षेत्र इस बात से संबंधित है कि व्यक्ति कैसे चुनाव करते हैं जब उन विकल्पों के परिणाम निश्चित रूप से ज्ञात नहीं होते हैं लेकिन उन्हें संभावनाओं द्वारा वर्णित किया जा सकता है। प्रमुख अवधारणाओं में अपेक्षित मूल्य, अपेक्षित उपयोगिता और जोखिम के प्रति दृष्टिकोण शामिल हैं।
- **अपेक्षित उपयोगिता सिद्धांत: जॉन वॉन न्यूमैन और ओस्कर मॉर्गनस्टर्न** द्वारा विकसित , यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्ति अपनी अपेक्षित उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए निर्णय लेते हैं, न कि अपेक्षित मौद्रिक मूल्य को।
- **जोखिम के प्रति दृष्टिकोण:**
  1. **जोखिम के खिलाफ:**
     - **परिभाषा:** जोखिम से बचने वाला व्यक्ति जोखिम भरी संभावना (जुआ) के बजाय एक निश्चित परिणाम (एक निश्चित चीज़) को प्राथमिकता देता है, जिसका अपेक्षित मौद्रिक मूल्य समान हो। वे अनिश्चितता को नापसंद करते हैं।
     - **उपयोगिता फ़ंक्शन:** धन का उनका उपयोगिता फ़ंक्शन अवतल है (धन की घटती सीमांत उपयोगिता)। इसका मतलब है कि एक अतिरिक्त डॉलर से प्राप्त उपयोगिता एक डॉलर खोने से होने वाली उपयोगिता से कम है।
     - **निश्चितता समतुल्य:** निश्चितता समतुल्य (निश्चित धन की वह राशि जो जोखिमपूर्ण संभावना के समान उपयोगिता देती है) जोखिम-विरोधी व्यक्ति के लिए जोखिमपूर्ण

संभावना के अपेक्षित मूल्य से कम है। अंतर वह जोखिम प्रीमियम है जो वे जोखिम से बचने के लिए चुकाने को तैयार हैं।
    - **उदाहरण:** बीमा खरीदने वाले अधिकांश लोग जोखिम से बचते हैं।
2. **जोखिम से विरक्त:**
    - **परिभाषा:** जोखिम-तटस्थ व्यक्ति एक निश्चित परिणाम और समान अपेक्षित मौद्रिक मूल्य वाली जोखिमपूर्ण संभावना के बीच उदासीन होता है।
    - **उपयोगिता फलन:** उनकी संपत्ति की उपयोगिता फलन रैखिक (संपत्ति की स्थिर सीमांत उपयोगिता) है।
    - **निश्चितता समतुल्य:** निश्चितता समतुल्य अपेक्षित मूल्य के बराबर होता है।
3. **जोखिम लेने वाला (जोखिम लेने वाला):**
    - **परिभाषा:** जोखिम पसंद करने वाला व्यक्ति एक निश्चित परिणाम के बजाय एक जोखिम भरी संभावना को प्राथमिकता देता है, जिसकी अपेक्षित मौद्रिक कीमत समान हो। उन्हें जोखिम उठाने में मज़ा आता है।
    - **उपयोगिता फलन:** धन का उनका उपयोगिता फलन उत्तल (धन की बढ़ती सीमांत उपयोगिता) है।
    - **निश्चितता समतुल्य:** निश्चितता समतुल्य अपेक्षित मूल्य से अधिक है।
    - **उदाहरण:** जुआरी जो जुआ खेलने के रोमांच के लिए भुगतान करने को तैयार रहते हैं, भले ही अपेक्षित भुगतान नकारात्मक हो।

- **जोखिम-उदासीन:** यह शब्द जोखिम-उदासीन का पर्याय है।

9. वाल्रास के नियम के अनुसार, 'n' बाज़ारों वाली अर्थव्यवस्था में:

(a) यदि (n-1) बाजार संतुलन में हैं, तो nवाँ बाजार भी संतुलन में होना चाहिए।
(b) सभी बाज़ारों में अतिरिक्त मांग का कुल मूल्य शून्य होना चाहिए।
(c) सामान्य संतुलन तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सभी बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धी हों।
(d) इसका तात्पर्य है कि व्यक्तिगत बजट बाधाओं का योग कुल मिलाकर समान है।
(e) इसे अल्फ्रेड मार्शल द्वारा तैयार किया गया था।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (a), (b), and (c) only
(B) (a), (b), and (d) only
(C) (c), (d), and (e) only
(D) (a), (d), and (e) only

उत्तर: (B) (a), (b), and (d) only

स्पष्टीकरण:

- **सामान्य संतुलन विश्लेषण:** कई या कई परस्पर क्रियाशील बाज़ारों वाली पूरी अर्थव्यवस्था में आपूर्ति, मांग और कीमतों के व्यवहार का अध्ययन करता है, यह साबित करने की कोशिश करता है कि कीमतों का एक ऐसा सेट मौजूद है जो समग्र संतुलन का परिणाम देगा। **लियोन वाल्रास** सामान्य संतुलन सिद्धांत के अग्रणी हैं।
- **वाल्रास का नियम:**
  - **कथन: लियोन वाल्रास** के नाम पर , इस नियम में कहा गया है कि किसी भी मूल्य सेट पर, किसी भी अर्थव्यवस्था में सभी बाजारों में अतिरिक्त मांगों का कुल मूल्य शून्य होना चाहिए।
  - **गणितीय निरूपण:** यदि Pi वस्तु i की कीमत है, Di वस्तु i की मांग है, और Si वस्तु i की आपूर्ति है, तो वाल्रास का नियम कहता है: Σ Pi (Di - Si) = 0, जहां योग सभी वस्तुओं i=1 से n तक है।
  - **(b) सभी बाजारों में अतिरिक्त मांग का कुल मूल्य शून्य होना चाहिए:** यह वाल्रास के नियम का सीधा कथन है। किसी वस्तु की अतिरिक्त मांग (Di - Si) होती है।
  - **(d) इसका तात्पर्य है कि व्यक्तिगत बजट बाधाओं का योग एकत्रीकरण में होता है:** वाल्रास का नियम इस धारणा से लिया गया है कि सभी व्यक्ति अपने बजट बाधाओं पर हैं (यानी, वे अपनी सारी आय खर्च करते हैं)। जब सभी व्यक्तियों में एकत्र किया जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि मांग की गई वस्तुओं का कुल मूल्य आपूर्ति की गई वस्तुओं के कुल मूल्य के बराबर होता है (जब प्रारंभिक बंदोबस्ती और उत्पादन पर विचार किया जाता है)।
- **बाजार समाशोधन के लिए निहितार्थ:**
  - **(a) यदि (एन-1) बाजार संतुलन में हैं, तो एनवां बाजार भी संतुलन में होना चाहिए:** यह वाल्रास के नियम का एक महत्वपूर्ण निहितार्थ है। यदि पहले (एन-1) बाजारों में अतिरिक्त मांगों का योग शून्य है (क्योंकि वे संतुलन में हैं), और सभी 'एन' बाजारों में अतिरिक्त मांगों का कुल योग शून्य होना चाहिए, तो एनवें बाजार में अतिरिक्त मांग भी शून्य होनी चाहिए। यह एक सामान्य संतुलन खोजने के कार्य को सरल बनाता है; किसी को केवल यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि (एन-1) बाजार स्पष्ट हैं।
- **अन्य बिन्दु:**
  - **(c) सामान्य संतुलन तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सभी बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धी हों:** जबकि वाल्रास के मूल मॉडल में पूर्ण प्रतिस्पर्धा को माना गया था, सामान्य संतुलन विश्लेषण को अपूर्णताओं वाली अर्थव्यवस्थाओं तक बढ़ाया जा सकता है। हालाँकि, संतुलन का अस्तित्व और उचित संबंध बदल सकते हैं। वाल्रास का नियम तब तक लागू रहता है जब तक बजट की बाध्यताएँ पूरी होती हैं।
  - **(e) इसे अल्फ्रेड मार्शल ने तैयार किया था:** यह गलत है। वाल्रास का नियम लियोन वाल्रास को दिया जाता है। अल्फ्रेड मार्शल आंशिक संतुलन विश्लेषण और उस ढांचे में

आपूर्ति और मांग अवधारणाओं के विकास के लिए जाने जाते हैं।

- **सामान्य संतुलन का अस्तित्व:** कीमतों के एक सामान्य संतुलन सेट के अस्तित्व को बाद में **केनेथ एरो और जेरार्ड डेब्रू जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा** विशिष्ट परिस्थितियों में कठोरता से सिद्ध किया गया था।

10. सामाजिक कल्याण कार्य (एसडब्ल्यूएफ) का उद्देश्य है:

(A) समाज के सबसे गरीब व्यक्ति की उपयोगिता को अधिकतम करना।
(B) समग्र सामाजिक कल्याण के माप में व्यक्तिगत उपयोगिताओं को एकत्रित करना, जिससे विभिन्न सामाजिक स्थितियों की रैंकिंग हो सके।
(C) सुनिश्चित करें कि सभी संसाधन पूर्ण दक्षता के साथ आवंटित किए जाएं।
(D) अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप का इष्टतम स्तर निर्धारित करना।

उत्तर: (B) समग्र सामाजिक कल्याण के माप में व्यक्तिगत उपयोगिताओं को एकत्रित करना, जिससे विभिन्न सामाजिक स्थितियों की रैंकिंग हो सके।

स्पष्टीकरण:

- **कल्याण अर्थशास्त्र:** अर्थशास्त्र की एक शाखा जो समग्र (सामाजिक) स्तर पर कल्याण (कल्याण) का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म आर्थिक तकनीकों का उपयोग करती है। यह दक्षता और समानता के मुद्दों से संबंधित है।
- **सामाजिक कल्याण कार्य (एसडब्ल्यूएफ):**
  - **अवधारणा: अब्राम बर्गसन** द्वारा प्रस्तुत (1938 के एक पेपर में) और **पॉल सैमुएलसन द्वारा आगे विकसित** । SWF एक ऐसा फ़ंक्शन है जो कुछ नैतिक मानदंडों के आधार पर विभिन्न सामाजिक स्थितियों (संसाधनों का आवंटन और व्यक्तियों के बीच उपयोगिता का वितरण) को रैंक करता है।
  - **उद्देश्य:** यह समाज के सभी व्यक्तियों के उपयोगिता स्तर या प्राथमिकताओं को सामाजिक कल्याण के एकल माप में एकत्रित करके सामाजिक विकल्प बनाने का एक तरीका प्रदान करता है।
  - **फॉर्म:** W = W(U1, U2, ..., Un), जहाँ W सामाजिक कल्याण है और Ui व्यक्तिगत i की उपयोगिता है।
  - **सामाजिक स्थितियों की रैंकिंग:** इसका प्राथमिक उद्देश्य नीति निर्माताओं या समाज को विभिन्न आर्थिक परिणामों की तुलना करने तथा SWF के विशिष्ट स्वरूप के अनुसार सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने वाले परिणाम को चुनने की अनुमति देना है।

- **एसडब्ल्यूएफ के विभिन्न रूप:**
  - **उपयोगितावादी (बेन्थमाइट):** W = ΣUi. व्यक्तिगत उपयोगिताओं के योग को अधिकतम करने का लक्ष्य रखता है. कार्डिनल उपयोगिता और पारस्परिक तुलना को मानता है.
  - **रॉल्सियन (मैक्सिमिन):** W = min(U1, U2, ..., Un)। इसका उद्देश्य समाज में सबसे खराब स्थिति वाले व्यक्ति की उपयोगिता को अधिकतम करना है (जैसा कि विकल्प A में बताया गया है, लेकिन यह SWF का एक *विशिष्ट प्रकार है* , सामान्य परिभाषा नहीं)। यह **जॉन रॉल्स के** "न्याय के सिद्धांत" को दर्शाता है।
  - **उपयोगिताओं का भारित योग:** W = ΣaiUi, जहाँ ai प्रत्येक व्यक्ति की उपयोगिता को दिए गए महत्व को दर्शाने वाले भार हैं।
- **विकल्प (A) रॉल्सियन SWF का वर्णन करता है** , जो एक विशिष्ट रूप है, किसी भी SWF का सामान्य उद्देश्य नहीं है।
- **विकल्प (C) पेरेटो दक्षता से संबंधित है** , जो सामाजिक स्थितियों के मूल्यांकन के लिए एक मानदंड है, लेकिन SWF इससे भी आगे बढ़कर रैंकिंग की अनुमति देता है, तब भी जब कुछ स्थितियाँ पेरेटो के लिए गैर-तुलनीय हों या जब विकल्पों में दक्षता और समानता के बीच समझौता शामिल हो।
- **विकल्प (D) SWF के उपयोग का एक संभावित अनुप्रयोग या निहितार्थ है** (उदाहरण के लिए, सरकारी नीतियों के कल्याणकारी प्रभावों का मूल्यांकन करना), लेकिन यह SWF की मौलिक परिभाषा या उद्देश्य नहीं है।
- **एरो की असंभवता प्रमेय: केनेथ एरो ने** दिखाया कि केवल क्रमिक व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर निर्भर रहने पर एक सामाजिक कल्याण फ़ंक्शन का निर्माण करना असंभव है जो उचित प्रतीत होने वाले स्वयंसिद्धों (जैसे अप्रतिबंधित डोमेन, पेरेटो सिद्धांत, अप्रासंगिक विकल्पों की स्वतंत्रता और गैर-तानाशाही) के एक सेट को संतुष्ट करता है। यह व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को एक सुसंगत सामाजिक विकल्प में एकत्रित करने में कठिनाइयों को उजागर करता है।

अर्थशास्त्र जून-2024

51. धारावाहिक सहसंबंध होने के कई कारण हैं। वह कारण जो धारावाहिक सहसंबंध का कारण नहीं बनता है:
(ए) अधिकांश समय-श्रृंखला डेटा व्यवसाय चक्रों को प्रदर्शित करते हैं
(बी) शोधकर्ताओं ने प्रतिगमन से कुछ महत्वपूर्ण चर को बाहर रखा हो सकता है
(सी) कुछ चर विलम्ब से प्रतिक्रिया करते हैं
(डी) देखे गए व्याख्यात्मक चर में बड़ी भिन्नता
उत्तर: (डी)

52. निम्नलिखित में से कौन सा, अंतर-उद्योग व्यापार सूचकांक (टी) को सही ढंग से दर्शाता है?
(ए) टी=1− | एक्स+एम | एक्स− एम
(बी) टी=1−X+M | X−M |
(सी) टी=1−X−M | X+M |
(डी) टी=1− | X−M | X˙+ M
उत्तर: (बी)

53. यदि आयात की सीमांत प्रवृत्ति अधिक है, तो निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य होगा?
(a) IS वक्र अधिक तीव्र है
(b) इससे मुद्रा का मूल्य बढ़ेगा
(c) यह LM वक्र को सपाट बना देगा
(घ) आय के प्रत्येक स्तर के लिए, बाह्य संतुलन प्राप्त करने के लिए ब्याज दर उच्च होनी चाहिए
(ई) ब्याज दर के प्रत्येक स्तर के लिए, बीओपी समीकरण को प्राप्त करने के लिए उच्च आय उत्पन्न की जाएगी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) केवल (a) और (d)
(बी) केवल (ए) और (बी)
(सी) केवल (ए), (बी), (सी) और (डी)
(डी) केवल (ए), (डी) और (ई)
उत्तर: (सी)

54. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।

सूची-I	**सूची द्वितीय**
(क) मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण	(I) मिल्टन फ्रीडमैन
(बी) रोजगार की प्राकृतिक दर	(II) किडलैंड और प्रेस्कॉट
(सी) समय असंगति समस्या	(III) रॉबर्ट ल्यूकस जूनियर.
(घ) तर्कसंगत अपेक्षा	(IV) जे.बी. टेलर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (ए)-(IV), (बी)-(आई), (सी)-(II), (डी)-(III)
(बी) (ए)-(आई), (बी)-(IV), (सी)-(II), (डी)-(III)
(सी) (ए)-(IV), (बी)-(II), (सी)-(III), (डी)-(ए)
(डी) (ए) - (द्वितीय), (बी) - (III), (सी) - (IV), (डी) - (ए)
उत्तर: (ए)

55. दो चर प्रतिगमन मॉडल में, जहाँ प्रेक्षणों की संख्या 13 है, त्रुटि अवधि का विचरण 0.893652 है और TSS 105.1188 है। निर्धारण गुणांक (r2) ज्ञात कीजिए।
(ए) 0.9521
(बी) 0.9065
(सी) 0.8681
(डी) 0.9345
उत्तर: (बी)

56. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।

सूची-I	**सूची द्वितीय**
(ए) विशिष्ट कारक मॉडल	(ए) स्टाफ़न बी. लिंडर
(बी) उत्पाद जीवन चक्र परिकल्पना	(III) रेमंड वर्नोन
(सी) वरीयता समानता परिकल्पना	(I) स्टाफ़न बी. लिंडर
(घ) मूल्य आवर्धन प्रभाव	(II) स्टॉपर सैमुएलसन प्रमेय

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(I)
(बी) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(आई), (डी)-(II)
(सी) (ए)-(III), (बी)-(IV), (सी)-(II), (डी)-(I)
(डी) (ए)-(III), (बी)-(II), (सी)-(आई), (डी)-(IV)
उत्तर: (बी)

57. वर्ष 2021-22 में मोटे अनाज की उपज (किलोग्राम प्रति हेक्टेयर) के अनुमान के संबंध में निम्नलिखित राज्यों को आरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
(क) बिहार
(बी) पंजाब
(ग) तमिलनाडु
(घ) असम

(ई) गुजरात
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (डी), (सी), (ई), (बी), (ए)
(बी) (ई), (डी), (सी), (बी), (ए)
(सी) (डी), (सी), (बी), (ई), (ए)
(डी)), (डी),
उत्तर: (E) (नोट: प्रदान की गई उत्तर कुंजी में 'E' है जो विकल्प AD में नहीं है। यदि आवश्यक हो तो स्पष्टीकरण के लिए कृपया मूल दस्तावेज़ देखें।)

58. GATT के टैरिफ वार्ता के निम्नलिखित दौरों को क्रमिक रूप से व्यवस्थित करें (सबसे पुराना पहला है):
(ए) डिलन राउंड
(बी) टोरक्वे राउंड
(सी) कैनेडी राउंड
(घ) जिनेवा दौर
(ई) टोक्यो राउंड
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (डी), (बी), (ई), (ए), (सी)
(बी) (बी), (डी), (सी), (ए), (ई)
(सी) (डी), (बी), (ए), (सी), (ई)
(डी) (बी), (डी), (ए), (सी), (ई)
उत्तर: (सी)

59. निम्नलिखित पर्यावरण बैठकों को उनके घटित होने के वर्ष के अनुसार व्यवस्थित करें (सबसे पुराना वर्ष पहले)
(ए) पेरिस समझौता (सीओपी 21)
(बी) स्टॉकहोम +50
(ग) पृथ्वी शिखर सम्मेलन
(घ) स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
(ई) रियो +20
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (डी), (सी), (ए), (बी), (ई)
(बी) (डी), (सी), (ई), (ए), (बी)
(सी) (सी), (डी), (ए), (बी), (ई)
(डी) (सी), (डी), (बी), (ए), (ई)
उत्तर: (बी)

60. निम्नलिखित में से कौन सी कोज प्रमेय की विशेषता नहीं है?

(A) हर किसी को सही जानकारी है
(बी) लागत रहित लेनदेन
(सी) उत्पादक लाभ को अधिकतम करता है और उपभोक्ता उपयोगिता को अधिकतम करता है
(डी) धन/आय प्रभाव मौजूद है
उत्तर: (डी)

61. निम्नलिखित नोबेल पुरस्कार विजेताओं को उनके पुरस्कार वर्ष के अनुसार व्यवस्थित करें (सबसे नया वर्ष सबसे नया वर्ष होगा):
(a) सर आर्थर लुईस
(बी) साइमन कुज्नेट
(सी) डगलस सी. नॉर्थ
(d) क्लाउडिया गोल्डिन
(ई) रोनाल्ड कोज़
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(ए) (डी), (ई), (सी), (ए), (बी)
(बी) (डी), (ई), (सी), (बी), (ए)
(सी) (डी), (सी), (ई), (ए), (बी)
(डी) (डी), (सी), (ई), (बी), (ए)
उत्तर: (सी)

62. शब्द 'VIOLENT' के अक्षरों की यादृच्छिक व्यवस्था में, स्वर I, O, E के केवल विषम स्थान पर होने की सम्भावना ज्ञात कीजिए।
(ए) 353
(बी) 354
(सी) 424
(डी) 423
उत्तर: (बी)

63. एक फर्म का उत्पादन फलन q=12−LK1 (L+K) है। श्रम, पूंजी और उत्पादन की कीमतें क्रमशः ₹ 1,4 और 9 हैं। अधिकतम लाभ ज्ञात कीजिए।
(ए) 80
(बी) 45
(सी) 90
(डी) 105
उत्तर: (सी)

UGC-NET ECONOMICS 21-06-2023 HINDI

1. मान लीजिए वस्तु 1 को क्षैतिज रेखा और वस्तु 2 को लंबत: रेखा पर दर्शाया गया है, तो बजट रेखा मे क्या परिवर्तन होगा यदि वस्तु 1 की कीमत दुगुनी और वस्तु 2 की कीमत तिगुनी हो जाए
   (a) बजट रेखा अधिक खड़ी हो जाती है
   (b) बजट रेखा अधिक समतल हो जाती है।
   (c) बजट रेखा लम्बवत हो जाती है
   (d) बजट रेखा मे कोई परिवर्तन नहीं होता है

2. मान लीजिए कि सतत मांग वाला कोई दुलर्भ संसाधन 10 वर्षों में समाप्त हो जाएगा। यदि कोई वैकल्पिक संसाधन $40 की कीमत पर उपलब्ध होगा अं ब्याज दर 10% है तो दुलर्भ संसाधन की आज की कीमत क्या होगी
   (a) $55.50
   (b) $ 35.60
   (c) $24.40
   (d) $ 15.42

3. निम्नलिखित में से कौन- सी विशेषता बाजार ढांचे की नहीं है
   (a) क्रेताओं की संख्या
   (b) विक्रेताओं की संख्या
   (c) प्रवेश की शर्तें
   (d) लंबवत एकीकरण

4. कल्याणकारी अर्थशास्त्र के दूसरे सिद्धांत के मामले में निम्नलिखित में से कौन-सा सही नहीं है.
   (a) यदि उपभोक्ता उत्तम विकल्प प्रदर्शित करते हैं तो प्रत्येक पेरिटो दक्ष आबंटन विशुद्ध विनिमय अर्थव्यवस्था में संभव प्रतिस्पर्धा संतुलन होता है।
   (b) किसी उत्पादन वाली अर्थव्यवस्था में उत्पादन सेट की उत्तलता यह सुनिश्चित करती है कि पैरिटो दक्ष आबंटन को बाजार संतुलन के रुप में प्राप्त किया जा सकता है।
   (c) यह लागू होता है जब पैमाने के अनुसार उत्तरोत्तर प्रतिफल प्राप्त हो
   (d) इसका अर्थ- है की बाजार प्रणाली में आबंटन भूमिका और वितरण भूमिका को परस्पर पृथक किया जा सकता है।

5. टैलर नियम क्या बताता है
   (a) आर्थिक गतिविधि की प्रतिक्रिया में मौद्रिक प्रधिकरण ब्याज दर कैसे निर्धारित करता है
   (b) मौद्रिक प्रधिकरण बैंक दर कैसे कायम रखता है
   (c) मौद्रिक प्रधिकरण विनिमय दर कैसे कायम रखता है।
   (d) कर आधार में वृद्धि करने के लिए सरकार कर दर कैसे निर्धारित करती है

6. अर्थव्यवस्था का मौद्रिक आधार क्या है?
   (a) जनता और बैंको द्वारा भंडार के रूप में धारित मुद्रा की राशि
   (b) जनता द्वारा धारित मुद्रा राशि और मांग निक्षेप
   (c) जनता द्वारा धारित मुद्रा राशि और समय निक्षेप
   (d) मुद्रा निक्षेप अनुपात

7. दिए गए आय गुणांक सूत्र में $m=\frac{1}{1-MPC}$, बचत की सीमान्त प्रवृत्ति कम होने पर,
   (a) गुणांक प्रभाव उच्चतर होगा।
   (b) गुणांक प्रभाव निम्नतर होगा।

PROFESSORS ADDA

(c) गुणांक अपरिमित होगा।
(d) गुणांक शून्य होगा।

8. राष्ट्रीय आय समता में Y = C+ I + G, निवेश (I) किसका फलन होगा
(a) वास्तविक आय
(b) नामिक आय
(c) वास्तविक ब्याज दर
(d) नामिक ब्याज दर

9. एल. एम. शेड्यूल के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(a) एल. एम. शेड्यूल दायीं ओर ऊपर की ओर खिसकती है।
(b) यदि धन की मांग की ब्याज लोच सापेक्ष रूप में अधिक (कम) होती है तो एल. एम. शेड्यूल सापेक्ष रूप से समतल (खड़ी) होगी ।
(c) धन की मात्रा में वृद्धि होने पर एल. एम. शेड्यूल दायीं (बायीं ओर नीचे (ऊपर) की ओर खिसकती है।
(d) एल. एम. शेड्यूल वह शेड्यूल होते है जिसमें निवेश के मान और ब्याज दर का संयोजन होना है जिसकी वजह से मुद्रा बाजार में संतुलन पैदा होता है।

10. एक व्यापारी के 20 खातों में 6 बकाया और 14 गैर- बकाया खाते हैं। एक लेखापरीक्षक औचक रूप से 5 खातों की जाँच के लिए चयन करता है। इसकी क्या प्रायिकता है कि लेखापरीक्षक को 2 बकाया खाते ही प्राप्त हों?
(a) 0.2562
(b) 0.3
(c) 0.3087
(d) 0.4526

11. किसी कंपनी में 140 कर्मचारी हैं। जिनमें से 30 सुपरवाइजर हैं। 80 कर्मचारी विवाहित हैं और 20% विवाहित कर्मचारी सुपरवाइजर हैं। यदि कंपनी के एक कर्मचारी का औचक रूप से चयन है तो क्या प्रायिकता है कि कर्मचारी विवाहित हो और सुपरवाइजर हो?
(a) 0.1531
(b) 0.1253
(c) 0.0923
(d) 0.1143

12. होसमैन का विनिर्देशन त्रुटि परीक्षण का प्रयोग किसका परीक्षण करने के लिए किया जाता है?
(a) बहिर्जात चर त्रुटि पद से सह संबंधित है।
(b) अंतर्जात चर त्रुटि पद से सह संबंधित है।
(c) दोनों वहिर्जात चर त्रुटि पद से सह संबंधित है, और अन्तर्जात चार त्रुटि पद से सह संबंधित है।
(d) एस. ई. एस. का अनुमान लगाने के लिए ओ. एल. एस. तरीका उपयुक्त है।

13. रैनडम वॉक बिना ड्रिफ्ट के में
(a) प्रघात का प्रभाव पूरी समयावधि में बना रहता है।
(b) प्रघात का प्रभाव समयांतर में समाप्त हो जाता है।
(c) प्रघात का प्रभाव तत्काल समाप्त हो जाता है।
(d) पिछले प्रघात का कोई प्रभाव नहीं होता है।

14. F-test के सांखिकीय के लिए वैकल्पिक फार्मूले नीचे दिए गए हैं। हम $Y = \beta_0 + \beta_2 X_1 + \beta_2 X_2 + U.$ में 5% महत्त्व स्तर पर X3 के उत्तरोत्तर योगदान सांखिकीय महत्त्व की जाँच करना चाहते हैं। इसमें कौन-सा उपयुक्त नहीं है? जहां RSS का मतलब रेजिडुअल सम ऑफ़ स्क्वायर है और ESS का मतलब एक्सप्लैंड सम ऑफ़ स्क्वायर है।

PROFESSORS ADDA

98. प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में सतत वृद्धि कर रहे देशों में ए एन एस में ह्रास की व्याख्या निम्नलिखित में कौन करता है?
(a) किसी अर्थव्यवस्था में निजी निवेश का बढ़ता समानुपात
(b) अप क्षयित परिसंपत्तियाँ जो मानव तथा भौतिक पूँजी में पर्याप्त निवेश द्वारा अनुचित्रित न हो
(c) सकल बचत दरों में वृद्धि
(d) नवीकरणीय प्राकृतिक पूँजी के उत्पादन में वृद्धि

99. निम्नलिखित में कौन ए एन एस की कमियों को प्रतिबिंबित करता है?
(a) यह पूँजी के विभिन्न रूपों के बीच पूरक की अनुमति देता है।
(b) यह प्रति व्यक्ति संपदा का एक व्यापक संकेतक नहीं है।
(c) यह किसी अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद के स्तर से प्रभावित होता है।
(d) उपर्युक्त सभी

100. एएनएस की अवधारण को किसके लिए सर्वोत्तम रूप में प्रयोग करना चाहिए
(a) पारिस्थितिकीय इष्टतम सतत मापन का मार्गदर्शन
(b) असतता के संकेतक के रूप में प्रयोग
(c) आर्थिक प्रगति के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिस्थापन
(d) उपर्युक्त में कोई भी नहीं

PROFESSORS ADDA

ANSWERS

1	B	21	B	41	A	61	C	81	B
2	D	22	B	42	D	62	D	82	B
3	D	23	C	43	C	63	C	83	A
4	C	24	C	44	D	64	D	84	B
5	A	25	C	45	C	65	D	85	C
6	A	26	B	46	D	66	D	86	A
7	A	27	A	47	D	67	A	87	A
8	C	28	D	48	A	68	D	88	C
9	D	29	A	49	A	69	B	89	D
10	C	30	D	50	A	70	D	90	A
11	D	31	D	51	D	71	C	91	D
12	B	32	A	52	A	72	B	92	C
13	A	33	C	53	C	73	A	93	B
14	C	34	D	54	D	74	C	94	D
15	B	35	D	55	C	75	C	95	A
16	D	36	C	56	D	76	B	96	C
17	C	37	A	57	D	77	D	97	D
18	A	38	B	58	D	78	A	98	B
19	C	39	A	59	B	79	*	99	D
20	A	40	B	60	B	80	B	100	B

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अर्थशास्त्र PYQ/MCQ प्रश्न पत्र विश्लेषण और ट्रेंड पैटर्न (PDF 2016 – JAN 2025 पर आधारित)

1. प्रश्न प्रारूपों में विविधता:

- **बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):** सभी प्रश्न इसी प्रारूप में हैं। इनमें सीधे तथ्यात्मक, अवधारणा-आधारित, अनुप्रयोग-आधारित और न्यूमेरिकल प्रश्न शामिल हैं।

- **मिलान आधारित प्रश्न (Match List):** अर्थशास्त्र में यह प्रारूप बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें सिद्धांतों, अर्थशास्त्रियों, अवधारणाओं, मॉडलों, समितियों, योजनाओं, सूचकांकों आदि का मिलान करने वाले प्रश्न बहुतायत में पूछे जाते हैं।

- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason - A/R):** ये प्रश्न आर्थिक सिद्धांतों और अवधारणाओं की गहरी समझ और उनके बीच तार्किक संबंध स्थापित करने की क्षमता का परीक्षण करते हैं। व्यष्टि, समष्टि, अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, लोक वित्त और विकास अर्थशास्त्र में ये विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

- **कथन आधारित प्रश्न (Statement-based):** कई कथन (सही/गलत) दिए जाते हैं और सही/गलत कथनों के संयोजन को चुनने के लिए कहा जाता है। यह विषय की विस्तृत जानकारी और सूक्ष्म अंतरों को समझने की क्षमता की जांच करता है।

- **कालानुक्रमिक/अनुक्रमिक क्रम (Chronological/Sequential Order):** घटनाओं, सिद्धांतों के प्रतिपादन, योजनाओं के lancement, समितियों की स्थापना, पुस्तकों के प्रकाशन या आर्थिक प्रक्रियाओं के चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करने वाले प्रश्न पूछे जाते हैं।

आगामी UGC NET / JRF परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

- **न्यूमेरिकल/गणितीय प्रश्न:** व्यष्टि अर्थशास्त्र (उपभोक्ता/उत्पादक संतुलन, लोच, लागत, राजस्व), समष्टि

PROFESSORS ADDA

अर्थशास्त्र (गुणक, राष्ट्रीय आय गणना), गणितीय अर्थशास्त्र (अवकलन, समाकलन, ऑप्टिमाइजेशन), सांख्यिकी (प्रायिकता, सूचकांक) और अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र (प्रभावी संरक्षण दर) से संबंधित गणनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

- **परिच्छेद/गद्यांश आधारित प्रश्न (Passage-based):** दो गद्यांश (प्रत्येक पर 5 प्रश्न) दिए जाते हैं, जो अक्सर समसामयिक आर्थिक मुद्दों, रिपोर्टों (जैसे आर्थिक सर्वेक्षण, नोबेल पुरस्कार संदर्भ) या विशिष्ट आर्थिक अवधारणाओं पर आधारित होते हैं। ये समझ, विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने की क्षमता का परीक्षण करते हैं।

2. वैचारिक/सैद्धांतिक बनाम अनुप्रयुक्त/तथ्यात्मक प्रश्नों का संतुलन:

- प्रश्नपत्रों में सैद्धांतिक स्पष्टता (Theoretical Clarity) और अनुप्रयुक्त ज्ञान (Applied Knowledge) का मिश्रण होता है।
- व्यष्टि, समष्टि, अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, लोक अर्थशास्त्र, मुद्रा और बैंकिंग, और विकास अर्थशास्त्र में सिद्धांतों, मॉडलों और अवधारणाओं की गहरी समझ आवश्यक है।
- सांख्यिकी, अर्थमिति और गणितीय अर्थशास्त्र में सूत्रों, तकनीकों और उनके अनुप्रयोग पर जोर दिया जाता है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था इकाई में नवीनतम आंकड़ों, योजनाओं, नीतियों, समितियों की सिफारिशों और समसामयिक मुद्दों से संबंधित तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

3. कठिनाई स्तर:

- प्रश्नों का स्तर मध्यम से कठिन है, जिसमें विश्लेषणात्मक और अनुप्रयोग कौशल की आवश्यकता होती है। न्यूमेरिकल प्रश्नों और अर्थमिति/सांख्यिकी आधारित प्रश्नों के लिए अच्छी प्रैक्टिस जरूरी है। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए समसामयिक जानकारी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

UGC NET अर्थशास्त्र की परीक्षा में सफलता के लिए पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों पर मजबूत पकड़, अवधारणाओं की स्पष्ट समझ, सिद्धांतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन और न्यूमेरिकल तथा सांख्यिकीय तकनीकों के अनुप्रयोग का ज्ञान आवश्यक है। भारतीय अर्थव्यवस्था के नवीनतम आंकड़ों और नीतियों से अवगत रहना भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, विशेष रूप से मिलान, अभिकथन-कारण, कथन-आधारित और न्यूमेरिकल प्रश्नों का अभ्यास करना फायदेमंद है।

PROFESSORS ADDA

आगामी **UGC NET / JRF** परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

प्रमुख फोकस क्षेत्र (Recurring Themes):

- **व्यष्टि अर्थशास्त्र:** उपभोक्ता व्यवहार (उदासीनता वक्र, उपयोगिता विश्लेषण), उत्पादन फलन (CES, कॉब-डगलस), लागत और राजस्व वक्र, बाजार संरचनाएं (पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता, अल्पाधिकार मॉडल - कूर्नो, बर्ट्रेंड, स्टैकेलबर्ग, स्वीजी), कल्याण अर्थशास्त्र (पैरेटो इष्टतमता, क्षतिपूरक सिद्धांत)।

- **समष्टि अर्थशास्त्र:** राष्ट्रीय आय लेखांकन, कीनेसियन मॉडल (उपभोग फलन, गुणक - कर, व्यय, संतुलित बजट), IS-LM मॉडल, मुद्रास्फीति (फिलिप्स वक्र), व्यापार चक्र, तर्कसंगत प्रत्याशाएं, मुद्रा की मांग (कीन्स, बॉमोल-टोबिन, फ्रीडमैन)।

- **सांख्यिकी और अर्थमिति:** प्रायिकता सिद्धांत, परिकल्पना परीक्षण (t-test, F-test, chi-square), प्रतिगमन विश्लेषण (OLS गुणधर्म, समस्याएं - बहुसंरेखता, विषम विचालिता, स्वसहसंबंध; डमी चर, लॉगिट/प्रोबिट मॉडल), समय श्रृंखला विश्लेषण (स्थिरता परीक्षण - ADF, KPSS; सहएकीकरण)।

- **गणितीय अर्थशास्त्र:** अवकलन और समाकलन का अनुप्रयोग, अनुकूलन (Optimization), आव्यूह (Matrix) बीजगणित (रैंक), इनपुट-आउटपुट विश्लेषण।

- **अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र:** व्यापार सिद्धांत (एडम स्मिथ, रिकार्डो, हेक्शर-ओहलिन, लियोनटिफ विरोधाभास, उत्पाद चक्र सिद्धांत), व्यापार की शर्तें, टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाएं (प्रभावी संरक्षण दर), भुगतान संतुलन, विनिमय दर निर्धारण, अंतर्राष्ट्रीय संगठन (IMF, विश्व बैंक, WTO, ADB)।

- **लोक अर्थशास्त्र:** सार्वजनिक वस्तुएं, बाह्यताएं, कर प्रणाली (सिद्धांत, करापात, कर गुणक), सार्वजनिक व्यय (वैगनर, पीकॉक-वाइजमैन), सार्वजनिक ऋण, राजकोषीय नीति, घाटे की अवधारणाएं (राजस्व, राजकोषीय, प्राथमिक), वित्त आयोग।

- **मुद्रा और बैंकिंग:** मुद्रा आपूर्ति के माप (M1, M2, M3, M4), मुद्रा गुणक, मौद्रिक नीति (उपकरण, उद्देश्य, प्रभावशीलता, मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण), बैंकिंग क्षेत्र सुधार (नरसिम्हम समिति), मुद्रा बाजार और पूंजी बाजार

PROFESSORS ADDA

के उपकरण (ट्रेजरी बिल)।

- **संवृद्धि और विकास:** आर्थिक विकास के सिद्धांत (एडम स्मिथ, मार्क्स, शुम्पीटर, हैरोड-डोमर, सोलो, लुईस, रोस्टो, रोदान, नर्क्से, लेबेनस्टीन, अंतर्जात विकास), गरीबी और असमानता (मापन - गिनी गुणांक, लॉरेंज वक्र, कुजनेट वक्र, HDI, MPI), लागत-लाभ विश्लेषण।

- **पर्यावरण अर्थशास्त्र और जनसांख्यिकी:** बाह्यताएं, सार्वजनिक वस्तुएं, पर्यावरण मूल्यांकन विधियाँ, क्योटो प्रोटोकॉल, जनसंख्या सिद्धांत (माल्थस), जनसांख्यिकीय संक्रमण, जीवन सारणी, प्रवासन।

- **भारतीय अर्थव्यवस्था:** राष्ट्रीय आय के आंकड़े, कृषि (IADP), उद्योग, विदेशी व्यापार नीति, राजकोषीय और मौद्रिक नीति के हालिया रुझान, गरीबी और बेरोजगारी के आंकड़े (CMIE, NITI Aayog), प्रमुख योजनाएं (PMJDY, उज्ज्वला, आयुष्मान भारत, गतिशक्ति, जल जीवन मिशन आदि), आर्थिक सर्वेक्षण और बजट के प्रमुख बिंदु, G-20 अध्यक्षता।

अंतिम सफलता के लिए प्रोफेसर्स अड्डा का संपूर्ण अपडेटेड अध्ययन सामग्री पैकेज खरीदें।
हम साल में 2 बार NET Exam से पहले अप डेट करते है.

प्रिय स्टूडेंट्स हमारी अमृत नोट्स पुस्तिका छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है।
आप खुद से, कहीं से,कुछ भी पढ़ें, लेकिन एक बार हमारे स्टडी मटेरियल से जरूर पढ़ें ,
आपको बहुत फायदा होगा। गुणवत्तापूर्ण संपूर्ण मार्ग दर्शन देना हमारी प्राथमिकता है.
Contact 7690022111 / 9216228788

इकाई I: व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics)

- **विस्तृत अवधारणाएँ:**
  - **उपभोक्ता व्यवहार सिद्धांत:** उपयोगिता विश्लेषण (कार्डिनल, ऑर्डिनल), उदासीनता वक्र (विशेषताएं, ढलान/MRS, पूर्ण स्थानापन्न और पूरक वस्तुओं के लिए आकार), बजट रेखा (कीमत और आय परिवर्तन का प्रभाव, ढलान), उपभोक्ता संतुलन (MRS=Px/Py), कीमत प्रभाव, आय प्रभाव और प्रतिस्थापन प्रभाव (सामान्य, निम्नस्तरीय और गिफेन वस्तुओं के लिए, स्लट्स्की समीकरण), मांग की लोच (कीमत, आय, तिरछी), उपभोक्ता अतिरेक।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

अर्थशास्त्र वनलाइनर

1. प्रश्न: एडम स्मिथ ने किस वर्ष अपने युगांतरी कार्य, एन इन्क्वायरी इनटू द नेचर एंड कॉजेज ऑफ द वेल्थ ऑफ नेशंस को प्रकाशित किया, जिसने शास्त्रीय अर्थशास्त्र की नींव रखी?
   उत्तर: 1776.
2. प्रश्न: 'तुलनात्मक लाभ' का सिद्धांत, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत की आधारशिला है, सबसे पहले किस अर्थशास्त्री द्वारा उनकी 1817 की पुस्तक ऑन द प्रिंसिपल्स ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी एंड टैक्सेशन में पूरी तरह से विकसित किया गया था?
   उत्तर: डेविड रिकार्डो।
3. प्रश्न: किस अर्थशास्त्री ने अपनी 1936 की पुस्तक द जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी में शास्त्रीय अर्थशास्त्र को चुनौती दी और 'समग्र मांग' की अवधारणा पेश की?
   उत्तर: जॉन मेनार्ड कीन्स।
4. प्रश्न: 'फिलिप्स वक्र' की अवधारणा, जो मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच एक व्युत्क्रम संबंध का सुझाव देती है, किस अर्थशास्त्री के नाम पर है?
   उत्तर: ए.डब्ल्यू. फिलिप्स।
5. प्रश्न: कल्याणकारी अर्थशास्त्र में 'क्षमता दृष्टिकोण' किसने पेश किया, जिसमें तर्क दिया गया कि विकास को वास्तविक स्वतंत्रता के विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए?
   उत्तर: अमर्त्य सेन।
6. प्रश्न: IS-LM मॉडल, जो एक प्रमुख समष्टि-अर्थशास्त्र उपकरण है और निवेश-बचत तथा तरलता वरीयता-मुद्रा आपूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है, पहली बार 1937 में किस अर्थशास्त्री द्वारा पेश किया गया था?
   उत्तर: जॉन हिक्स।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

7. प्रश्न: शिकागो स्कूल के एक नेता, कौन से अर्थशास्त्री 'मौद्रिकवाद' के सिद्धांत के साथ सबसे निकटता से जुड़े हुए हैं?

उत्तर: मिल्टन फ्रीडमैन।

8. प्रश्न: 'कुज़नेट्स वक्र', जो इस परिकल्पना को रेखांकन करता है कि आर्थिक असमानता विकास के साथ पहले बढ़ती है और फिर घटती है, किसके नाम पर है?

उत्तर: साइमन कुज़नेट्स।

9. प्रश्न: बाजार का नियम, जिसे प्रसिद्ध रूप से "आपूर्ति अपनी मांग स्वयं बनाती है" के रूप में सारांशित किया गया है, का श्रेय किस फ्रांसीसी अर्थशास्त्री को दिया जाता है?

उत्तर: जीन-बैप्टिस्ट से।

10. प्रश्न: गेम थ्योरी में, एक स्थिर स्थिति के लिए क्या शब्द है जहां कोई भी खिलाड़ी एकतरफा अपनी रणनीति बदलकर लाभ नहीं उठा सकता, यह अवधारणा जॉन नैश द्वारा विकसित की गई थी?

उत्तर: नैश संतुलन।

11. प्रश्न: 'तरलता जाल' एक ऐसी स्थिति है, जिसका वर्णन कीन्स ने किया है, जहां मौद्रिक नीति अप्रभावी हो जाती है क्योंकि सांकेतिक ब्याज दर किस स्तर पर या उसके पास होती है?

उत्तर: शून्य।

12. प्रश्न: आर्थिक विकास का 'हैरॉड-डोमर मॉडल' किस आर्थिक गतिविधि की दोहरी भूमिका पर जोर देता है?

उत्तर: निवेश।

13. प्रश्न: मानव विकास सूचकांक (HDI) 1990 में UNDP के लिए किस पाकिस्तानी अर्थशास्त्री द्वारा तैयार किया गया था?

उत्तर: महबूब उल हक।

14. प्रश्न: 'रचनात्मक विनाश' की अवधारणा, जो बताती है कि कैसे नए नवाचार पुराने उद्योगों की जगह लेते हैं, किस अर्थशास्त्री ने अपनी पुस्तक कैपिटलिज्म,

सोशलिज्म एंड डेमोक्रेसी (1942) में सामने रखी थी?

उत्तर: जोसेफ शुम्पीटर।

15. प्रश्न: चार्ल्स कॉब और पॉल डगलस द्वारा विकसित उस उत्पादन फलन का क्या नाम है, जिसका उपयोग इनपुट और आउटपुट के बीच तकनीकी संबंध का प्रतिनिधित्व करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है?

उत्तर: कॉब-डगलस उत्पादन फलन।

16. प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 'हेक्शर-ओहलिन मॉडल' यह मानता है कि देश उन उत्पादों का निर्यात करते हैं जो उनके प्रचुर और सस्ते उत्पादन के कारकों का उपयोग करते हैं?

उत्तर: उत्पादन।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

17. प्रश्न: अपने 1798 के काम एन एसे ऑन द प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन में, किस विचारक ने तर्क दिया कि जनसंख्या वृद्धि खाद्य आपूर्ति से आगे निकल जाएगी?

उत्तर: थॉमस रॉबर्ट माल्थस।

18. प्रश्न: 'दिखावटी उपभोग' की अवधारणा, जहां धन प्रदर्शित करने के लिए सामान खरीदा जाता है, किस अर्थशास्त्री ने अपनी 1899 की पुस्तक द थ्योरी ऑफ द लीजर क्लास में पेश की थी?

उत्तर: थोरस्टीन वेबलन।

19. प्रश्न: कौन सा सांख्यिकीय माप, जिसे लॉरेंज वक्र द्वारा रेखांकन के रूप में दर्शाया जाता है, का उपयोग किसी राष्ट्र के भीतर आय या धन असमानता को मापने के लिए किया जाता है?

उत्तर: गिनी गुणांक।

20. प्रश्न: 'कोस प्रमेय', जो बाह्यताओं की उपस्थिति में आर्थिक दक्षता से संबंधित है, किस नोबेल पुरस्कार विजेता के नाम पर है?

उत्तर: रोनाल्ड कोस।

21. प्रश्न: भारत में, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) सहित प्रमुख आर्थिक सुधार किस वर्ष शुरू किए गए थे?

उत्तर: 1991.

22. प्रश्न: संसाधन आवंटन की एक ऐसी स्थिति जहां किसी एक व्यक्ति को बेहतर बनाए बिना किसी भी एक व्यक्ति को बेहतर बनाना असंभव है, किस नाम से जानी जाती है?

उत्तर: पेरेटो इष्टतमता (विल्फ्रेडो पेरेटो के नाम पर)।

23. प्रश्न: ब्रेटन वुड्स सम्मेलन, जिसके कारण IMF और विश्व बैंक का निर्माण हुआ, किस वर्ष आयोजित किया गया था?

उत्तर: 1944.

24. प्रश्न: लाफ़र वक्र, कर की दरों और किसके परिणामी स्तरों के बीच एक सैद्धांतिक संबंध को दर्शाता है?

उत्तर: सरकारी कर राजस्व।

25. प्रश्न: भारतीय योजना में, 'माहलनोबिस मॉडल', जिसने भारी उद्योगों पर जोर दिया, किस पंचवर्षीय योजना के दौरान अपनाया गया था?

उत्तर: दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61)।

26. प्रश्न: वह आर्थिक विकास मॉडल जिसमें तकनीकी प्रगति को एक बहिर्जात कारक के रूप में शामिल किया गया था, 1950 के दशक में किस अर्थशास्त्री द्वारा विकसित किया गया था?

उत्तर: रॉबर्ट सोलो।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

27. प्रश्न: 'तर्कसंगत अपेक्षाओं' की अवधारणा, जो मानती है कि लोग सभी उपलब्ध सूचनाओं और पिछले अनुभवों के आधार पर चुनाव करते हैं, किस अर्थशास्त्री के साथ सबसे अधिक जुड़ी हुई है?

उत्तर: रॉबर्ट लुकास जूनियर।

28. प्रश्न: 1991 में नियुक्त किस समिति ने भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों के लिए व्यापक सिफारिशें कीं?

उत्तर: नरसिम्हम समिति।

29. प्रश्न: वह नियम जो बताता है कि, बाकी सब समान रहने पर, जैसे-जैसे उपभोग बढ़ता है, प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त सीमांत उपयोगिता घटती जाती है, किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर: ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम।

30. प्रश्न: भारत के योजना आयोग को 1 जनवरी, 2015 को किस संस्थान द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था?

उत्तर: नीति आयोग।

31. प्रश्न: किसने अपनी पुस्तक पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया में 'धन की निकासी' सिद्धांत को सामने रखा?

उत्तर: दादाभाई नौरोजी।

32. प्रश्न: 'स्थायी आय परिकल्पना' का सिद्धांत, जो बताता है कि उपभोग दीर्घकालिक अपेक्षित आय पर निर्भर करता है, किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: मिल्टन फ्रीडमैन।

33. प्रश्न: 1857 में अर्न्स्ट एंजेल द्वारा देखा गया कौन सा आर्थिक नियम कहता है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, भोजन पर खर्च की जाने वाली आय का अनुपात घटता जाता है?

उत्तर: एंजेल का नियम।

34. प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में 'असंभव त्रिमूर्ति' यह बताती है कि एक निश्चित विदेशी विनिमय दर, मुक्त पूंजी आंदोलन, और क्या एक ही समय में होना

असंभव है?

उत्तर: एक स्वतंत्र मौद्रिक नीति।

35. प्रश्न: उन वस्तुओं के लिए क्या शब्द है जिनकी मांग कीमत बढ़ने पर बढ़ती है, जो मांग के नियम की अवहेलना करती है, जिसे सबसे पहले सर रॉबर्ट गिफेन ने पहचाना था?

उत्तर: गिफेन वस्तुएं।

36. प्रश्न: 1953 में वासिली लियोनटिफ द्वारा पहचाना गया 'लियोनटिफ विरोधाभास', किस अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मॉडल की भविष्यवाणियों का खंडन करता है?

उत्तर: हेक्शर-ओहलिन मॉडल।

37. प्रश्न: 'गरीबी का दुष्चक्र' की अवधारणा किस अर्थशास्त्री ने अपनी 1953 की पुस्तक प्रॉब्लम्स ऑफ कैपिटल फॉर्मेशन इन अंडरडेवलप्ड कंट्रीज में सामने रखी थी?

उत्तर: रगनार नर्क्से।

38. प्रश्न: भारत में, राजकोषीय अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम किस वर्ष अधिनियमित किया गया था?

उत्तर: 2003.

39. प्रश्न: 'श्रम की असीमित आपूर्ति' की अवधारणा पर आधारित आर्थिक विकास का दो-क्षेत्रीय मॉडल किस अर्थशास्त्री द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: डब्ल्यू. आर्थर लुईस।

40. प्रश्न: 'एरो का असंभवता प्रमेय', जो सामाजिक पसंद सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण खोज है, किस अर्थशास्त्री द्वारा प्रदर्शित किया गया था?

उत्तर: केनेथ एरो।

41. प्रश्न: 'मुद्रास्फीतिजनित मंदी' शब्द, जो उच्च मुद्रास्फीति और उच्च बेरोजगारी की स्थिति का वर्णन करता है, 1965 में ब्रिटेन में किस राजनेता द्वारा लोकप्रिय किया गया था?

उत्तर: इयान मैकलॉड।

42. प्रश्न: वस्तु एवं सेवा कर (GST) पूरे भारत में किस तारीख से लागू किया गया था?

उत्तर: 1 जुलाई, 2017.

43. प्रश्न: 'अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धांत', जो सार्वजनिक व्यय और कराधान के इष्टतम स्तर को निर्धारित करता है, मुख्य रूप से किन दो अर्थशास्त्रियों से जुड़ा है?

उत्तर: ह्यू डाल्टन और रिचर्ड मसग्रेव।

44. प्रश्न: व्यापार संरक्षणवाद के लिए 'शिशु उद्योग तर्क' किस 19वीं सदी के अर्थशास्त्री के साथ सबसे प्रसिद्ध रूप से जुड़ा हुआ है?

उत्तर: फ्रेडरिक लिस्ट।

45. प्रश्न: मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध को समझने में एक प्रमुख अवधारणा 'NAIRU' का पूर्ण रूप क्या है?

उत्तर: नॉन-एक्सीलरेटिंग इन्फ्लेशन रेट ऑफ अनएम्प्लॉयमेंट (बेरोजगारी की गैर-त्वरित मुद्रास्फीति दर)।

46. प्रश्न: 'अवसर लागत' की अवधारणा, यानी त्यागे गए अगले सर्वोत्तम विकल्प का मूल्य, सबसे पहले किस अर्थशास्त्री द्वारा पूरी तरह से विकसित किया गया था?

उत्तर: फ्रेडरिक वॉन विज़र।

47. प्रश्न: 'सार्वजनिक पसंद सिद्धांत', जो राजनीतिक निर्णय लेने पर आर्थिक विश्लेषण लागू करता है, किन दो अर्थशास्त्रियों द्वारा शुरू किया गया था?

उत्तर: जेम्स एम. बुकानन और गॉर्डन टुलॉक।

48. प्रश्न: शेयर बाजार की कीमतों पर लागू 'यादृच्छिक चाल परिकल्पना' यह बताती है कि भविष्य में कीमतों में होने वाले बदलाव क्या हैं?

उत्तर: अप्रत्याशित (पिछले परिवर्तनों से स्वतंत्र)।

49. प्रश्न: भारत सरकार द्वारा 2007 में वित्तीय क्षेत्र में सुधारों पर विचार करने के लिए किस समिति का गठन किया गया था?

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

उत्तर: रघुराम राजन समिति।

50. प्रश्न: भारत में औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-IW) की गणना का आधार वर्ष 2020 में किस वर्ष में अद्यतन किया गया था?

उत्तर: 2016.

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books** – वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula"

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print
📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

अर्थशास्त्र विचारक टूल किट SAMPLE

1. एडम स्मिथ (1723-1790)

1 परिचय

- **पहचान** : एक प्रमुख स्कॉटिश अर्थशास्त्री और नैतिक दार्शनिक, जिन्हें व्यापक रूप से **आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है**।
- **बौद्धिक संदर्भ** : वह स्कॉटिश ज्ञानोदय में एक अग्रणी व्यक्ति थे, जिसमें तर्क और अनुभवजन्य अध्ययन पर जोर दिया गया था।
- **शैक्षणिक कैरियर** : ग्लासगो और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के बाद, वे ग्लासगो में नैतिक दर्शन के प्रोफेसर बने।
- **दार्शनिक आधार** : नैतिकता पर उनके कार्य, नैतिक भावनाओं का सिद्धांत, ने मानवीय सहानुभूति की खोज की और उनके बाद के आर्थिक विचारों के लिए नैतिक ढांचा प्रदान किया।
- **विरासत** : उनकी महान कृति, द वेल्थ ऑफ नेशंस ने अर्थशास्त्र को एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रभावी रूप से स्थापित किया तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्र और मुक्त बाजार पूंजीवाद के लिए बौद्धिक खाका प्रदान किया।

2. प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

संकल्पना / सिद्धांत	सूक्ष्मअर्थशास्त्र में विवरण / महत्व
अदृश्य हाथ	एक मुख्य सूक्ष्म आर्थिक अवधारणा जो यह सुझाव देती है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए अनजाने में समाज की भलाई को बढ़ावा देते हैं। यह बाज़ार की स्व-विनियमन प्रकृति का वर्णन करता है, जहाँ प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ संसाधनों के कुशल आवंटन की ओर ले जाते हैं।
श्रम विभाजन	स्मिथ ने तर्क दिया कि कार्यों और भूमिकाओं को विशिष्ट बनाने से (जैसे, पिन फैक्ट्री में) उत्पादकता में भारी वृद्धि होती है। यह फर्म और उत्पादन दक्षता के सिद्धांत में एक आधारभूत अवधारणा है।
मूल्य का सिद्धांत	उन्होंने "वॉटर-डायमंड पैराडॉक्स" (मूल्य का विरोधाभास) पेश किया, जिसमें 'उपयोग में मूल्य' और 'विनिमय में मूल्य' के बीच अंतर किया गया। उन्होंने मूल्य का श्रम सिद्धांत प्रस्तावित किया, जहां किसी वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम की मात्रा से निर्धारित होता है।
पूर्ण लाभ	व्यापार में एक आधारभूत सिद्धांत, जो कहता है कि किसी देश को उन वस्तुओं में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए और उनका निर्यात करना

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

	चाहिए जिन्हें वह अन्य देशों की तुलना में अधिक कुशलता से (कम संसाधनों का उपयोग करके) उत्पादित कर सकता है। यह मुक्त व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण सूक्ष्म आर्थिक तर्क है।
अहस्तक्षेप	आर्थिक मामलों में न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप की वकालत की। उनका मानना था कि बाज़ारों को अगर अपने हाल पर छोड़ दिया जाए तो वे समाज के लिए सबसे कुशल और वांछनीय परिणाम उत्पन्न करेंगे।

3. प्रमुख पुस्तकें/प्रकाशन

- **नैतिक भावनाओं का सिद्धांत (1759) : यह उनका पहला प्रमुख कार्य था, जिसमें सहानुभूति और मानव** व्यवहार जैसी अवधारणाओं की खोज करके उनके बाद के आर्थिक सिद्धांतों के लिए दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आधार तैयार किया गया।
- **राष्ट्रों की संपत्ति की प्रकृति और कारणों की जांच (1776)** : अर्थशास्त्र का पहला आधुनिक कार्य माना जाता है, इसमें श्रम विभाजन और कीमतों से लेकर बाज़ार और नीति तक के विषयों को व्यवस्थित रूप से शामिल किया गया है। यह शास्त्रीय अर्थशास्त्र के लिए एक आधारभूत पाठ है।

4. उल्लेखनीय तथ्य

- **"आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक"** या **"पूंजीवाद का जनक"** माना जाता है।
- आर्थिक चिंतन के **शास्त्रीय स्कूल** की शुरुआत का प्रतीक है।
- द वेल्थ ऑफ नेशंस का प्रकाशन अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा के वर्ष ही हुआ था, और दोनों ही दस्तावेजों में स्वतंत्रता और अत्यधिक नियंत्रण से मुक्ति के विषय समान हैं।

2. अल्फ्रेड मार्शल (1842-1924)

1 परिचय

- **पहचान** : एक अंग्रेज अर्थशास्त्री जो 20वीं सदी के अंत में ब्रिटिश अर्थशास्त्र में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे।
- **अकादमिक पावरहाउस** : कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में, उन्होंने अर्थशास्त्र के प्रभावशाली **"कैम्ब्रिज स्कूल" की स्थापना की।**
- **महान संश्लेषक** : उनकी प्राथमिक उपलब्धि शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों के सिद्धांतों को सीमांतवादी क्रांति की नई अवधारणाओं के साथ संश्लेषित करना था, जिससे नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र की नींव तैयार हुई।
- **कार्यप्रणाली** : गणित की पृष्ठभूमि के साथ, उन्होंने इस विषय में विश्लेषणात्मक कठोरता का एक नया स्तर लाया।

- **विरासत : उन्होंने आपूर्ति और मांग विश्लेषण** (" मार्शलियन क्रॉस") के उपकरण विकसित और लोकप्रिय बनाए , जो आज सूक्ष्मअर्थशास्त्र शिक्षा की आधारशिला बने हुए हैं।

2. प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

संकल्पना / सिद्धांत	सूक्ष्मअर्थशास्त्र में विवरण / महत्व
मांग और आपूर्ति मॉडल	उन्हें उपयोगिता और उत्पादन की लागत पर पिछले विचारों को परिचित **मांग और आपूर्ति आरेख** (" मार्शलियन क्रॉस") में संश्लेषित करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने दिखाया कि कैसे मांग वक्र (सीमांत उपयोगिता का प्रतिनिधित्व करता है) और आपूर्ति वक्र (सीमांत लागत का प्रतिनिधित्व करता है) की परस्पर क्रिया संतुलन मूल्य निर्धारित करती है।
मांग की कीमत लोच	मार्शल ने मूल्य लोच की अवधारणा को औपचारिक रूप दिया, जो मूल्य में परिवर्तन के लिए मांग की मात्रा की प्रतिक्रियाशीलता को मापता है। यह फर्मों और नीति निर्माताओं के लिए सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में एक मौलिक उपकरण है।
उपभोक्ता अधिशेष	उपभोक्ता किसी वस्तु के लिए जो भुगतान करने को तैयार है और जो वह वास्तव में भुगतान करता है, उसके बीच का अंतर । यह उपभोक्ता कल्याण का एक प्रमुख उपाय है।
अर्ध-किराया	मार्शल ने उत्पादन के एक निश्चित कारक (जैसे पूंजीगत उपकरण) की अल्पकालिक आय का वर्णन करने के लिए एक शब्द गढ़ा। अल्पावधि में, ये आय किराए के समान होती है, क्योंकि आपूर्ति निश्चित होती है।
बाकी सब एक सा होने पर	इस शब्द का आविष्कार न करते हुए भी, उन्होंने अर्थशास्त्र में इसके उपयोग को संस्थागत बना दिया। "अन्य चीजों को समान रखने" की विधि **आंशिक संतुलन विश्लेषण के लिए केंद्रीय है** और व्यक्तिगत आर्थिक चर के अलगाव और अध्ययन की अनुमति देती है।
विश्लेषण में समय अवधि	**बाजार अवधि, लघु अवधि और दीर्घ अवधि** के बीच अंतर पेश किया , जो लागत, उत्पादन और बाजार संतुलन का विश्लेषण करने के लिए एक मानक ढांचा बन गया।

3. प्रमुख पुस्तकें/प्रकाशन

- **अर्थशास्त्र के सिद्धांत (1890)** : यह दशकों तक इंग्लैंड में प्रमुख अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक बनी रही। इसने आपूर्ति और मांग, सीमांत उपयोगिता और उत्पादन की लागत के विचारों को एक सुसंगत पूरे में लाया और यह **नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र की आधारशिला है** ।

4. उल्लेखनीय तथ्य

- **नवशास्त्रीय विचारधारा** के संस्थापकों में से एक माना जाता है , जिसने शास्त्रीय अर्थशास्त्र को " सीमांतवादी क्रांति" के नए विचारों के साथ मिश्रित किया ।

- उन्होंने अर्थशास्त्र को अधिक कठोर और गणितीय बनाने का प्रयास किया, साथ ही इसे आम आदमी के लिए भी सुलभ बनाने का प्रयास किया, तथा जटिल गणितीय व्युत्पत्तियों के लिए फ़ुटनोट्स का उपयोग किया।

3. लियोन वाल्रास (1834-1910)

1 परिचय

- **पहचान : एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री जिन्हें "सीमांतवादी क्रांति"** के तीन संस्थापकों में से एक माना जाता है।
- **अकादमिक गृह** : वह लॉज़ेन विश्वविद्यालय में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर थे, जहां उन्होंने **लॉज़ेन स्कूल** ऑफ इकोनॉमिक थॉट की स्थापना की।
- **महान् विजन : उनके जीवन का कार्य सामान्य संतुलन सिद्धांत** का विकास था - जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का एक व्यापक गणितीय मॉडल था।
- **अद्वितीय दृष्टिकोण** : अपने समकालीनों के विपरीत, उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि कैसे सभी बाजार एक साथ साफ हो सकते हैं, जो कि गणितीय जटिलता का एक बहुत बड़ा कार्य था।
- **विरासत** : यद्यपि उनके अत्यधिक अमूर्त कार्य को उनके जीवनकाल के दौरान बड़े पैमाने पर नजरअंदाज कर दिया गया था, लेकिन इसने 20वीं सदी के गणितीय अर्थशास्त्र और आर्थिक सिद्धांत के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया।

2. प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

संकल्पना / सिद्धांत	सूक्ष्मअर्थशास्त्र में विवरण / महत्व
सामान्य संतुलन सिद्धांत	वाल्रास का सबसे महत्वपूर्ण योगदान। मार्शल के आंशिक संतुलन के विपरीत, जो एक समय में एक बाजार को देखता है, **सामान्य संतुलन** एक अर्थव्यवस्था में सभी बाजारों का एक साथ विश्लेषण करता है। यह साबित करने का प्रयास करता है कि कीमतों का एक सेट मौजूद है जो सभी बाजारों को साफ कर देगा (यानी, आपूर्ति हर एक वस्तु और कारक के लिए मांग के बराबर है)।
टटोलना (टटोलना)	संतुलन तक पहुँचने के लिए एक सैद्धांतिक प्रक्रिया। वाल्रास ने एक "वालरसियन नीलामीकर्ता" की कल्पना की जो कीमतों को बताता है। इन कीमतों के आधार पर, एजेंट अपनी इच्छित माँगों और आपूर्तियों की रिपोर्ट करते हैं। तब कीमत को तब तक समायोजित किया जाता है जब

	तक कि कीमतों का एक वेक्टर नहीं मिल जाता है जहाँ सभी बाजारों में कुल मांग कुल आपूर्ति के बराबर होती है।
सीमांतवादी क्रांति	मेंगर के साथ , वाल्रास सीमांतवादी क्रांति के तीन नेताओं में से एक थे । उन्होंने स्वतंत्र रूप से यह सिद्धांत विकसित किया कि किसी वस्तु का मूल्य उसकी **सीमांत उपयोगिता से निर्धारित होता है** ।
वाल्रास का नियम	एक सिद्धांत जो बताता है कि यदि सामान्य संतुलन प्रणाली में एक को छोड़कर सभी बाजार संतुलन में हैं , तो अंतिम बाजार भी संतुलन में होना चाहिए। यह व्यक्तियों की बजट बाधाओं से अनुसरण करता है, जहां अतिरिक्त मांगों का कुल मूल्य शून्य होना चाहिए।

3. प्रमुख पुस्तकें/प्रकाशन

- **तत्वों अर्थव्यवस्था शुद्ध राजनीति (एलिमेंट्स ऑफ प्योर इकोनॉमिक्स) (1874)** : इस कार्य ने उनके सामान्य संतुलन मॉडल को अत्यधिक गणितीय रूप में प्रस्तुत किया, जो अर्थशास्त्र के गणितीकरण में एक प्रमुख कदम था।

4. उल्लेखनीय तथ्य

- **लौसेन स्कूल** के संस्थापक हैं , जो सामान्य संतुलन और गणितीय तरीकों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है।
- उनका कार्य उस समय के लिए अत्यधिक अमूर्त और गणितीय था तथा जॉन हिक्स और पॉल सैमुएलसन जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा 20वीं शताब्दी तक इसकी पूरी तरह सराहना नहीं की गयी थी।

4. विल्फ्रेडो पेरेटो (1848-1923)

1 परिचय

- **पहचान** : एक प्रभावशाली इतालवी इंजीनियर, समाजशास्त्री और विविध बौद्धिक पृष्ठभूमि वाले अर्थशास्त्री।
- **शैक्षणिक उत्तराधिकार : वह** लियोन के बौद्धिक उत्तराधिकारी थे वाल्रास ने उन्हें लौसाने विश्वविद्यालय में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्यक्ष के रूप में उत्तराधिकारी बनाया और **लौसाने स्कूल की** परंपरा को जारी रखा।
- **कैरियर पथ** : उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में सफल कैरियर से एक अग्रणी सामाजिक वैज्ञानिक बनने तक का सफर तय किया।
- **प्रमुख योगदान : सूक्ष्मअर्थशास्त्र में, उन्होंने कार्डिनल उपयोगिता को ऑर्डिनल उपयोगिता** की अधिक मजबूत अवधारणा के साथ बदलने में मदद करके क्षेत्र को मनोवैज्ञानिक मान्यताओं से दूर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ।
- **कार्यप्रणाली : उन्होंने उदासीनता वक्रों** के उपयोग को परिष्कृत किया , आधुनिक उपभोक्ता सिद्धांत और कल्याण अर्थशास्त्र के लिए विश्लेषणात्मक उपकरण प्रदान किए।

2. प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

संकल्पना / सिद्धांत	सूक्ष्मअर्थशास्त्र में विवरण / महत्व
पेरेटो इष्टतमता / दक्षता	संसाधन आवंटन की ऐसी स्थिति जहां कम से कम एक व्यक्ति की स्थिति खराब किए बिना किसी एक व्यक्ति की स्थिति को बेहतर बनाना असंभव है।[1] यह कल्याणकारी अर्थशास्त्र में दक्षता की मानक परिभाषा बन गई और बाजार परिणामों और सार्वजनिक नीतियों के मूल्यांकन के लिए एक बेंचमार्क बन गई।
पेरेटो सुधार	संसाधन आवंटन में ऐसा बदलाव जो किसी को भी बदतर बनाए बिना कम से कम एक व्यक्ति को बेहतर बनाता है। आवंटन तब पेरेटो इष्टतम होता है जब कोई और पेरेटो सुधार नहीं किया जा सकता।
उदासीनता वक्र विश्लेषण	फ्रांसिस एडगेवर्थ द्वारा विकसित किए जाने के बावजूद, पेरेटो ने उपभोक्ता वरीयताओं को दर्शाने के लिए **उदासीनता वक्रों** के उपयोग को विकसित करने और लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इसने कार्डिनल उपयोगिता (उपयोगिता की मात्रा को मापने) के बजाय क्रमिक उपयोगिता (वरीयताओं को रैंकिंग) के आधार पर उपभोक्ता विकल्प के अध्ययन की अनुमति दी।
पैरेटो वितरण	एक अवलोकन, जिसे अब अक्सर **"80/20 नियम"** या पेरेटो सिद्धांत

	कहा जाता है, कि कई प्रणालियों में, लगभग 80% प्रभाव 20% कारणों से आते हैं। उन्होंने पहली बार इटली में धन वितरण के संबंध में इसका अवलोकन किया, जहाँ लगभग 80% भूमि पर 20% आबादी का स्वामित्व था।

3. प्रमुख पुस्तकें/प्रकाशन

- **पाठ्यक्रम अर्थव्यवस्था राजनीति (राजनीतिक अर्थव्यवस्था का पाठ्यक्रम) (1896)** : यह उनका पहला प्रमुख आर्थिक कार्य था, जिसमें उन्होंने पेरेटो वितरण की अपनी अवधारणा प्रस्तुत की।
- **मैनुअल डी'इकोनॉमिया राजनैतिक (मैनुअल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी) (1906)** : यह उनका मौलिक कार्य था, जिसमें उन्होंने पेरेटो ऑप्टिमलिटी पर अपने सिद्धांतों को परिष्कृत किया और क्रमिक उपयोगिता और उदासीनता वक्रों पर आधारित आधुनिक सूक्ष्मअर्थशास्त्र सिद्धांत की नींव रखी।

4. उल्लेखनीय तथ्य

- उन्होंने लियोन का स्थान लिया वाल्रास ने लौसाने विश्वविद्यालय में **लौसाने स्कूल की विरासत को जारी रखा** ।
- बाद में उनका कार्य समाजशास्त्र की ओर मुड़ गया, जहां उन्होंने "अभिजात वर्ग परिसंचरण" का सिद्धांत विकसित किया।

5. पॉल सैमुएलसन (1915–2009)

1 परिचय

- **पहचान** : 20वीं सदी के एक दिग्गज अमेरिकी अर्थशास्त्री और **आर्थिक विज्ञान में नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले अमेरिकी** ।
- **क्रांतिकारी कार्य** : उनके पीएचडी शोध प्रबंध, जिसे **फाउंडेशन्स ऑफ इकोनॉमिक एनालिसिस के नाम से प्रकाशित किया गया** , ने अर्थशास्त्र के सभी क्षेत्रों में बाध्यकारी अनुकूलन की एक सामान्य गणितीय संरचना को लागू करके पेशे को मौलिक रूप से बदल दिया।
- **अकादमिक गृह** : उन्होंने अपना कैरियर **मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में बिताया** , और इसके अर्थशास्त्र विभाग को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विभागों में से एक में परिवर्तित कर दिया।
- **दोहरा प्रभाव** : उन्होंने अपने उन्नत सैद्धांतिक कार्य और अपनी ऐतिहासिक पाठ्यपुस्तक, **अर्थशास्त्र** , दोनों के माध्यम से इस क्षेत्र पर अपना वर्चस्व कायम किया, जो अब तक की सबसे अधिक बिकने वाली अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक बन गई।
- **विरासत** : सैमुएलसन को अर्थशास्त्र के संपूर्ण अनुशासन में गणितीय और विश्लेषणात्मक कठोरता के स्तर को बढ़ाने का श्रेय दिया जाता है।

2. प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

संकल्पना / सिद्धांत	सूक्ष्मअर्थशास्त्र में विवरण / महत्व
प्रकट वरीयता सिद्धांत	उपयोगिता सिद्धांत के विकल्प के रूप में विकसित। सैमुएलसन ने तर्क दिया कि उपभोक्ता वरीयताओं को एक अप्रमाणित उपयोगिता फ़ंक्शन को मानने के बजाय, विभिन्न मूल्य और आय स्थितियों के तहत उनके क्रय व्यवहार को देखकर "प्रकट" किया जा सकता है। इसने उपभोक्ता सिद्धांत के लिए एक अधिक अनुभवजन्य आधार प्रदान किया।
आर्थिक विश्लेषण की नींव	उनके डॉक्टरेट शोध प्रबंध ने पुस्तक में गणितीय विधियों को अर्थशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में लागू किया, जिसमें दिखाया गया कि सिद्धांतों का एक मूल समूह (जैसे अधिकतमीकरण) उन सभी को रेखांकित करता है। उन्होंने प्रसिद्ध रूप से कहा कि सभी आर्थिक प्रश्नों को बाधाओं के अधीन अधिकतमीकरण समस्या को हल करके समझा जा सकता है।
सार्वजनिक वस्तुओं का सिद्धांत	प्रतिद्वंद्वी और गैर-बहिष्कृत हैं) के सिद्धांत को औपचारिक रूप दिया । उन्होंने **सैमुएलसन कंडीशन निकाली** , जो सार्वजनिक वस्तु के लिए प्रावधान के कुशल स्तर को उस बिंदु के रूप में परिभाषित करती है जहां

	प्रतिस्थापन की सीमांत दरों का योग परिवर्तन की सीमांत दर के बराबर होता है।
नवशास्त्रीय-कीनेसियन संश्लेषण	यद्यपि यह समष्टि अर्थशास्त्र से भी संबंधित है, लेकिन इसने नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र के सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय आधारों को कीन्सियन ढांचे के साथ एकीकृत किया, जिससे अर्थशास्त्र शिक्षा में युद्धोत्तर प्रतिमान का प्रभुत्व स्थापित हुआ।

3. प्रमुख पुस्तकें/प्रकाशन

- **आर्थिक विश्लेषण की नींव (1947), हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस** : एक ऐतिहासिक कार्य जिसने आधुनिक सूक्ष्मअर्थशास्त्र के लिए गणितीय आधार प्रदान किया और तुलनात्मक सांख्यिकी की भाषा की स्थापना की।
- **अर्थशास्त्र (1948, प्रथम संस्करण), मैकग्रॉ-हिल** : अब तक की सबसे ज़्यादा बिकने वाली अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक। इसने छात्रों की कई पीढ़ियों को शिक्षित किया और नियोक्लासिकल-कीनेसियन संश्लेषण को दुनिया भर में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. उल्लेखनीय तथ्य

- वे **आर्थिक विज्ञान में नोबेल मेमोरियल पुरस्कार** (1970) जीतने वाले पहले अमेरिकी थे, "उनके वैज्ञानिक कार्य के लिए जिसके माध्यम से उन्होंने स्थैतिक और गतिशील आर्थिक सिद्धांत विकसित किया और आर्थिक विज्ञान में विश्लेषण के स्तर को बढ़ाने में सक्रिय रूप से योगदान दिया।" [2]

1. एडम स्मिथ (1723-1790)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	स्कॉटिश अर्थशास्त्री और दार्शनिक, जिन्हें "अर्थशास्त्र के पिता" के रूप में जाना जाता है; शास्त्रीय अर्थशास्त्र के अग्रदूत।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- अदृश्य हाथ - श्रम विभाजन - बाजार चालक के रूप में स्वार्थ - मुक्त बाजार
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- नैतिक भावनाओं का सिद्धांत (1759) - राष्ट्रों के धन की प्रकृति और कारणों की जांच (1776)
उल्लेखनीय तथ्य	- न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप की वकालत की - बाजार संतुलन के लिए "अदृश्य हाथ" शब्द गढ़ा

2. अल्फ्रेड मार्शल (1842-1924)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	ब्रिटिश अर्थशास्त्री; नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र में आधारभूत व्यक्ति।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- मूल्य लोच - उपभोक्ता अधिशेष - सीमांत उपयोगिता - आंशिक संतुलन
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष	- अर्थशास्त्र के सिद्धांत (1890)

सहित)	
उल्लेखनीय तथ्य	- अर्थशास्त्र में गणित को एकीकृत किया - आज पढ़ाए जाने वाले आपूर्ति-मांग वक्रों के लिए आधार तैयार किया

3. लियोन वाल्रास (1834-1910)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	फ्रांसीसी अर्थशास्त्री; सामान्य संतुलन सिद्धांत के संस्थापक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- सामान्य संतुलन - वालरसियन नीलामीकर्ता - गणितीय औपचारिकीकरण
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- शुद्ध अर्थशास्त्र के तत्व (1874)
उल्लेखनीय तथ्य	- बाजार सिद्धांत में गणितीय समीकरणों के उपयोग पर जोर दिया - औपचारिक आर्थिक मॉडलिंग को प्रेरित किया

4. विल्फ्रेडो पेरेटो (1848-1923)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	इतालवी अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री; कल्याण अर्थशास्त्र में प्रमुख व्यक्ति।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- पैरेटो दक्षता - पैरेटो इष्टतमता - आय वितरण - कल्याण अर्थशास्त्र
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- राजनीतिक अर्थव्यवस्था का मैनुअल (1906)
उल्लेखनीय तथ्य	- प्रसिद्ध 80/20 नियम (पेरेटो सिद्धांत) का प्रस्ताव रखा - आर्थिक सिद्धांत को सामाजिक विश्लेषण से जोड़ा

5. पॉल सैमुएलसन (1915–2009)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अमेरिकी अर्थशास्त्री; आर्थिक सिद्धांत को गणितीय रूप देने में सहायक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- नवशास्त्रीय संश्लेषण - प्रकट वरीयता सिद्धांत - गतिशील विश्लेषण - कल्याण प्रमेय
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- आर्थिक विश्लेषण की नींव (1947) - अर्थशास्त्र: एक परिचयात्मक विश्लेषण (1948)
उल्लेखनीय तथ्य	- अर्थशास्त्र में प्रथम अमेरिकी नोबेल पुरस्कार विजेता (1970) - उनकी पाठ्यपुस्तक ने अर्थशास्त्रियों की कई पीढ़ियों को शिक्षित किया

अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं तालिका

1. **राष्ट्रों के धन की प्रकृति और कारणों पर एक जांच** (1776) - **एडम स्मिथ:** शास्त्रीय अर्थशास्त्र का आधारभूत पाठ, जो श्रम विभाजन , "अदृश्य हाथ" और पूर्ण लाभ जैसी अवधारणाओं का परिचय देता है।
2. **राजनीतिक अर्थव्यवस्था और कराधान के सिद्धांतों पर** (1817) - **डेविड रिकार्डो:** शास्त्रीय अर्थशास्त्र की आधारशिला जिसने तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत और मूल्य के श्रम सिद्धांत को प्रस्तुत किया।
3. **रोजगार, ब्याज और धन का सामान्य सिद्धांत** (1936) - **जॉन मेनार्ड कीन्स:** यह पुस्तक समष्टि अर्थशास्त्र में कीन्सियन क्रांति का सूत्रपात करती है, जिसमें समग्र मांग के प्रबंधन के लिए सरकारी हस्तक्षेप की वकालत की गई है।
4. **अर्थशास्त्र के सिद्धांत** (1890) - **अल्फ्रेड मार्शल:** नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र का एक आधारभूत पाठ जिसमें आपूर्ति और मांग, लोच और सीमांत उपयोगिता जैसी अवधारणाओं का परिचय दिया गया।
5. **वैल्यू एंड कैपिटल** (1939) - **जॉन आर. हिक्स:** यह एक मौलिक कार्य है, जिसमें नवशास्त्रीय और कीनेसियन विचारों का संश्लेषण किया गया है तथा उदासीनता वक्र और आईएस-एलएम मॉडल जैसे प्रमुख सूक्ष्म आर्थिक उपकरणों को प्रस्तुत किया गया है।
6. **पूंजीवाद, समाजवाद और लोकतंत्र** (1942) - **जोसेफ शुम्पीटर:** पूंजीवाद की प्रेरक शक्ति के रूप में "रचनात्मक विनाश" की अवधारणा का परिचय दिया गया है तथा उद्यमशीलता की गतिशीलता का विश्लेषण किया गया है।
7. **एकाधिकार प्रतियोगिता का सिद्धांत** (1933) - **एडवर्ड चेम्बरलिन :** एक अभूतपूर्व कार्य जिसने पूर्ण प्रतिस्पर्धा और एकाधिकार के बीच बाजार संरचना का एक मॉडल विकसित किया।
8. **संयुक्त राज्य अमेरिका का मौद्रिक इतिहास, 1867-1960** (1963) - **मिल्टन फ्रीडमैन और अन्ना श्वार्टज़ :** मौद्रिकवाद का मुख्य पाठ, यह तर्क देता है कि मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन आर्थिक उतार-चढ़ाव का प्राथमिक कारण है।
9. **विकास के रूप में स्वतंत्रता** (1999) - **अमर्त्य सेन :** उनका तर्क है कि विकास को वास्तविक स्वतंत्रता और क्षमताओं के विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि केवल आर्थिक विकास के रूप में।
10. **एशियाई नाटक : राष्ट्रों की गरीबी की जांच** (1968) - **गुन्नार मिर्डल :** दक्षिण एशियाई देशों के सामने आने वाली विकास चुनौतियों पर एक क्लासिक अध्ययन, जो "नरम राज्य" की अवधारणा को प्रस्तुत करता है।
11. **आर्थिक विकास का लुईस मॉडल** (पेपर, 1954) - डब्ल्यू **आर्थर लुईस :** विकास अर्थशास्त्र में एक आधारभूत मॉडल जो बताता है कि एक विकासशील अर्थव्यवस्था पारंपरिक कृषि क्षेत्र से आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र में श्रम स्थानांतरित करके कैसे विकसित हो सकती है।
12. **हैरोड-डोमर ग्रोथ मॉडल** (पत्र, 1939, 1946) - **रॉय हैरोड और एवसे डोमर :** एक प्रमुख पोस्ट-कीनेसियन मॉडल जो बचत दर और पूंजी-उत्पादन अनुपात के संदर्भ में आर्थिक विकास की व्याख्या करता है।
13. **बेसिक अर्थमिति** - **दामोदर एन. गुजराती :** अर्थमिति के सिद्धांतों और तकनीकों को सीखने के लिए

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

एक मानक और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तक।

14. **भारत में गरीबी और गैर-ब्रिटिश शासन** (1901) - **दादाभाई नौरोजी नौरोज** आई : एक अग्रणी कार्य जिसने "ड्रेन थ्योरी" को प्रस्तुत किया, जिसमें बताया गया कि कैसे ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने भारत को गरीब बना दिया।
15. **कल्याण का अर्थशास्त्र** (1920) - **ए.सी. पिगौ : कल्याण अर्थशास्त्र का आधारभूत पाठ, जो बाह्य प्रभावों और** पिगौवियन करों की अवधारणाओं का परिचय देता है।
16. **इनपुट-आउटपुट अर्थशास्त्र** (1951) - **वासिली लियोन्टीफ :** इनपुट-आउटपुट मॉडल विकसित किया, जो एक मात्रात्मक आर्थिक तकनीक है जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर-निर्भरता का प्रतिनिधित्व करती है।
17. **काल्डोर -हिक्स मुआवजा मानदंड** (पत्र, 1939) - **निकोलस काल्डोर और जॉन हिक्स :** कल्याण अर्थशास्त्र में एक मानदंड जो यह निर्धारित करता है कि क्या नीति परिवर्तन के परिणामस्वरूप सामाजिक सुधार होता है।
18. **एरो की असंभवता प्रमेय** (1951) - **केनेथ एरो :** एक सामाजिक विकल्प सिद्धांत प्रमेय जो बताता है कि कोई भी रैंक-वोटिंग चुनावी प्रणाली व्यक्तियों की रैंक की गई प्राथमिकताओं को समुदाय-व्यापी रैंकिंग में परिवर्तित नहीं कर सकती है, जबकि निष्पक्षता मानदंडों के एक विशिष्ट सेट को भी पूरा करती है।
19. **जनसंख्या के सिद्धांत पर एक निबंध** (1798) - **टी.आर. माल्थस :** एक प्रसिद्ध रचना जिसमें तर्क दिया गया कि जनसंख्या वृद्धि खाद्य आपूर्ति से अधिक हो जाती है, जिससे गरीबी और अकाल पैदा होता है।
20. **प्रकट वरीयता सिद्धांत** (पत्र, 1938) - **पॉल सैमुएलसन :** उपभोक्ता विकल्प का विश्लेषण करने की एक विधि जो इस बात पर जोर देती है कि उपभोक्ता वरीयताओं को मापने का सबसे अच्छा तरीका उनके क्रय व्यवहार का निरीक्षण करना है।
21. **आर्थिक विकास के चरण : एक गैर-कम्युनिस्ट घोषणापत्र** (1960) - **डब्ल्यूडब्ल्यू रोस्टोव :** एक ऐसा मॉडल प्रस्तावित किया गया है जिसमें आर्थिक विकास अलग-अलग अवधि के पांच बुनियादी चरणों में होता है।
22. **हेक्स्चर -ओहलिन सिद्धांत** (1933) - **एली हेक्स्चर और बर्टिल ओहलिन :** एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत जो कहता है कि देश उन उत्पादों का निर्यात करते हैं जो उनके उत्पादन के प्रचुर और सस्ते कारकों का उपयोग करते हैं।
23. **सोलो-स्वान ग्रोथ मॉडल** (पत्र, 1956) - **रॉबर्ट सोलो और ट्रेवर स्वान :** एक मानक नवशास्त्रीय विकास मॉडल जो पूंजी संचय, श्रम या जनसंख्या वृद्धि और उत्पादकता में वृद्धि को देखकर दीर्घकालिक आर्थिक विकास की व्याख्या करता है। [4]
24. **फिलिप्स वक्र** (पत्र, 1958) - **ए.डब्लू. फिलिप्स :** एक आर्थिक मॉडल, जिसका नाम ए.डब्लू.एच. फिलिप्स के नाम पर रखा गया है, जो बेरोजगारी की दरों और मुद्रास्फीति की संगत दरों के बीच एक स्थिर और व्युत्क्रम संबंध स्थापित करता है।
25. **तर्कसंगत अपेक्षा परिकल्पना** (पेपर, 1961) - **जॉन मुथ :** एक सिद्धांत जो सुझाव देता है कि आर्थिक एजेंट सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के आधार पर निर्णय लेते हैं और इसलिए व्यवस्थित त्रुटियाँ नहीं

करते हैं। न्यू क्लासिकल मैक्रोइकॉनॉमिक्स का केंद्र।

26. **द अफ्लुएंट सोसाइटी** (1958) - **जॉन केनेथ गैलब्रेथ** : एक पुस्तक जिसमें सकल घरेलू उत्पाद पर ध्यान केंद्रित करने की आलोचना की गई और बुनियादी ढांचे और शिक्षा में अधिक सार्वजनिक निवेश के लिए तर्क दिया गया।
27. **द रोड टू सर्फडम** (1944) - **फ्रेडरिक हायेक** : ऑस्ट्रियाई अर्थशास्त्र स्कूल की एक क्लासिक कृति जो केंद्रीय नियोजन के खिलाफ और शास्त्रीय उदारवाद के पक्ष में तर्क देती है।
28. **कराधान जांच आयोग (कालेकर आयोग) की रिपोर्ट** (1953-54) : भारतीय कर प्रणाली पर एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट।
29. **वित्तीय प्रणाली पर समिति की रिपोर्ट (नरसिम्हम समिति I)** (1991) : यह एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट थी जिसने भारत के वित्तीय और बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों का मार्गदर्शन किया।
30. **टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौता (GATT)** (1947) : वह कानूनी समझौता जिसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बाधाओं को न्यूनतम किया, जिसका स्थान WTO ने लिया।

तालिका 1 : उपभोक्ता व्यवहार के सिद्धांत

लिखित	मुख्य प्रस्तावक	मूल विचार	महत्वपूर्ण अवधारणाएं
कार्डिनल उपयोगिता विश्लेषण	अल्फ्रेड मार्शल	उपयोगिता को संख्यात्मक इकाइयों में मापा जा सकता है जिन्हें ' यूटिल्स ' कहा जाता है। उपभोक्ता कुल उपयोगिता को अधिकतम करने का लक्ष्य रखते हैं।	कुल उपयोगिता (टीयू), सीमांत उपयोगिता (एमयू), घटती सीमांत उपयोगिता का नियम, सम -सीमांत उपयोगिता का नियम।
क्रमिक उपयोगिता विश्लेषण	जेआर हिक्स और आरजीडी एलन	उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता लेकिन इसे वरीयता के क्रम में रैंक किया जा सकता है। उपभोक्ता उच्चतम संभव उदासीनता वक्र तक पहुँचने का लक्ष्य रखते हैं।	उदासीनता वक्र, उदासीनता मानचित्र, प्रतिस्थापन की सीमांत दर (एमआरएस), बजट रेखा, उपभोक्ता संतुलन।
प्रकट वरीयता सिद्धांत	पॉल सैमुएलसन	अलग-अलग कीमतों और आय स्तरों पर उपभोक्ताओं की खरीदारी के विकल्पों का अवलोकन करके उनकी प्राथमिकताओं का पता लगाया जा सकता है।	मजबूत क्रम, संगति, परिवर्तनशीलता। यह एक व्यवहारवादी दृष्टिकोण है।

तालिका 2 : बाजार संरचनाएं – एक तुलना

विशेषता	संपूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार	एकाधिकार बाजार	अल्पाधिकार
फर्मों की संख्या	बहुत बड़ी संख्या	एकल विक्रेता	बड़ी संख्या में फर्में	कुछ फर्में
उत्पाद की प्रकृति	सजातीय (समान)	अद्वितीय उत्पाद जिसका कोई निकटतम विकल्प नहीं है	विभेदित उत्पाद (ब्रांडिंग, गुणवत्ता)	समरूप या विभेदित
प्रवेश/निकास बाधाएं	कोई बाधा नहीं; प्रवेश और निकास निःशुल्क	मजबूत बाधाएं (कानूनी, प्राकृतिक)	निःशुल्क प्रवेश और निकास	प्रवेश में महत्वपूर्ण बाधाएं
मूल्य नियंत्रण	कोई नहीं; फर्म 'मूल्य लेने वाली' है	पर्याप्त नियंत्रण; फर्म एक 'मूल्य निर्माता' है	उत्पाद विभेदीकरण के कारण कुछ नियंत्रण	कुछ नियंत्रण; मूल्य कठोरता (विकृत मांग)
मांग वक्र	पूर्णतया लोचदार	नीचे की ओर झुका	नीचे की ओर झुका	अनिश्चित (विंक्ड

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

	(क्षैतिज सीधी रेखा)	हुआ (एआर वक्र)	हुआ और अधिक लचीला	मांग वक्र मॉडल)

तालिका 3 : लागत अवधारणाएं और वक्र (अल्पावधि)

लागत अवधारणा	विवरण	वक्र का आकार	आकार का कारण
औसत निश्चित लागत (एएफसी)	उत्पादन की प्रति इकाई कुल निश्चित लागत (टीएफसी)।	आयताकार अतिपरवलय; लगातार गिरता है।	टीएफसी बढ़ती हुई संख्या में इकाइयों में फैला हुआ है।
औसत परिवर्तनीय लागत (AVC)	प्रति इकाई उत्पादन पर कुल परिवर्तनीय लागत (टी.वी.सी.)।	यू आकार का.	प्रारंभ में बढ़ते प्रतिफल के कारण गिरावट आती है, फिर घटते प्रतिफल (परिवर्तनशील अनुपात का नियम) के कारण वृद्धि होती है।
औसत कुल लागत (एटीसी)	प्रति इकाई उत्पादन की कुल लागत (टीसी) (एएफसी + एवीसी)।	यू आकार का.	एएफसी और एवीसी का योग। एटीसी और एवीसी के बीच का अंतर कम हो जाता है क्योंकि उत्पादन बढ़ता है क्योंकि एएफसी गिरता है।
सीमांत लागत (एमसी)	उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से कुल लागत में वृद्धि।	यू आकार का.	बढ़ते रिटर्न के कारण शुरू में गिरावट आती है और फिर घटते रिटर्न के कारण तेजी से बढ़ जाती है। यह AVC और ATC को उनके न्यूनतम बिंदुओं पर घटा देता है।

तालिका 4 : वितरण के सिद्धांत (कारक मूल्य निर्धारण)

लिखित	समर्थक	उत्पादन का कारक	मूल विचार
सीमांत उत्पादकता सिद्धांत	जेबी क्लार्क	सभी कारक (भूमि, श्रम , पूंजी, उद्यम)	उत्पादन के किसी कारक की कीमत उसकी सीमांत उत्पादकता से निर्धारित होती है। प्रत्येक कारक को उसके सीमांत उत्पाद के बराबर इनाम मिलता है।
रिकार्डियन किराये का सिद्धांत	डेविड रिकार्डो	भूमि	किराया वह अधिशेष है जो जमींदार को "मिट्टी की मूल और अविनाशी शक्तियों" के उपयोग के

			लिए दिया जाता है। यह उर्वरता में अंतर के कारण उत्पन्न होता है।
तरलता वरीयता सिद्धांत	जेएम कीन्स	पूंजी (धन)	ब्याज दर एक विशुद्ध मौद्रिक घटना है, जो धन की मांग (तरलता वरीयता) और धन की आपूर्ति द्वारा निर्धारित होती है।
लाभ का जोखिम वहन सिद्धांत	एफबी हॉले	उद्यम	लाभ उद्यमी को व्यवसाय में जोखिम उठाने का इनाम है। जोखिम जितना अधिक होगा, अपेक्षित लाभ भी उतना ही अधिक होगा।
लाभ का नवप्रवर्तन सिद्धांत	जोसेफ़ शुम्पीटर	उद्यम	किसी उद्यमी द्वारा सफल नवाचार के कारण लाभ उत्पन्न होता है, जो उन्हें अस्थायी एकाधिकार प्रदान करता है।

10 MODEL PAPER

ALL SUBJECT AND PAPER I

UGC NET

BOTH MEDIUM AVAILABLE

यूजीसी नेट अर्थशास्त्र (पेपर 2) - कठिन स्तर के मॉडल एमसीक्यू

इकाई 1: सूक्ष्म अर्थशास्त्र

1. स्लटस्की समीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: यह गिफेन वस्तु के लिए मूल्य प्रभाव को प्रतिस्थापन और आय प्रभाव में विघटित करता है।
कथन II: स्लटस्की प्रतिस्थापन प्रभाव उपयोगिता को स्थिर रखता है, जबकि हिक्सियन प्रतिस्थापन प्रभाव क्रय शक्ति को स्थिर रखता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल मैं
(B) केवल द्वितीय
(C) I और II दोनों
(D) न तो I और न ही II

उत्तर: (A)
स्पष्टीकरण: कथन I सही है; मूल्य प्रभावों को विघटित करने के लिए स्लटस्की समीकरण सार्वभौमिक रूप से लागू होता है। कथन II ग़लत है; स्लटस्की स्पष्ट क्रय शक्ति स्थिरांक (उच्च उदासीनता वक्र की ओर गति की अनुमति) रखता है, जबकि हिक्स उपयोगिता स्थिरांक (मूल उदासीनता वक्र के साथ गति) रखता है।

2. दावा (A): एक समरूप उत्पादन फ़ंक्शन के लिए विस्तार पथ हमेशा मूल के माध्यम से एक सीधी रेखा है।
कारण (आर): समरूप उत्पादन कार्य मूल से किसी भी किरण के साथ निरंतर सीमांत तकनीकी प्रतिस्थापन दर (एमआरटीएस) प्रदर्शित करते हैं।
(A) ए और आर दोनों सत्य हैं, और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।
(B) ए और आर दोनों सत्य हैं, लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) ए सत्य है, लेकिन आर गलत है।
(D) ए गलत है, लेकिन आर सच है।

उत्तर: (A)
स्पष्टीकरण: समरूपता का तात्पर्य है कि एमआरटीएस केवल इनपुट (के/एल) के अनुपात पर निर्भर करता है, जो मूल से एक किरण के साथ स्थिर है। चूंकि लागत न्यूनतमकरण के लिए एमआरटीएस को इनपुट मूल्य अनुपात (डब्ल्यू/आर) के बराबर करने की आवश्यकता होती है, आउटपुट के विस्तार (निरंतर इनपुट कीमतों को मानते हुए) के रूप में इष्टतम इनपुट अनुपात स्थिर रहता है, जिसके परिणामस्वरूप एक रैखिक विस्तार पथ होता है।

3. लंबे समय में, एकाधिकार प्रतियोगिता के तहत काम करने वाली एक फर्म अपने उत्पाद को मुख्य रूप से अलग करती है:

PROFESSORS ADDA

(A) स्थायी अलौकिक लाभ अर्जित करें।

(B) नई फर्मों के प्रवेश के लिए प्रभावी बाधाएँ बनाएँ।

(C) उत्पादक दक्षता (न्यूनतम एटीसी) प्राप्त करें।

(D) केवल सामान्य लाभ अर्जित करने के बावजूद, कुछ बाजार शक्ति हासिल करें और नीचे की ओर झुकते मांग वक्र का सामना करें।

उत्तर: (D)

स्पष्टीकरण: जबकि उत्पाद भेदभाव का उद्देश्य बाजार की शक्ति (नीचे की ओर झुकी हुई मांग) बनाना है, मुफ्त प्रवेश यह सुनिश्चित करता है कि लंबे समय में केवल सामान्य लाभ अर्जित किया जाए। यह दुर्गम बाधाएं पैदा नहीं करता है, न ही यह उत्पादक दक्षता (पी > मिनट एटीसी) की ओर ले जाता है। भेदभाव कंपनियों को शून्य आर्थिक लाभ के साथ भी कुछ मूल्य नियंत्रण बनाए रखने की अनुमति देता है।

4. सूची I (बाज़ार संरचना विशेषता) को सूची II (संबद्ध अवधारणा) के साथ मिलाएँ:

सूची I	सूची II
ए किंकित मांग वक्र	i-मैं। मूल्य निर्णय
बी। अतिरिक्त क्षमता	ii-द्वितीय. संपूर्ण प्रतियोगिता
सी। कीमत सीमांत लागत के बराबर है	iii. एकाधिकार प्रतियोगिता (दीर्घकालिक)
डी। एक ही उत्पाद के लिए अलग-अलग कीमतें	iv. अल्पाधिकार (गैर-मिलीभगत)

कोड:

(A) ए-iv, बी-iii, सी-ii, डी-आई

(B) ए-iii, बी-iv, सी-आई, डी-ii

(C) ए-iv, बी-ii, सी-iii, डी-आई

(D) ए-आई, बी-III, सी-ii, डी-iv

उत्तर: (A)

स्पष्टीकरण: (A) किंकित मांग वक्र गैर-मिलीभगत अल्पाधिकार में मूल्य कठोरता की व्याख्या करता है। (B) अतिरिक्त क्षमता (एटीसी को न्यूनतम करते हुए आउटपुट स्तर से कम उत्पादन) लंबे समय तक चलने वाली एकाधिकार प्रतियोगिता की विशेषता है। (C) पी=एमसी पूर्ण प्रतिस्पर्धा में पूरी होने वाली आवंटन दक्षता शर्त है। (D) भुगतान करने की इच्छा के आधार पर एक ही उत्पाद के लिए अलग-अलग कीमतें वसूलना मूल्य भेदभाव है (अक्सर एकाधिकार द्वारा अभ्यास किया जाता है)।

5. सामान्य संतुलन ढांचे में 'कोर' की अवधारणा का तात्पर्य है:

(A) सभी पेरेटो कुशल आवंटन का सेट।

(B) पूर्ण प्रतिस्पर्धा के माध्यम से प्राप्त होने वाले आवंटन का सेट।

(C) आवंटन का सेट जिसे आपस में व्यापार करने वाले एजेंटों के किसी भी गठबंधन द्वारा सुधार नहीं किया जा सकता है।

(D) अनुबंध वक्र और बजट रेखा का प्रतिच्छेदन।

PROFESSORS ADDA

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: कोर उन आवंटनों का प्रतिनिधित्व करता है जो किसी भी संभावित गठबंधन द्वारा अवरुद्ध होने के विरुद्ध स्थिर हैं। एक आवंटन मूल में है यदि उपभोक्ताओं का कोई भी उपसमूह अलग नहीं हो सकता है और अपने प्रारंभिक बंदोबस्ती का उपयोग करके केवल आपस में व्यापार करके खुद को बेहतर बना सकता है। यह पेरेटो कुशल आवंटन का एक उपसमूह है।

6. बॉमोल के बिक्री राजस्व अधिकतमकरण के सिद्धांत के अनुसार, एक फर्म बिक्री राजस्व को अधिकतम करती है:

(A) न्यूनतम लाभ बाधा।

(B) एक अधिकतम लागत बाधा।

(C) उत्पादक दक्षता हासिल करना।

(D) लक्ष्य बाजार हिस्सेदारी बनाए रखना।

उत्तर: (A)

स्पष्टीकरण: विलियम बॉमोल (1959) ने प्रस्तावित किया कि बड़े निगमों में प्रबंधक मुनाफे के बजाय बिक्री राजस्व (कुल राजस्व) को अधिकतम करने को प्राथमिकता दे सकते हैं, जो अक्सर बिक्री और प्रबंधकीय मुआवजे/प्रतिष्ठा के बीच संबंधों के कारण होता है। हालाँकि, यह शेयरधारकों को संतुष्ट करने के लिए न्यूनतम स्वीकार्य स्तर का लाभ अर्जित करने की शर्त पर किया जाता है।

7. जोखिम का सामना करने वाले उपभोक्ता पर विचार करें। एरो-प्रैट माप के अनुसार, जोखिम से बचने की डिग्री में वृद्धि का तात्पर्य है:

(A) धन का कम अवतल उपयोगिता फलन।

(B) समान जोखिम के लिए कम जोखिम प्रीमियम का भुगतान करने की इच्छा।

(C) पूर्ण जोखिम से बचने का एक उच्च गुणांक (-यू"/यू')।

(D) बीमांकिक रूप से निष्पक्ष जुआ के लिए प्राथमिकता।

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: पूर्ण जोखिम से बचने का एरो-प्रैट माप R_A(W) = -U"(W)/U'(W) है। जोखिम से बचने का एक उच्च स्तर एक अधिक अवतल उपयोगिता फ़ंक्शन (बड़े नकारात्मक यू") से मेल खाता है और इस प्रकार R_A(W) का एक उच्च मूल्य है। इसका तात्पर्य जोखिम से बचने के लिए जोखिम प्रीमियम का भुगतान करने की अधिक इच्छा से है।

8. यूलर प्रमेय के अंतर्गत 'जोड़ने की समस्या' या 'उत्पाद थकावट प्रमेय' सत्य है यदि:

(A) उत्पादन फ़ंक्शन पैमाने पर बढ़ते रिटर्न को प्रदर्शित करता है।

(B) उत्पादन फ़ंक्शन पैमाने पर निरंतर रिटर्न प्रदर्शित करता है।

(C) कारकों का भुगतान उनके औसत उत्पाद के अनुसार किया जाता है।

(D) उत्पादन में महत्वपूर्ण बाह्यताएं हैं।

PROFESSORS ADDA

उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण: यूलर के प्रमेय में कहा गया है कि यदि कोई उत्पादन फलन Q = f(L, K) डिग्री एक (पैमाने पर निरंतर रिटर्न) का सजातीय है, तो Q = MP_L * L + MP_K * K। इसका मतलब है कि यदि कारकों (श्रम L, पूंजी K) को उनके सीमांत उत्पादों (MP_L, MP_K) का भुगतान किया जाता है, तो कुल भुगतान कुल उत्पाद (Q) को समाप्त कर देगा।

9. नैतिक खतरा उस नैतिक खतरे में प्रतिकूल चयन से भिन्न है:

(A) अनुबंध पर हस्ताक्षर होने से पहले होता है।

(B) छुपी हुई विशेषताओं से उत्पन्न होता है।

(C) एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के बाद की गई छिपी हुई कार्रवाइयों से उत्पन्न होता है।

(D) मुख्य रूप से सिग्नलिंग के माध्यम से हल किया जाता है।

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: नैतिक खतरे में एक समझौते के बाद किए गए कार्यों के बारे में असममित जानकारी शामिल होती है। उदाहरण के लिए, एक बीमित व्यक्ति कम सावधानियां (छिपी हुई कार्रवाई) ले सकता है क्योंकि वे कवर हैं। प्रतिकूल चयन अनुबंध से पहले छिपी हुई विशेषताओं से उत्पन्न होता है (उदाहरण के लिए, उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों द्वारा बीमा खरीदने की अधिक संभावना)।

10. एजवर्थ बॉक्स आरेख का उपयोग विश्लेषण करने के लिए किया जाता है:

(A) एकल फर्म के लिए उत्पादन संभावनाएं।

(B) बाह्यताओं के साथ एकल बाजार में संतुलन।

(C) निश्चित बंदोबस्ती वाले दो व्यक्तियों के बीच विनिमय का सामान्य संतुलन।

(D) अनिश्चितता के तहत उपभोक्ता की पसंद।

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: एजवर्थ बॉक्स एक ग्राफिकल उपकरण है जो दो उपभोक्ताओं (या दो उत्पादन कार्यों के बीच दो इनपुट) के बीच दो वस्तुओं की निश्चित मात्रा के वितरण का प्रतिनिधित्व करता है। यह पेरेटो कुशल आवंटन (अनुबंध वक्र) और प्रारंभिक बंदोबस्ती बिंदु से शुरू होने वाले व्यापार से संभावित लाभ को देखने में मदद करता है।

यूनिट 2: मैक्रो इकोनॉमिक्स

11. वास्तविक व्यापार चक्र (आरबीसी) सिद्धांत के अनुसार, व्यापार चक्र के उतार-चढ़ाव का प्राथमिक चालक है:

(A) मौद्रिक नीति के झटकों से प्रेरित कुल मांग में परिवर्तन।

(B) प्रौद्योगिकी और उत्पादकता के लिए यादृच्छिक झटके (आपूर्ति पक्ष के झटके)।

(C) उपभोक्ता विश्वास और पशु आत्माओं में बदलाव।

PROFESSORS ADDA

(D) राजकोषीय नीति में अप्रत्याशित परिवर्तन।

उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण: किडलैंड और प्रेस्कॉट (नोबेल पुरस्कार 2004) द्वारा प्रवर्तित आरबीसी सिद्धांत का मानना है कि व्यापार चक्र वास्तविक झटकों के प्रति अर्थव्यवस्था की कुशल प्रतिक्रिया है, मुख्य रूप से उत्पादकता को प्रभावित करने वाले तकनीकी परिवर्तन। यह केनेसियनों द्वारा जोर दिए गए मौद्रिक कारकों और मांग के झटकों की भूमिका को कम करके आंकता है।

12. स्थायी आय परिकल्पना (पीआईएच) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: क्षणभंगुर आय से उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति शून्य के करीब है।

कथन II: यह सुझाव देता है कि व्यवसाय चक्र में आय की तुलना में उपभोग अधिक सहज है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल मैं

(B) केवल द्वितीय

(C) I और II दोनों

(D) न तो I और न ही II

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: मिल्टन फ्रीडमैन के पीआईएच (1957) का तर्क है कि खपत स्थायी आय (अपेक्षित दीर्घकालिक औसत आय) पर निर्भर करती है। कथन I सही है क्योंकि अस्थायी आय (अस्थायी अप्रत्याशित लाभ/नुकसान) मुख्य रूप से बचत को प्रभावित करती है, उपभोग को नहीं। कथन II अनुसरण करता है क्योंकि खपत मुख्य रूप से स्थायी आय में परिवर्तन के साथ समायोजित होती है, जो वर्तमान आय की तुलना में कम अस्थिर होती है, जिससे खपत सुचारू हो जाती है।

13. आईएस-एलएम मॉडल में, 'तरलता जाल' स्थिति की विशेषता है:

(A) एक ऊर्ध्वाधर आईएस वक्र।

(B) एक ऊर्ध्वाधर एलएम वक्र।

(C) बहुत कम ब्याज दर पर एक क्षैतिज एलएम वक्र।

(D) एक क्षैतिज आईएस वक्र।

उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण: तरलता जाल तब होता है जब नाममात्र ब्याज दरें शून्य के करीब होती हैं, और मौद्रिक नीति अप्रभावी हो जाती है क्योंकि लोग आपूर्ति की गई किसी भी राशि को रखने के इच्छुक होते हैं (पैसे की मांग पूरी तरह से लोचदार हो जाती है)। इसे एलएम वक्र के एक क्षैतिज खंड द्वारा दर्शाया गया है।

14. 'रिकार्डियन तुल्यता' की अवधारणा बताती है कि:

(A) उधार द्वारा वित्तपोषित सरकारी खर्च का प्रभाव करों द्वारा वित्तपोषित खर्च के समान ही होता है।

PROFESSORS ADDA

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (Education)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

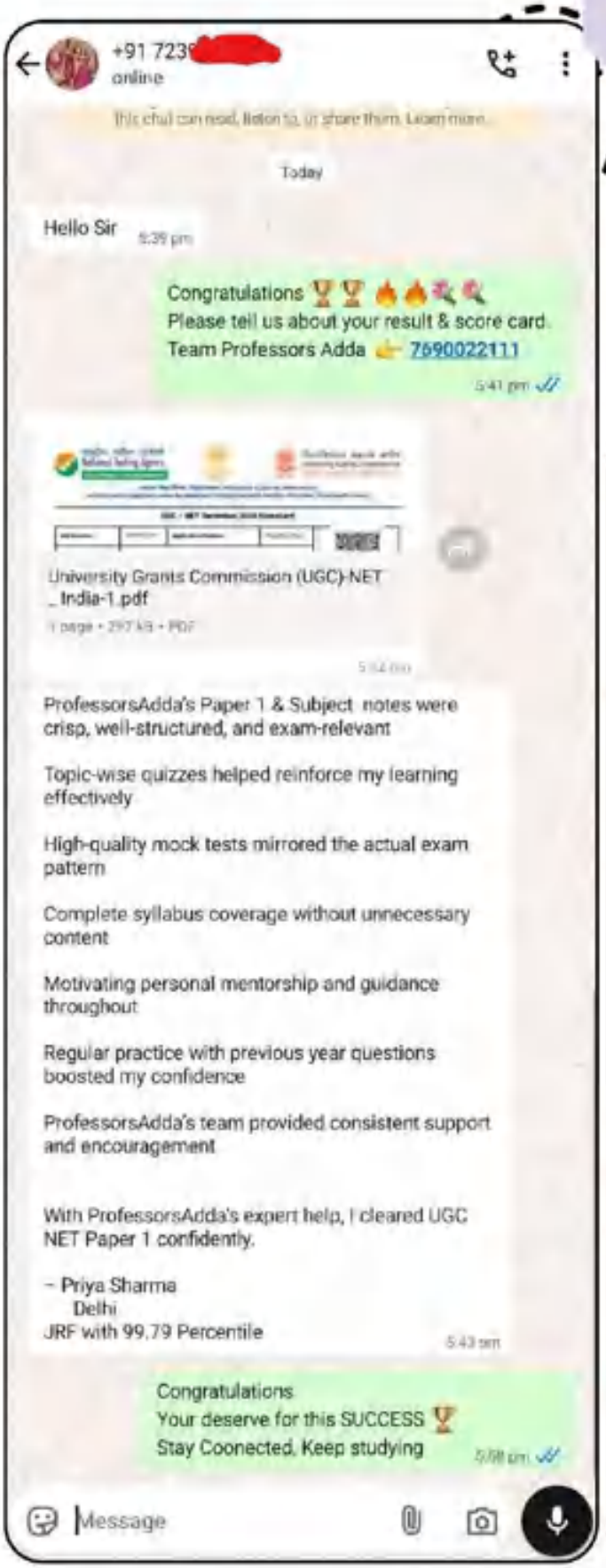

📞 +91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

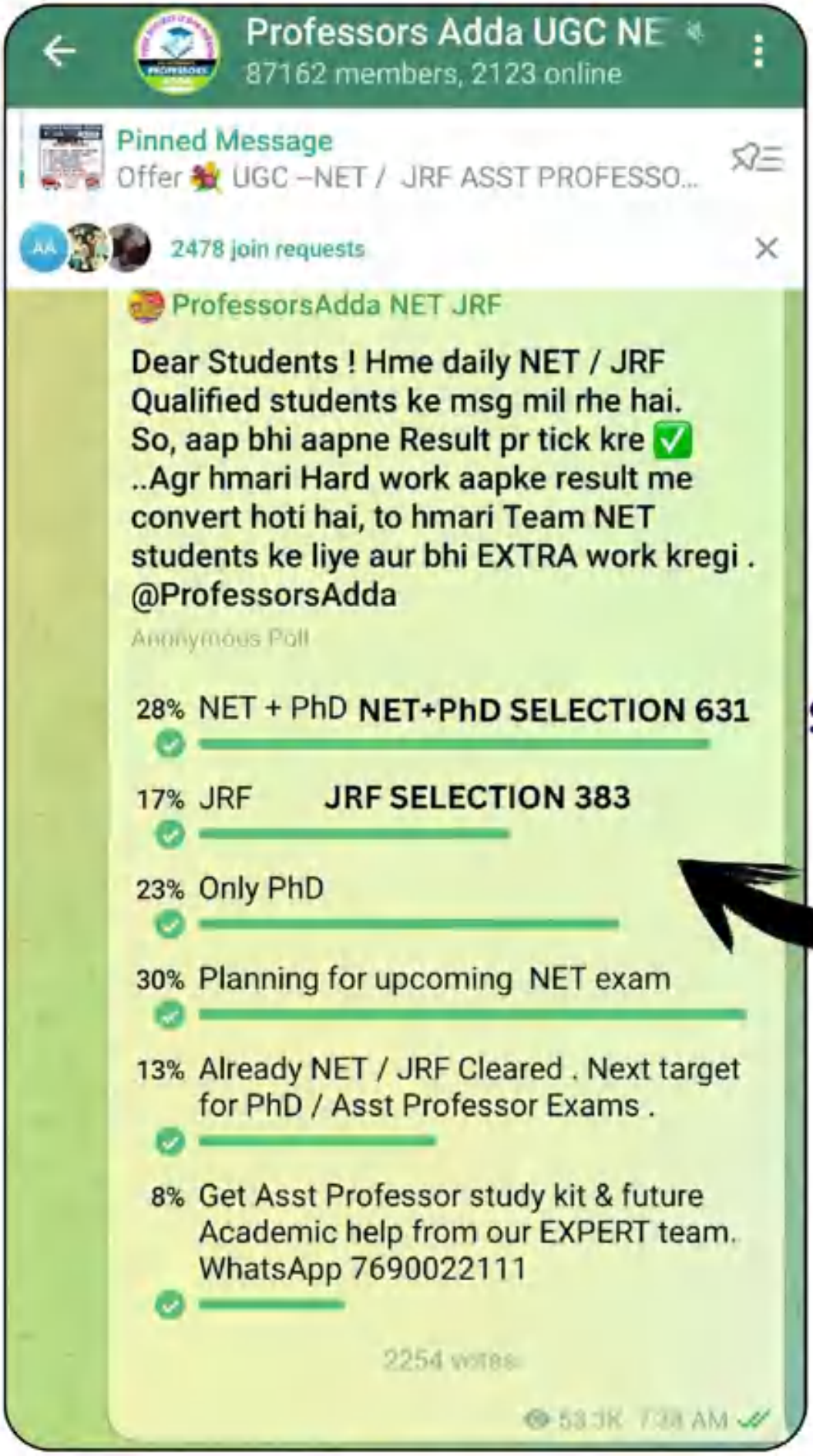

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

Exclusive English GROUP

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

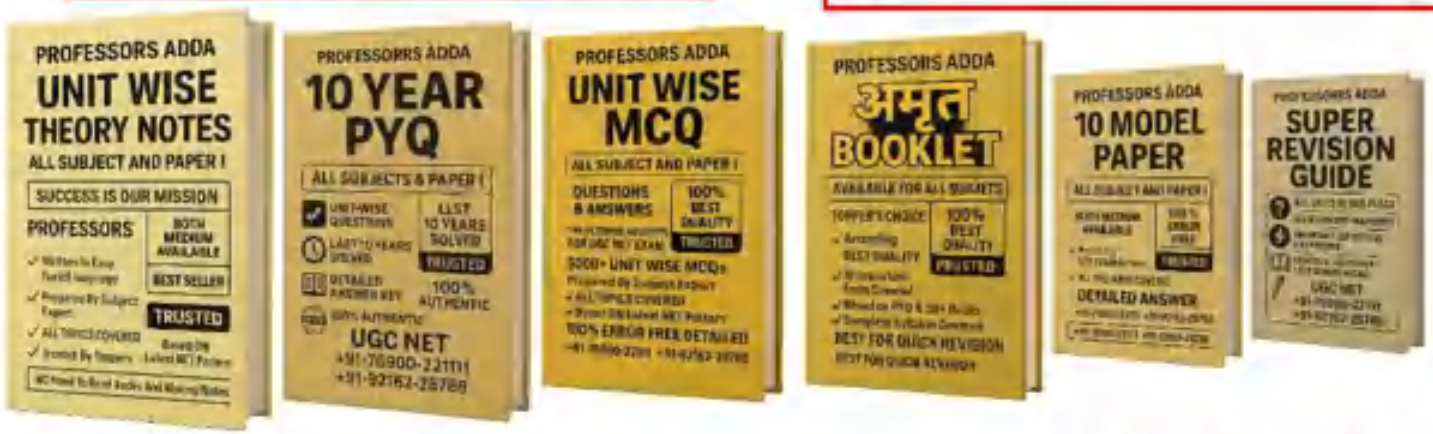

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

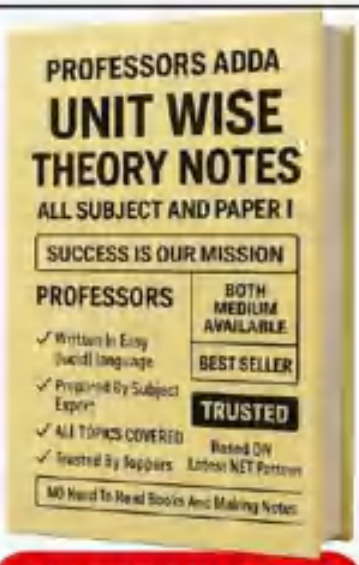

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

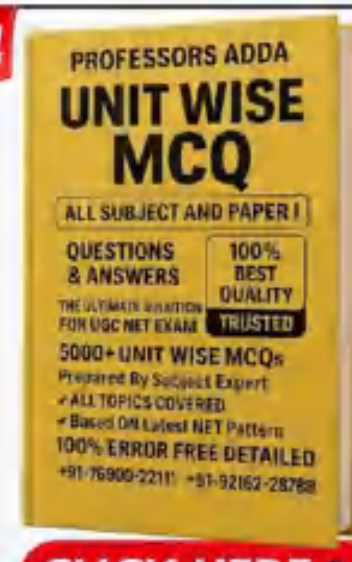

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788